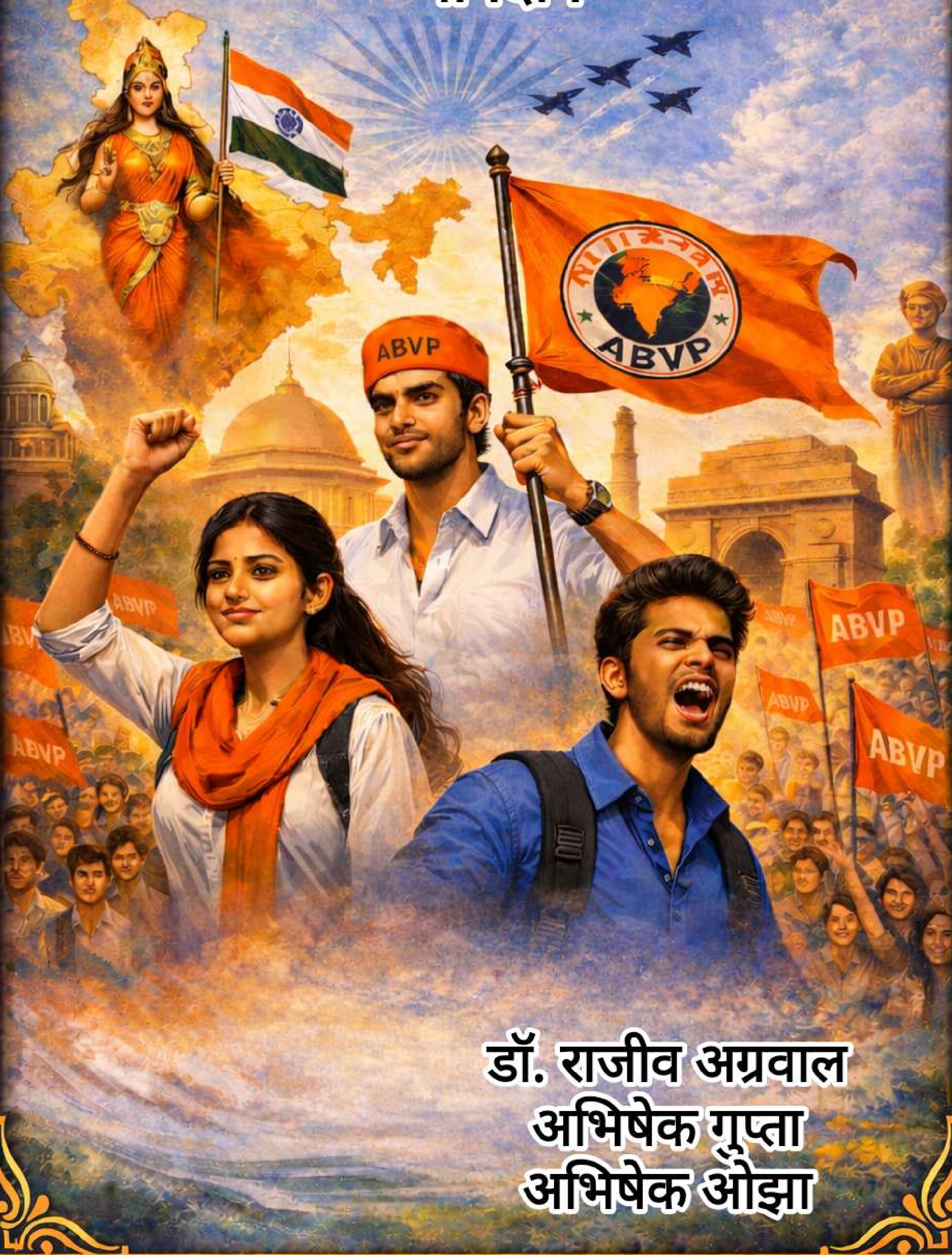
ISBN: 978-93-5659-929-1

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान



डॉ. राजीव अग्रवाल
अभिषेक गुप्ता
अभिषेक ओझा

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

अभिषेक गुप्ता

B.Sc., M.Ed.

अभिषेक ओझा

B.Ed., M.A. (English)

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल

अभिषेक गुप्ता

अभिषेक ओझा

E-book संस्करण: जनवरी, 2026

मूल्य: ₹ 99

ISBN: 978-93-5659-929-1

प्रकाशक:

अभिषेक ओझा
फलगो चौरिहा का पुरवा, अतर्रा ग्रामीण,
बाँदा- 210201
(उत्तर प्रदेश)

मो. – 6306627341
E-mail: mr.abhiojha@gmail.com

प्राक्कथन

भारत की सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं शैक्षिक परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध परंपराओं में से एक रही है। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली तक भारत ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण, चरित्र-निर्माण और सामाजिक उत्थान का सशक्त साधन माना है। इसी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने में जिन संगठनों ने सक्रिय भूमिका निभाई है, उनमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना का मूल उद्देश्य छात्र जीवन को राष्ट्रसेवा, समाजहित और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ना रहा है। यह संगठन केवल छात्र राजनीति तक सीमित न रहकर शिक्षा के व्यापक स्वरूप—शैक्षिक गुणवत्ता, नैतिक मूल्यों, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चेतना—के विकास के लिए सतत प्रयास करता रहा है। अभाविप का विश्वास रहा है कि सशक्त राष्ट्र का निर्माण सुसंस्कृत, जागरूक और चरित्रवान छात्रों से ही संभव है।

यह पुस्तक "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान" अभाविप द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए बहुआयामी प्रयासों का समग्र एवं प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करती है। इसमें संगठन के शैक्षिक अभियानों, छात्रहितकारी आंदोलनों, शिक्षण संस्थानों में सुधारात्मक प्रयासों, नवाचारों, अनुसंधान-प्रोत्साहन, मूल्याधारित शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संबंधित योगदानों का विस्तार से विवेचन किया गया है। यह कृति न केवल इतिहास का लेखा-जोखा है, बल्कि वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में संगठन की भूमिका को भी स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। यदि शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़, समावेशी और मूल्यनिष्ठ हो, तो राष्ट्र स्वतः सशक्त बनता है। अभाविप ने सदैव ऐसी शिक्षा व्यवस्था की वकालत की है जो केवल रोजगारोन्मुख न होकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित हो। इस पुस्तक के माध्यम से पाठक यह समझ सकेंगे कि किस प्रकार अभाविप ने

छात्र हित, शैक्षणिक गुणवत्ता और राष्ट्रीय दृष्टिकोण के संतुलन को बनाए रखते हुए निरंतर कार्य किया है।

इस ग्रंथ का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि चिंतन को प्रेरित करना भी है। यह पुस्तक विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों, शिक्षाविदों, नीति-निर्माताओं तथा समाज के जागरूक नागरिकों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी। इससे पाठक न केवल अभाविप के शैक्षिक प्रयासों को समझ पाएंगे, बल्कि शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण के एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखने की दृष्टि भी विकसित कर सकेंगे।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक विमर्श को आगे बढ़ाएगी, युवाओं को राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करेगी और भारतीय शिक्षा व्यवस्था को और अधिक समृद्ध एवं मूल्यनिष्ठ बनाने की दिशा में सार्थक योगदान देगी।

दिनांक: **21/01/2026**

डॉ. राजीव अग्रवाल

अभिषेक गुप्ता

अभिषेक ओझा

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन का औचित्य

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.6 अध्ययन का उद्देश्य

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

1.8 अध्ययन विधि

1.9 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता से पूर्व अनेक शैक्षिक राजनैतिक, छात्र, मजदूर, किसान, नौजवान, व्यापारी संगठन हुआ करते थें सबनें अपने-अपने अनुसार देश की आजादी की लडाई में न केवल प्रतिभाग किया बल्कि आवश्यकता पडने पर उक्त संगठनों के सदस्यों ने प्राणों की बलि देने में भी रंच मात्र की देरी नही लगाई।

वर्ष 1948 मे जब अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की नींव रखी गयी भारत को आजाद हुए मात्र पहला वर्ष ही बीता था, और हमारी संविधाननिर्मात्री सभा पूर्ण तन्मयता के साथ संविधान निर्माण के कार्य मे संलग्न थी। चूँकि भारत के लिए शिक्षा हमेशा से केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की आधारशिला रही है ऐसे में छात्र संगठनों की भूमिका भी केवल शैक्षणिक परिसरों तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना के वाहक भी बन जाते हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) भी एक ऐसा ही छात्र संगठन है, जिसने दशकों से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सकारात्मक दिशा देने, छात्र हितों की रक्षा करने, और शैक्षिक सुधारों को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाई है।

1.1.1 शिक्षा, विकास की प्रक्रिया-

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करती है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। शिक्षा जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त चलने वाली ऐसी प्रक्रिया है जिसने मानव सभ्यता के विकास में विशेष योगदान निभाया है।

1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तन की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका भी निरंन्तर विकासशील रही हैं। भारतीय शिक्षा का बीजारोपड सुदूर अतीत में आज से लगभग 4000 साल पहले हुआ था, किन्तु इसके सुसंम्बध्ध स्वरूप के दर्शन वैदिक काल के आरम्भ में देखने को मिलते हैं, जिस समय शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था। समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था समउन्नत व उत्कृष्ट थी लेकिन कालांतर में भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ। विदेशियों ने यहां कि शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नही किया जिस अनुपात में किया जाना चाहिए था। अपने संक्रमण काल में भारतीय शिक्षा को अनेक चुनौतियों का सामना करना पडता है।

1.1.2.1 प्राचीन काल में शिक्षा

प्राचीन काल से ही भारत एक ऐसा देश रहा है जो धर्म एवं आध्यात्म के क्षेत्र में दुनिया का मार्गदर्शन करता रहा है हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति तथा परम्पराओं का ही प्रभाव था कि सम्पूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार हुआ है । यहां यह स्वाभाविक है कि ऐसी उत्कृष्ट संस्कृति व्यवस्था और आदर्शों एवं परम्पराओं को निर्धारित करना एक मजबूत शिक्षण ढाचे के तहत ही सम्भव हो सका। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक और औपचारिक दोनों प्रकार के शिक्षण केन्द्रों का उल्लेख मिलता है औपचारिक शिक्षा मन्दिरों, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यमों से दी जाती थी। उच्च शिक्षा के केन्द्र भी ये सब ही थें।

1.1.2.2 मध्यकाल में शिक्षा

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जानने वाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिन्दू, अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रूचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के सरंक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदें बनती गयीं, साथ ही मकतबों, मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारम्भिक शिक्षा के केन्द्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। वे पढ़ना, लिखना, गणित अर्जीनवीसी और चिट्ठीपत्री भी सीखते थे। इनमें हिन्दू बालक भी पढ़ते थे।

मकतबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहाँ प्रधानतः धार्मिक शिक्षा दी जाती थी; साथ ही साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढाई होती थी।

राजकुमारों के लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबन्ध था। राज्यव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून, आदि का ज्ञान गृहाशिक्षक से प्राप्त होता था। राजकुमारियाँ भी शिक्षा पाती थी। शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। वे विद्वान और सच्चरित्र होते थे। छात्र और शिक्षकों का आपसी सम्बन्ध प्रेम और सम्मान का था। सादगी, सदाचार, विद्या, प्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परम्परा थी। प्रश्नोत्तर, व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पढ़ाया जाता था। कोई परीक्षा प्रणाली नहीं थी। अध्ययन अध्यापन में प्राप्त अवसरों में शिक्षक छात्रों की योग्यता और विद्वता के विषय में तथ्य प्राप्त करते थे। दण्ड प्रयोग किया जाता था। जीविकोपार्जन के लिए भी शिक्षा दी जाती थी। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा आदि मुस्लिम शिक्षा के केन्द्र थे। मुसलमान शासकों के सरंक्षण के अभाव में भी संस्कृत काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन, ग्रन्थों की रचना और उनका पठन-पाठन बराबर होता रहा।

1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा

भारत में आधुनिक काल में शिक्षा को दो भागों में बांट सकते हैं-

i. स्वतन्त्रता के पूर्व शिक्षा

ii. स्वतन्त्रता के पश्चात शिक्षा

- **स्वतन्त्रता के पूर्व शिक्षा**

भारत में अग्रेजों के आने के पूर्व से ही शिक्षा मकतब,मदरसों के माध्यम से दी जाती थी हिन्दू पाठशालाएं,बंगाल में टोल तथा दक्षिणी भारत में अग्रहार भारतीय शिक्षा सम्बन्धी जरूरते पूरी करते थें। सत्रहवी सताब्दी के प्रारम्भ से यहाँ व्यापारी और धर्म प्रचारक आने लगे मिशनरी टोलियां धर्म प्रचार करने लगी उन्होंने स्कूलों की स्थापना की तथा छापेखाने खोले। जैटियर ने गाँव की गलियों तक घूम-घूम कर घण्टी बजाकर धर्म प्रचार किया इसी प्रकार हालैण्ड वासी जब

भारत आए तो उन्होने अनेक स्कूल खोले जिनमें भारतीय बच्चे भी पढ सकते थे फ्रासीसियों ने पाण्डिचेरी, चन्द्रनगर,कालीकट में स्कूल खोले,डेन ने अध्यापक प्रशिक्षण के लिए स्कूल खोला।

- **ब्रिटिश कालीन शिक्षा**

ईस्ट इंडिया कम्पनी के द्वारा किए गए प्रारम्भिक प्रयास पुर्तगालियों के प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से प्रेरित थे, ईसाई मिशनरियों ने जन साधारण के बीच जाकर ज्ञान का प्रसार किया मुश्लिम शिक्षा पध्यति जन सामान्य के बीच इस काल में ज्ञानमार्ग को प्रसस्त नही कर सकी । हालाकि कुछ स्वयं सेवी संगठनो धार्मिक आन्दोलन से प्रेरित इकाइयों ने निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करके भारी मात्रा में लोगो को ज्ञान का रसास्वादन करवाया पथ प्रदर्शक का कार्य किया और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का सूत्रपात किया।

कलकत्ता मदरसा की स्थापना लार्ड हैस्टिंग के काल में हुयी जहां कुरान, कानून, गणित, तर्क तथा व्याकरण की शिक्षा अरबी भाषा में दी जाती थी चूकि अग्रेज जजो को मुस्लिम कानूनों में सलाह लेने के लिए मौलियों की आवश्यकता पडती थी उसी प्रकार हिन्दू कानूनो की जानकारी के लिए जोनाथन डंकन ने सन 1791 में बनारस में संस्कृत कालेज की स्थापना की। वुड का घोषणा-पत्र (1854) इस आदेश पत्र में भारतीय शिक्षा के अंग-प्रत्यंगों पर विचार किया गया। इसमें कहा गया कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बौद्धिक, चारित्रिक तथा आर्थिक विकास करना है।

- **स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा**
- **भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन 1882-1883)**

सन् 1882 में 'भारतीय शिक्षा आयोग' का गठन सर विलियम हण्टर की अध्यक्षता में हुआ। इस आयोग द्वारा यह सुझाव दिये गये कि कॉलेज के छात्रों का नैतिक व धार्मिक स्तर का उत्थान करने के लिए उनको प्रकृति, धर्म और मानव धर्म के सिद्धान्तों से परिचित कराया जाना चाहिए।

- **विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग 1948-49)**

राधाकृष्णन आयोग या विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग भारत सरकार द्वारा सन् 1948 में भारतीय विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था पर रिपोर्ट देने के लिये नियुक्त किया गया था। सन् 1947 में भारत के आजाद होने के बाद इस बात की आवश्यकता अनुभव की गयी कि देश की विश्वविद्यालयी शिक्षा की पुनर्रचना की जाए ताकि वह राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पुनरूत्थान में

सहायक हो, साथ ही वैज्ञानिक, तकनीकि एवं अन्य प्रकार के मानवशक्ति का विकास सुनिश्चित करे। इस आयोग के अध्यक्ष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे।

- **माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन 1952-1953)**

इस आयोग ने सुझाव दिया कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास करना है, नेतृत्व की शिक्षा प्रदान करना एवं व्यावसायिक कौशल का विकास करना है। आयोग ने पाठ्यचर्या में विविधता लाने, एक मध्यवर्ती स्तर जोड़ने, त्रिस्तरीय पाठ्यक्रम शुरू करने इत्यादि की सिफारिश की। इस आयोग की अध्यक्षता डॉ. ए. लक्ष्मणस्वामी मुदालियर ने की।

- **राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग 1964-66)**

सन् 1964 में भारत सरकार ने डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में स्कूली शिक्षा प्रणाली को नया आकार देने के उद्देश्य से एक आयोग का गठन किया, जिसे कोठारी आयोग के नाम से जाना जाता है। कोठारी आयोग या राष्ट्रीय शिक्षा आयोग भारत का ऐसा पहला शिक्षा आयोग था, जिसने अपनी रिपोर्ट में सामाजिक बदलावों को ध्यान में रखते हुए कुछ ठोस सुझाव दिये।

1.1.3 वर्तमानकाल में शिक्षा की समस्याएँ

यह बात सर्वविदित है कि भारत की वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था अनेक प्रकार की संरचनात्मक, भाषायी, प्रशासनिक तथा मूल्यगत चुनौतियों का सामना कर रही है। इन चुनौतियों की जड़ें कहीं न कहीं ब्रिटिश कालीन शिक्षा नीतियों में निहित हैं, जिनकी आधारभूमि ऐसे 'प्रशिक्षित मनुष्य' तैयार करना था जो अंग्रेज शासन की प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। फलस्वरूप शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, रचनात्मकता और राष्ट्रनिर्माण की भावना को विकसित करने के बजाय मात्र क्लर्क, अनुवादक और सहायक कर्मचारी तैयार करने तक सीमित हो गया। आज स्वतंत्र भारत में भी कई शैक्षिक समस्याएँ औपनिवेशिक सोच के इसी ऐतिहासिक प्रभाव को प्रकट करती हैं।

1.1.3.1 ब्रिटिश कालीन नीतियों का प्रभाव

ब्रिटिश शासन की सबसे प्रमुख देन परीक्षा-प्रधान शिक्षा प्रणाली रही। वुड्स डिस्पैच (1854) से लेकर सैडलर आयोग (1917-19) तक शिक्षा को इस प्रकार ढाला गया कि विद्यार्थी रटकर लिखने में निपुण हों। इसका प्रभाव आज भी स्पष्ट है—भारतीय विद्यालयों और महाविद्यालयों में स्मृति-आधारित परीक्षाएँ, वार्षिक परीक्षा की कठोरता और उच्च अंकों की प्रतिस्पर्धा शिक्षा को सीखने की प्रक्रिया न बनाकर अंक प्राप्ति की होड़ बना देती है। इसी ढांचे के कारण आलोचनात्मक चिंतन, सृजनशीलता और शोध-दृष्टि का पर्याप्त विकास नहीं हो पाता। औपनिवेशिक नीतियों ने विषय-विकास और पाठ्यचर्या पर भी गहरा प्रभाव डाला। ब्रिटिश शासन को तकनीकी, कृषि एवं कौशल-आधारित शिक्षा से अधिक प्रशासनिक कार्यों के लिए मानव संसाधन चाहिए थे, इसलिए उन्होंने मानविकी विषयों को प्राथमिकता दी और व्यावसायिक शिक्षा की उपेक्षा की। आज भी कौशल-आधारित शिक्षा, उद्योग-संस्थानों की साझेदारी तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण को पर्याप्त महत्व नहीं मिल पाता, जिसके कारण शिक्षा और रोजगार के बीच अंतर बना रहता है। यह स्थिति पूरी तरह उपनिवेशकालीन दृष्टिकोण की परिणति है जिसमें “काम के लिए शिक्षा” की अवधारणा नगण्य थी। भाषायी असमानता भी ब्रिटिश प्रभाव की बड़ी चुनौती है। अंग्रेज़ी को प्रशासन और उच्च शिक्षा की भाषा बनाकर ब्रिटिश शासन ने समाज में भाषायी विभाजन पैदा किया। स्वतंत्रता के बाद भी यह स्थिति अप्रभावित बनी रही। परिणामस्वरूप अंग्रेज़ी माध्यम को श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति, मातृभाषाओं का कमजोर पड़ना, तथा अंग्रेज़ी ज्ञान के आधार पर सामाजिक और आर्थिक अवसरों का निर्धारण आज भी गहरी समस्या के रूप में उपस्थित है। यह भाषायी वर्चस्व न केवल शिक्षा में असमानता उत्पन्न करता है बल्कि सांस्कृतिक आत्मविश्वास को भी प्रभावित करता है। वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में प्रशासनिक केंद्रीकरण और नौकरशाही की जड़ें भी औपनिवेशिक ढांचे में पाई जाती हैं। ब्रिटिश शासन ने शिक्षा को शासन के नियंत्रण में रखा, जहाँ निर्णय ऊपर से तय किए जाते थे। आज भी विद्यालयों में अत्यधिक कागजी कार्य, प्रशासनिक नियंत्रण की कठोरता तथा शिक्षकों और छात्रों की निर्णय-प्रक्रिया में सीमित भागीदारी देखी जा सकती है। इससे शिक्षा

का मानवीय और लोकतांत्रिक चरित्र कमजोर होता है और नवाचार की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं। इसी प्रकार, औपनिवेशिक समय में शिक्षा का लाभ मुख्यतः उच्च वर्गों को मिलता था, जिसके परिणामस्वरूप समाज में शिक्षण अवसरों की असमानता पनपी। आज भी निजी और सरकारी विद्यालयों के बीच का अंतर, ग्रामीण-शहरी विभाजन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता में असमानता उसी ऐतिहासिक स्तरीकरण का आधुनिक रूप है। यह स्थिति दर्शाती है कि शिक्षा में समानता और समावेशन की दिशा में अभी भी पर्याप्त प्रयासों की आवश्यकता है।

1.1.3.2 पश्चिमी आधुनिकीकरण

भारतीय शिक्षा पर पश्चिमी आधुनिकीकरण का प्रभाव निम्नलिखित है:

1. शिक्षा के उद्देश्य में परिवर्तन: पश्चिमी आधुनिकता के प्रभाव से शिक्षा के उद्देश्य में परिवर्तन आया है, जैसे कि ज्ञान की प्राप्ति के स्थान पर रोजगार और आर्थिक विकास पर जोर देना।
2. शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन: पश्चिमी आधुनिकता के प्रभाव से शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन आया है, जैसे कि गुरुकुल प्रणाली के स्थान पर विद्यालय प्रणाली को अपनाना।
3. पाठ्यक्रम में परिवर्तन: पश्चिमी आधुनिकता के प्रभाव से पाठ्यक्रम में परिवर्तन आया है, जैसे कि पारंपरिक विषयों के स्थान पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर जोर देना।
4. शिक्षण विधियों में परिवर्तन: पश्चिमी आधुनिकता के प्रभाव से शिक्षण विधियों में परिवर्तन आया है, जैसे कि पारंपरिक शिक्षण विधियों के स्थान पर आधुनिक शिक्षण विधियों को अपनाना।
5. शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन: पश्चिमी आधुनिकता के प्रभाव से शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन आया है, जैसे कि स्थानीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी भाषा को अपनाना।
6. शिक्षा के स्तर में परिवर्तन: पश्चिमी आधुनिकता के प्रभाव से शिक्षा के स्तर में परिवर्तन आया है, जैसे कि प्राथमिक शिक्षा के स्थान पर उच्च शिक्षा पर जोर देना।

1.1.3.3 शिक्षा की सतत् उपेक्षा

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। इसमें भी प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से पंजाब के तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों में आधारभूत ढांचे से लेकर

अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच- पांच कक्षाएं संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। होशियारपुर के गांव कितना के सरकारी स्कूल की बात करें तो यहां चार वर्षों से कोई अध्यापक है ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती हैं। यह स्थिति देश के संपन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है कि चार सालों में स्कूल में अध्यापक भी नहीं नियुक्त नहीं कर सकती। गांव कितना के स्कूल में एक अध्यापिका है भी तो वह तीन साल में तीसरी बार विदेश गई है। यहां बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एनआरआइ ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिका की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहां पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा ही। करीब पांच साल पहले केंद्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था कि हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योंकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती। यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं। पंजाब सरकार को तत्काल ऐसे स्कूलों की पहचान कर वहां अध्यापकों की व्यवस्था करनी चाहिए और बार-बार विदेश जाने वाले अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए क्योंकी शिक्षा की उपेक्षा देश के भविष्य से खिलवाड करने जैसा है।

1.1.3.4 अन्य चुनौतियां

शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में निम्नलिखित चुनौतियां हैं:

i. गुणवत्ता की कमी: शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों में शिक्षकों की कमी, पाठ्यक्रम की कमी, और शैक्षिक संसाधनों की कमी है।

ii. पहुंच की कमी: शिक्षा तक पहुंच की कमी विशेषकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि इन क्षेत्रों में शैक्षिक संस्थानों की कमी है और सड़क, बिजली, और इंटरनेट जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी है।

iii. शिक्षकों की कमी: शिक्षकों की कमी और उनकी गुणवत्ता में सुधार करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों में शिक्षकों की कमी है और शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण और संसाधन नहीं मिलते हैं।

iv. बुनियादी ढांचे की कमी: शैक्षिक संस्थानों में बुनियादी ढांचे की कमी एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों में कक्षाएं, पुस्तकालय, और खेल के मैदान जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी है।

v. पाठ्यक्रम में पिछड़ापन: पाठ्यक्रम में पिछड़ापन और उसमें सुधार करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई पाठ्यक्रम पुराने और अप्रासंगिक हैं और उनमें सुधार करने की आवश्यकता है।

vi. . शिक्षा में तकनीक का अभाव: शिक्षा में तकनीक का अभाव एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों में तकनीक की कमी है और शिक्षकों को तकनीक का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जाता है।

vii. वित्तीय संकट: शिक्षा के क्षेत्र में वित्तीय संकट एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों को पर्याप्त धन नहीं मिलता है और उन्हें अपने कार्यक्रमों को चलाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

viii. निजीकरण: शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों को निजी कंपनियों द्वारा चलाया जाता है और उन्हें मुनाफा कमाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

ix. शिक्षा में भेदभाव: शिक्षा में भेदभाव एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों में छात्रों के साथ भेदभाव किया जाता है और उन्हें समान अवसर नहीं मिलते हैं।

शिक्षा के परिणामों में सुधार: शिक्षा के परिणामों में सुधार करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कई शैक्षिक संस्थानों में छात्रों के परिणाम अच्छे नहीं हैं और उन्हें सुधारने की आवश्यकता है।

1.1.4. शिक्षा के क्षेत्र में छात्र संगठनो का योगदान

- **भारत की स्वतंत्रता पूर्व छात्र संगठनो का योगदान**

भारत की स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भारत में जितने भी परिवर्तनकारी सामाजिक आंदोलन हुए, उनमें छात्रों की भूमिका बहुत अहम रही है। छात्र शक्ति, समाज को सुधारने और उसे मजबूत करने वाली घटकों में से एक है। इसलिए कहा जाता है की युवा देश के रीढ़ हैं, जिसके कंधे पर देश का भविष्य टिका होता है। स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भारत में जितने भी परिवर्तनकारी सामाजिक आंदोलन हुए, उनमें छात्रों की भूमिका बहुत अहम रही है। असहयोग आंदोलन के बाद, भारत छोड़ो आंदोलन को भारतीय छात्रों का समर्थन मिला। आंदोलन के

दौरान, छात्रों ने ज्यादातर कॉलेजों को बंद करने और नेतृत्व की अधिकांश जिम्मेदारियों को शामिल करने का प्रबंधन किया और भूमिगत नेताओं और आंदोलन के बीच लिंक प्रदान किया। शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन एक ऐसा राजनीतिक दल था जो अनुसूचित जाति के लोगों का प्रतिनिधित्व करता था। इसकी स्थापना बाबा साहब डॉ आंबेडकर ने 1942 में दलित समुदाय के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए की थी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) की स्थापना 1949 में राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य की दिशा में छात्र शक्ति को जुटाने के लिए की गयी थी।

- **स्वतंत्रता के बाद छात्र संगठनो का योगदान**

स्वतंत्रता के बाद, छात्र आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य में बदलाव आया है क्योंकि यह तर्कसंगत या व्यापक विचारधारात्मक प्रश्नों के बजाय विश्वविद्यालय के मुद्दों या स्थानीय राजनीतिक संघर्षों पर स्थानीय स्तर पर राजनेताओ के राजनीति का एक हथियार बन कर रह गया। लेकिन कुछ मामलो में छात्रों की उपस्तिथि ने क्रांति ला दी थी जैसे कि चिपको आन्दोलन, आपातकाल के दौरान हुए आन्दोलन, मंडल विरोधी आन्दोलन इत्यादि।

अखिल भारतीय युवा संघ (All India Youth Federation) की स्थापना 1959 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने युवा पीढ़ी के प्रगतिशील और लोकतांत्रिक खंड के लिए एकजुट मंच के रूप में की थी। नक्सलवादी आंदोलन 1967 में चरु मजूमदार, कानू सान्याल, और जंगल संथाल द्वारा सामंती शोषण के विरोध में शुरू किया गया था। इसके बाद छात्रो की एकरूपता ने इसे और भी क्रांतिकारी बना दिया था जिसका आज भी बिगड़ा रूप देखने को मिलता है।

1.1.5 छात्र संगठन का अर्थ

छात्र संगठन एक समाज या संगठन है, जो विश्वविद्यालय, कॉलेज या अन्य शैक्षणिक संस्थान में छात्रों द्वारा संचालित होता है, जिसकी सदस्यता में आमतौर पर केवल छात्र और/या पूर्व छात्र शामिल होते हैं।

1.1.6 छात्र संगठन एवं शिक्षा

हिंदू छात्र संघ (एचएसएफ) 1936 में आरएसएस के विचारधारा के साथ शुरू हुआ था।

छात्र संगठन की यह शाखा सीधे अपनी स्थापना से हिन्दू युवाओं की भावनाओं की वकालत करता था। 1936 में पहला अखिल भारतीय छात्र सम्मेलन लखनऊ में आयोजित किया गया था जिसमें पंजाब, यूपी, एमपी, बंगाल, असम, बिहार और उड़ीसा के 210 स्थानीय और 11 प्रांतीय संगठनों के 986 छात्र प्रतिनिधि शामिल थे।

मुस्लिम लीग ने 1937 में मुस्लिम छात्रों की शिकायतों को हल करने के लिए अखिल भारतीय मुस्लिम छात्र संघ की स्थापना की थी और इसी छात्र संगठन द्वारा मुसलमानों के लिए अलग राज्य की मांग को नई दिशा प्रदान करना चाहता था।

चंडी प्रसाद भट्ट के नेतृत्व में दशौली ग्राम स्वराज संघ ने 1960 में वन आधारित छोटे पैमाने पर उद्योग स्थापित करके अपने गृहनगर के पास स्थानीय लोगों को रोजगार के लिए गोपेश्वर में एक अभियान शुरू हुआ था। 1961 में गणराज्य युवक संगति ने आजादी के बाद पहला जातिवाद के खिलाफ और अनुसूचित जातियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए दलित आंदोलन शुरू किया था। भारतीय छात्र संघ (Student Federation of India): 1970 में सीपीआई (एम) ने छात्रों को एक लोकतांत्रिक और प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली से लड़ने के लिए, छात्र समुदाय के उन्नति और सुधार के लिए स्थापना की।

छात्र संगठनों के समक्ष विद्यमान कुछ प्रमुख चुनौतियाँ-

वैसे तो शिक्षा के क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं लेकिन विद्यार्थी परिषद व अन्य छात्र संगठनों की कुछ विशेष चुनौतियाँ हैं। ABVP (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद) की चुनौतियां निम्नलिखित हैं-

1. विरोधी संगठनों का विरोध: ABVP को अक्सर विरोधी संगठनों के विरोध का सामना करना पड़ता है, जो उसकी गतिविधियों को प्रतिबंधित करने या उन्हें कमजोर करने का प्रयास करते हैं।

1. छात्रों की उदासीनता: ABVP को अक्सर छात्रों की उदासीनता का सामना करना पड़ता है, जो राजनीति में रुचि नहीं लेते हैं या संगठन में शामिल होने में रुचि नहीं दिखाते हैं।
2. संगठनात्मक चुनौतियां: ABVP को अक्सर संगठनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि नेतृत्व की कमी, संचार की कमी, और सदस्यों की अनुशासनहीनता।
3. वित्तीय संकट: ABVP को अक्सर वित्तीय संकट का सामना करना पड़ता है, जो उसकी गतिविधियों को चलाने और विकसित करने में बाधा उत्पन्न करता है।

4. राजनीतिक दबाव: ABVP को अक्सर राजनीतिक दबाव का सामना करना पड़ता है।

1.1.7 कुछ महत्वपूर्ण छात्र संगठन

नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया (NSUI): इसकी स्थापना इंदिरा गांधी ने 9 अप्रैल 1971 को एक राष्ट्रीय छात्र संगठन बनाने के लिए केरल स्टूडेंट्स यूनियन और पश्चिम बंगाल राज्य छत्र परिषद के विलय के बाद की थी।

विदर्भ रिपब्लिकन छात्र संघ: इसकी स्थापना भगवान बुद्ध द्वारा शुरू किए गए मार्ग का अनुसरण करने और अम्बेडकर द्वारा अपनाई गई नैतिकता को अपनाने तथा उसका प्रचार करने हेतु किया गया था। 1974 में छात्र आन्दोलन आपातकाल के विरोध में शुरू हुआ। इसी दौरान अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और समाजवादी छात्रो ने पहली बार एक जुट होकर छात्र संघर्ष समिति का गठन कर आपातकाल का विरोध किया, जिसके लालू प्रसाद यादव अध्यक्ष चुने गए थे और सुशील कुमार मोदी महासचिव चुने गए थे। आपातकाल के विरोध प्रदर्शन के दौरान बहुत से छात्रो को बेरहमी से पीटा गया और उनको जेल में बंद कर दिया गया था। नेतृत्वविहीन आपातकाल आन्दोलन को नई उर्जा के लिया जय प्रकाश नारायण को छात्रो द्वारा आमंत्रित किया गया और उसके बाद उन्होंने 'सम्पूर्ण क्रांति' का नारा दिया।

जब वीपी सिंह सरकार ने 1990 में मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू करने की घोषणा की थी तब मंडल विरोधी आन्दोलन सवर्ण वर्ग के छात्रों द्वारा शुरू किया गया था। यह छात्र आन्दोलन बहुत ही संगठित तरह से आयोजित किया गया था। आन्दोलन का मुख्य मांग जाति पर आरक्षण को हटाने और आर्थिक विचारों के आधार पर आरक्षण का समर्थन करना था।

1.2 समस्या का प्रार्दुभाव


छात्रों ने फूंका मसर्रत आलम का पुतला

अलगाववादी मसर्रत आलम का पुतला फूंकते छात्र।

अतर्रा (बाँदा)। अलगाववादी नेता मसर्रत आलम द्वारा पाकिस्तान का झण्डा लहराते हुये भारत के खिलाफ नारे लगाने और पाकिस्तान के जिंदाबाद के नारे लगाने के विरोध में युवाशक्ति में उबाल आ गया। महाविद्यालय के सैकड़ों छात्रों ने उपजिलाधिकारी को एक ज्ञापन सौंप देशद्रोही को फाँसी पर लटकाये जाने की माँग की और उसके पुतले को लात जूतों से पीट-चौक बाजार में आग के हवाले अपना आक्रोश व्यक्त किया। छात्र नेता नीरज द्विवेदी, राजीव लोचन त्रिपाठी, अमन शुक्ला, अभिषेक गुप्ता, केशव ठाकुर, अक्षय द्विवेदी, सुभाष पटेल, नीरज मिश्रा व आशीष तिवारी के नेतृत्व सैकड़ों छात्रों का हुजूम भारत जिंदाबाद, हिन्दुस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते हुये मसर्रत के पुतले को हाथ में लेकर चौक बाजार पहुँचे और बारी-बारी से लात जूतों से पिटाई करते हुये आग के हवाले कर दिया। छात्र नेताओं ने कहा कि पाकिस्तान की सरकार आतंकियों को बढ़ावा दे रही है और हमारे भूभाग को विखण्डित करने का सपना देख रही है जो साकार नहीं होगा। उसका यह कदम स्वयं में आत्मघाती सिद्ध होगा। जम्मू काश्मीर की सरकार द्वारा मसर्रत जैसे लोगों की तरफदारी करना दुर्भाग्यपूर्ण है। मसर्रत को किसी भी दशा में छोड़ा न जाय और सैय्यद अलीशाह गिलानी को को गिरफ्तार कर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाय।

19-4-15/कानपुर - लोक भारती पृष्ठ सं०-5 को प्रकाशित।

शोधार्थी वर्ष 2009 से (जब वह कक्षा 9 का विद्यार्थी था) अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का सक्रिय सदस्य रहा है शोधार्थी की परिषद के विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता रही है शोधार्थी जब अतर्रा महाविद्याय में बी.एड. का छात्र था तब कानपुर प्रान्त की प्रान्तीय कार्यकारणी का सदस्य भी था इस कारण शोधार्थी परिषद की कार्य पद्यति को भली प्रकार से समझता है किन्तु शोधार्थी ने यह जाना कि आम जनमानस के बीच परिषद के कार्यों को लेकर अधिक जानकारी

नही है इन्ही सब कारणों से अतर्रा महाविद्यालय मे (वर्ष 2023) एम.एड. में प्रवेश के उपरान्त शोधार्थी ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान को शोध विषय के रूप में चुनने का निश्चय किया।

1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न विषय को चुना गया

"अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान''

1.4 अध्ययन का औचित्य

छात्र संगठनों की महत्ता को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि वर्ष 2024 में तथाकथित लोकतंत्र समर्थक सामूहिक विरोध और कोटा सुधार आंदोलन का नेतृत्व करने वाला संगठन "Students Against Discrimination" बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन की मुख्य धुरी बना। इस संगठन ने सरकार के खिलाफ जनमत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे देश में अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हुई। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि छात्र संगठनों का लक्ष्य स्पष्ट औंर राष्ट्रहित की भावना से परिपूर्ण हो एवं इनका नेतृत्व जिम्मेदार और दूरदर्शी हाथों में हो, और वे संगठित होकर सही व सकारात्मक दिशा में कार्य करें। भारत में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) पहले ही यह सिद्ध कर चुका है कि वह न केवल राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि राष्ट्र प्रेम और भारत प्रथम (India First) जैसी नीतियों को अपना कर स्पष्ट उद्देश्य और सिद्धांतों के साथ आगे बढ़ रहा है। जहां एक ओर बांग्लादेश जैसे देशों में छात्र संगठन विध्वंसात्मक गतिविधियों में संलग्न होकर अपने ही राष्ट्र में अस्थिरता उत्पन्न कर रहे हैं, वहीं भारत में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद राष्ट्र प्रेम की भावना से प्रेरित युवा शक्ति को संगठित कर रचनात्मक कार्यों द्वारा राष्ट्र की गरिमा, एकता और अखंडता को सुनिश्चित कर रहा है। SAIL जैसे कार्यक्रमों के संचालन द्वारा ABVP यह सिद्ध कर रही है कि छात्र संगठन राष्ट्र को जोड़ने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भी इस संगठन की प्रशंसा करते हुए कहा था: "यह संगठन न केवल विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है, बल्कि राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में भी सहायक है।"

इस शोध का औचित्य इस बात को स्पष्ट करना है कि ABVP केवल एक छात्र संगठन नहीं, बल्कि एक विचारधारा है जो "शिक्षा से राष्ट्र निर्माण" के सिद्धांत को आधार बनाकर कार्य करती है। संगठन ने न

केवल शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं को उठाया है, बल्कि शैक्षणिक संस्थानों में अनुशासन, गुणवत्ता, और नैतिक मूल्यों की स्थापना में भी सहयोग दिया है।

यह अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इसके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि ABVP जैसे संगठनों का शैक्षिक जगत में क्या योगदान रहा है, और कैसे उनका कार्यक्षेत्र विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में परोक्ष रूप से प्रभाव डालता है।

इसके अतिरिक्त यह अध्ययन छात्र संगठनों की सकारात्मक भूमिका के विश्लेषण हेतु एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में कार्य करेगा।

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1. अखिल सम्पूर्ण अर्थात जो सभी जगह व्याप्त हो अखिल भारतीय- सम्पूर्ण भारत

2. भारतीय भारत देश से सम्बन्धित

3. विद्यार्थी कक्षा 9 से लेकर उच्च शिक्षा मे अध्ययनरत सभी छात्र छात्राएं एवं शिक्षण कार्य में रत अध्यापक/अध्यापिकाएं

4. परिषद् समूह अर्थात संगठन

5. का एक संयोजक शब्द

6. शैक्षिक शिक्षा से सम्बन्धित या शिक्षा के क्षेत्र में

7. योगदान सहयोग देना या अपनी भूमिका निभाना।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्धन में निम्नलिखित उद्देश्य है

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान का अध्ययन करना

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करना

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शैक्षिक क्रिया कलापों का अध्ययन

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

प्रत्तेक शोध की अपनी सीमाएं होती हैं उसी सीमा तक उसका अध्ययन किया जाता है प्रस्तावित शोध की सीमाएं निम्नलिखित हैं प्रस्तुत शोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के केवल शैक्षिक योगदान का

अध्ययन किया जाना है अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा किए गए शिक्षा सम्बन्धी प्रयासों का अध्ययन ही किया जाना निर्धारित है।

1.8 अध्ययन विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया है। जिसका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत लघु शोध का उद्देश्य ' अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान' का अध्ययन करना है। प्रस्तावित शोध में शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु विवरणात्मक/वर्णनात्मक अनुसन्धान विधि के अन्तर्गत इकाई अध्ययन (Case Study) विधि का चयन किया है। इकाई अध्ययन को वैयक्तिक अध्ययन, एक वृत्त अध्ययन, एकल / एकक अध्ययन आदि नामों से भी जाना जाता है। इकाई अध्ययन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक समय में केवल एक इकाई का अत्यन्त गहराई से अध्ययन किया जाता है। वह इकाई एक व्यक्ति भी हो सकता है और एक समूची संस्था अथवा कोई नीति, प्रक्रिया, प्रथा आदि भी हो सकती है। इसी प्रकार किसी एक परिवार एक जन-समूह, एक जाति विशेष, धर्म आदि का व्यापक रूप से किया गया अध्ययन भी एकक अध्ययन के अन्तर्गत आता है। इन अध्ययनों का उद्देश्य उस इकाई का प्रत्येक दृष्टिकोण से गहन अध्ययन करके इस बात पर प्रकाश डालना होता है कि वास्तव में समस्या क्या है?, वह किस प्रकार उत्पन्न हुई है?, उसे जन्म देने वाले कारक तत्व एवम् प्रक्रियाएँ क्या हैं? तथा वे किस प्रकार गतिशील रही हैं? लक्ष्यानुसार अनुसन्धानकर्ता उस इकाई के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित तथा विभिन्न स्रोतों से सूचना सामग्री एकत्र करता है। उस सूचना सामग्री का उपयुक्त विधि से विश्लेषण करके लक्ष्यानुसार निष्कर्षों का निर्धारण करता है। इकाई अध्ययन विधि के अन्तर्गत किसी एक सामाजिक इकाई से सम्बन्धित सभी पक्षों का व्यापक, सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है।

द्वितीय अध्याय सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1. प्रस्तावना

अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का वैज्ञानिक तथा महत्त्वपूर्ण चरण है, क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है, जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव-सृजित ज्ञान के तीन पथ होते हैं–ज्ञान को एकत्रित करना, दूसरी पीढ़ी को ज्ञान का स्थानांतरण और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी शोध में ये तथ्य विशेष महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यावहारिक आधार पर संपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढ़ी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर चिंतन, परिष्करण अथवा पूर्ण व आशिंक परिवर्तन करके निरंतर विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें। अपनी समस्या से संबंधित यथासंभव उपलब्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं व गतवर्षों में एकत्रित किये गए अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरणों से अपने को पूरी तरह से परिचित करने से यह ज्ञात होता है कि समस्या से संबंधित किस पथ पर या किस पक्ष पर कार्य हो चुका है, उसमें शोध की कौन-सी प्रविधि प्रयुक्त की गई है और समस्या का कौन-सा पक्ष ऐसा है, जिस पर अध्ययन नहीं किया गया है। व्यावहारिक आधार पर मानव उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त करके चिंतन-मनन, शोधन और परिवर्तन करके निरंतर विकास की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता रहता है। ज्ञानार्जन के तीनों पहलुओं–ज्ञान संचयन, समानुपातिक प्रेषण-संप्रेषण, ज्ञानवर्धन द्वारा किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धांतों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से संबंधित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं। "डॉ. सी.वी. रमन के नियमानुसार कोई भी शोध का संबंधित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है, जब तक कि उस शोध से संबंधित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो।" अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसका लक्ष्य संबंधित क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है कि मानव की इसी प्रकृति के फलस्वरूप ज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई है तथा सदियों से उसका एक क्रम निरंतर चला आ रहा है। ज्ञान की यह प्रक्रिया अनंत है। जब तक मानव जीवन है, उसकी यह ज्ञान-तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती है। क्या हो? कैसा

हो? या कैसा होना चाहिए? इन प्रश्नों से अनभिज्ञ मानव जीवन सदैव जिज्ञासा में रहता है। उसकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने सदैव ही कल के ज्ञान को नवीन रूप प्रदान किया है।

2.2. शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित है

सिंह, किरन (2008) ने "रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि–

- रवींद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक रूप में लिया है। उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है।
- टैगोर भी अपने स्कूल की स्थापना नगर के कोलाहल से दूर शांत वातावरण एवं प्रकृति की सुरम्य गोद में करना चाहते थे। जहाँ छात्र और अध्यापक शिक्षा की साधना में लग सके।
- टैगोर चाहते थे कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीक हो और अंतिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। मानव की वास्तविकता ही मानवता है।
- बच्चों के अंदर विश्वबंधुत्व की भावना भूमंडलीकरण की बात बनती जा रही है, संचार के माध्यम बढ़ते जा रहे हैं। बच्चों में देश-विदेश के प्रति प्रेम को भी बढ़ावा मिले।

तिवारी, बाबूलाल (1996-97) ने "वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—

- पं. दीनदयाल जी एक सन्त राजनेता थे। शिक्षा संस्कार एवं धर्म उनकी प्रमुख अभिधारणायें हैं।
- वे लोकतन्त्र के लिए लोकमत परिष्कार को आवश्यक मानने वाले, अर्थशास्त्र नियंत्रित उद्योग के विरोधी एवं धर्म नियंत्रित अर्थ के पक्षधर थे।
- उनका मानना था कि समाज को नियंत्रित करने वाली शक्ति राजनीति में नहीं होती वरन् संस्कृति में होती है। इसीलिए 'संस्कृति ' उनका प्रिय विषय बनी।
- अतः ये नेता कम सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यकर्ता ज्यादा थे। उनका ध्यान राजनीति की अपेक्षा सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने वैचारिक चिंतन पर अधिक था।

- दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की सभी विचारधाराओं को अपूर्ण एकांगी एवं प्रतिक्रियावादी मानते थे।
- पश्चिम द्वारा मानव को रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं वाला प्राणी निरूपित किये जाने को असंगत तथा राजनैतिक प्राणी' 'सामाजिक प्राणी' या आर्थिक प्राणी की संज्ञा को एकांगी मानते थे।
- उन्होंने माना है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मानव की व्याष्ट व समष्टिगत आवश्यकता है।
- इन चारों पुरुषार्थों के अनुसार ही हमारी राजनीतक आर्थिक और सामाजिक विचारधाराओं को विकसित किया जाना चाहिए इसी चिन्तन से ही उनका एकात्म मानववाद' प्रकट हुआ।

शर्मा डॉ० शशिकांत (2007) ने "गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन" किया और यह पाया कि-

- गिजू भाई शिक्षा द्वारा स्वातंत्र्य, निर्भयता, स्वावलम्बन, सत्य, प्रेम, अहिंसा, त्याग, मैत्रीभाव, दया,
  अपरिग्रह, सहिष्णुता, सेवाभाव, सामाजिक संवेदनशीलता, स्वच्छता, सदाचरण, सादगी व सरलता,
  सद्-असद् विवेक, वैज्ञानिक अभिवृत्ति जैसे मूल्यों का विकास करने पर बल देते हैं।
- उन्होंने आत्म-साक्षात्कार, सौन्दर्य, प्रेम, स्वाधीनता, नियमन व स्वातंत्रय जैसे मूल्यों को अत्यन्त मौलिक रूप से परिभाषित किया है।
- गिजू भाई कहते हैं कि मनुष्य शरीर की शक्ति बढ़ा सकता है, बुद्धि का वैभव प्राप्त कर सकता है,परन्तु अगर मनुष्य आत्मा की शुद्धि प्राप्त करने में पूरी जिन्दगी व्यतीत कर दे तब भी सफलता दूर ही रहेगी। यह विकास इतना कठिन इतना सूक्ष्म है कि मात्र कथा कहानी सुनाकर या उपदेश देकर नहीं प्राप्त किया जा सकता है।



- वे कहते हैं कि सत्य पाठ पढ़ाकर बालक से सत्य की अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति या तो मूर्ख होता है, अज्ञानी होता है या ढोंगी इस प्रकार गिजू भाई उपदेशात्मक रूप से नीति शिक्षण की व्यर्थता सिद्ध करते हैं।
- वे कहते हैं कि नीति शिक्षण का राग अलापने वालों की नसों में अनीति के भयंकरतम कीटाणु घुस गये हैं। चूंकि वे अपने अंदर की अनीति से भय खाते हैं, उससे लड़ने में सक्षम नहीं है, अतः उसे दुनिया से हटाने के लिए लड़ रहे हैं।
- वे कहते हैं कि नीति शिक्षण मनुष्य को आत्मा की स्वतंत्रता से भ्रष्ट करता है। मनुष्य स्वयं अनीति पर चलता है पर चाहता है कि बालक नीतिवान बने यह कदापि सम्भव नहीं है।

- गिजू भाई बालक को प्रकृति शिक्षा दिये जाने का प्रबल समर्थन करते हैं। उनका कहना था कि अपने बालक को प्रकृति से दूर रखकर क्या हम उसको देव बनायेंगे अथवा दानव?
- प्रकृति द्वारा दिया गया शिक्षण ही गिजू भाई की दृष्टि में उत्तम सामाजिक शिक्षण है।
- इस शिक्षण से उसका नैतिक विकास सहज स्वाभाविक बनता है और वह धार्मिक विकास के सुदृढ़ आधार के रूप में चिरस्थायी रहता है।
- प्रकृति शिक्षण में स्व-शिक्षण का मूल भी निहित है गिजू भाई कहते हैं कि प्रकृति की शिक्षा धैर्य एवं विश्वास की पोषक होती है। प्रकृति ही मनुष्य की आत्मा एवं देह की प्रथम धाय है।

आबी शादाब, (2009) ने "डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि-

- दोनों के विचारों में पारम्परिकता एवं आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।
- जाकिर साहब व कलाम साहब दोनो के अनुसार शिक्षा बच्चों के सर्वोत्तम का सर्वागीण विकास है दोनों विचारकों के इस प्रयत्न को भी शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते है।
- अनुशासन के संबंध में भी दोनों के विचार अत्यन्त प्रासंगिक है। आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन की चर्चा दोनों विचारक करते है।
- शारीरिक दण्ड को बिलकुल समाप्त करने के पक्ष में है। वर्तमान समय में भी आंतरिक रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष में है।
- पाठ्यक्रम में इन दोनों विचारको ने सहसंबंध, समन्वय, समाकलन एवं क्रिया पर बल दिया है।

राकेश कुमार (2020) ने "ब्रह्माकुमारीज का शैक्षिक योगदान विषय पर अध्ययन" किया और पाया कि-

- प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरी विश्व विद्यालय के विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि इनकी मूल्य शिक्षा में अहम भूमिका है।
- यह संस्था अव्यक्त शिक्षाओं का अनमोल भण्डार है।
- प्रजापति ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विश्व समुदाय को खुशहाल जीवन जीने, मानवीय मूल्यों के पोषण, संघर्ष के समाधान एवं शांति स्थापित करने के प्रयास के लिए जाना जाता है।



- संस्थान में शिक्षा का उद्देश्य स्वास्थ्य शिक्षा, अध्यात्मिक विकास, चारित्रिक विकास, वैज्ञानिक बुद्धि का विकास, शांति एवं बंधुत्व का विकास, व्यावसायिक दक्षता का विकास तथा आत्माभिव्यक्ति को माना जाता है।

- इन्होंने पाठ्यक्रम में गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, समाज विज्ञान, कला, योग व संगीत, जैसे परंपरागत विषयों के साथ-साथ व्यवसायिक कौशलों के विकास को शामिल करना भी आवश्यक माना हैं।
- सार्वजनिक जीवन में नैतिकता को पुनर्जीवित करने के लिए इंडिया अगेंस्ट करप्शन और वर्ल्ड फोरम फॉर एथिक्स इन बिजनेस जैसे अहम आंदोलनों का संचालन भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई लड़ने का एक प्रयास है।
- वचनबद्धता, जागरूकता, अपनेपन की भावना, मानवीय मूल्यों को बढ़ाने एवं किसी भी क्षेत्र में प्रगति के लिए जीवन के मूल सूत्र है।
- चार स्वर्णिम कुंजियां वार्षिक वेतन वृद्धि, अंतःप्रेरणा, आंतरिक रूपांतरण ,एक ध्यानस्थ मन, शांत और स्वच्छ मानसिक स्थित प्रबंधन को प्रभावी बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

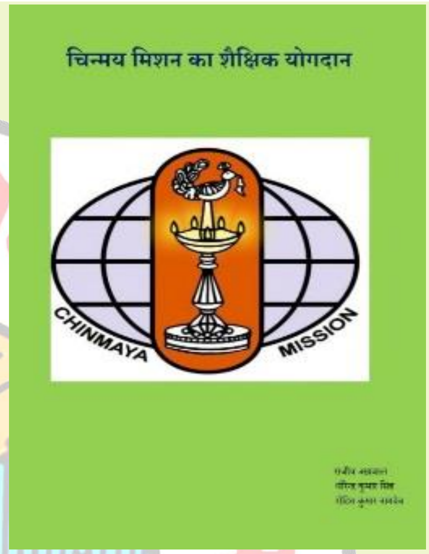
पियूष कांत (2020) ने "विश्व जागृति मिशन के शैक्षिक योगदान विषय पर अध्ययन किया" और पाया कि-

- विश्व जागृति मिशन के संस्थापक श्री सुधांशु जी महाराज हैं।
- मिशन के संस्थापक महाराज श्री ने शिक्षा में व्यक्ति को महत्वपूर्ण इकाई माना है, क्योंकि अगर व्यक्ति शिक्षित, अच्छे चरित्र और गुणों वाला होगा तो समाज भी उत्कृष्ट होगा।
- विश्व जागृति मिशन के विचारों से स्पष्ट है कि वह समन्वय शिक्षा अर्थात प्राचीन भारतीय संस्कृति और आधुनिकता के साथ विद्यार्थियों को शिक्षित करने का प्रयास कर रहा है।



- विश्व जागृति मिशन व्यक्ति को शरीर, मन, आत्मा के साथ-साथ हाथों के परीक्षण में भी योगदान देकर व्यावसायिक शिक्षा प्रदान कर रहा है।
- विश्व जागृति मिशन द्वारा समाज के अनाथ, बेसहारा बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देकर मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है।
- मिशन द्वारा स्थापित स्कूलों, गुरुकुलों, बाल आश्रमों में सर्वांगीण विकास परक शिक्षा का दी जा रही है।
- विश्व जागृति मिशन द्वारा स्थापित गुरुकुलों तथा विद्यालयों में प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा दी जा रही है।

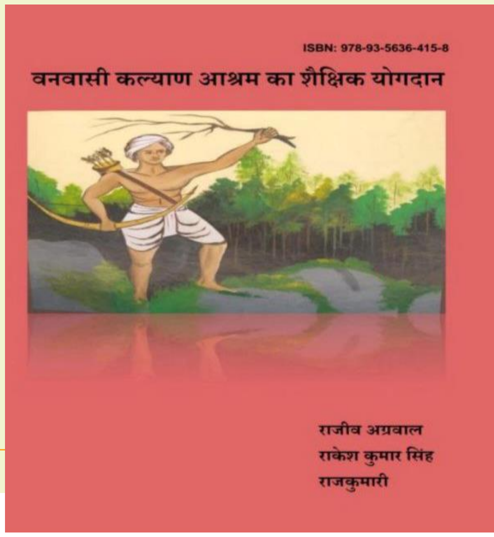
- मिशन द्वारा स्थापित गुरुकुल संस्कृति प्रचार का केंद्र है, इनमें से विद्यार्थी उपदेशक बनकर देश की सेवा कर रहे हैं तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।
- मिशन के संस्थापक श्री सुधांशु जी महाराज ने शिक्षा में चरित्र की स्थापना को महत्वपूर्ण माना है क्योंकि विद्यार्थियों को चरित्रवान होना अति आवश्यक है, तथा इस बात पर बल दिया है कि पुस्तकीय शिक्षा उपयोगी है, लेकिन विद्यार्थियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति में वृद्धि हो, बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।



धीरेन्द्र कुमार सिंह 2020 **ने** "चिन्मय मिशन के शैक्षिक योगदान का अध्यय" किया। सिंह ने अपने निष्कर्ष में पाया कि-

- चिन्मय मिशन अपनी शिक्षा में धार्मिक प्रचार-प्रसार से लेकर शिशु विहार, बाल विहार, चिन्मय युवा केन्द्र व चिन्मय सेतुकारी जैसी संस्थाएं चलाकर बच्चों से लेकर युवाओं को जागरूक कर रोजगार दिलाने एवं विभिन्न प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराने पर जोर देता है।
- मिशन के संस्थानों में छात्र सत्य, एकता, सहयोग, धर्मपरायणता, दया, अहिंसा, अन्तःदर्शन, अनेकता में एकता, परमानन्द जैसे व्यावहारिक ज्ञान को सीखते हैं। जो छात्रों को आदर्श नागरिक बनाकर एक स्वास्थ्य शैक्षिक समाज के सृजन में सहायक है।
- स्वामी जी धर्म शिक्षा, रोजगार शिक्षा, महिला रोजगार, जनसेवा, जनसाधारण शिक्षा पर अधिक जोर दिया है। मनुष्य की आत्मा स्वभाव से स्वयं प्रकाशित है। अतः हमारे लिए प्रकाश का अस्तित्व सदा से ही है।

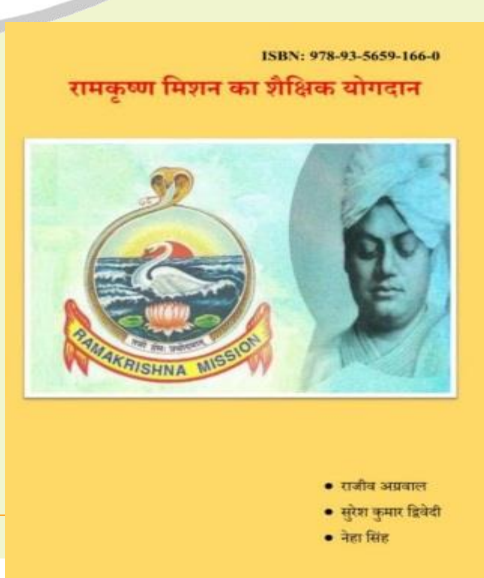
राकेश कुमार सिंह (2021) ने "अखिल भारतीय वनवाशी कल्याण आश्रम के शैक्षिक योगदान" का अध्ययन किया और पाया कि-



- वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक दर्शन वर्ण, जाति, वेश या किसी अन्य भेदों के झगडों मे न पड़कर सम्पूर्ण मानव को एक ही मापतौल से सद्गति देने तथा सभी धमकि प्रति सहिष्णता उद्धाटित करता है।
- आजकल के सामाजिक बदलाओं को देखते हुएं वर्तमान शिक्षा पद्धति में श्री बालासाहब जी जो संस्थापक थें अखिल भारतीय वनवाशी कल्याण आश्रम उनके शैक्षिक विचारों एवं दर्शन, शैक्षिक विधियों एवं प्रविधियों को अपनाना आपकश्यक हो गया है।
- श्री बालासाहब बालक के ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करने पर बल देते है। उनका विचार हैं कि शिक्षा का उद्देश्य पढ़ना नहीं ज्ञान एवं अनुभव को आत्मसात करा हैं।
- श्री बालासाहब जी के अनुसार ईश्वर सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापी हैं विद्या मुक्ति का मार्ग प्रदान करती हैं।
- ईश्वर प्राप्ति ही मुक्ति है और आध्यात्मिक शिक्षा जीवन मूल्यों, नैतिकता, विकास पर बल देती हैं।
- वनवासी कल्याण आश्रम के प्राथमिक उद्देश्य बालकों का चारित्रिक एवं नैतिक विकास करना हैं। छात्रों में आत्मसंयंम, आत्मप्रेम, सहयोग, सदभावना आदि सदूणों को विकसित करना है।
- आज्ञापलन, अनुशासन अतिथी सम्मान, दूसरों की भावनाओं का सम्मान, सहयोग, सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन आदि गुण भी विद्यार्थियों में विकसित होने चाहिए।

सुरेश कुमार द्विवेदी (2019) ने "रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक योगदान विषय का अध्ययन" किया और पाया कि-

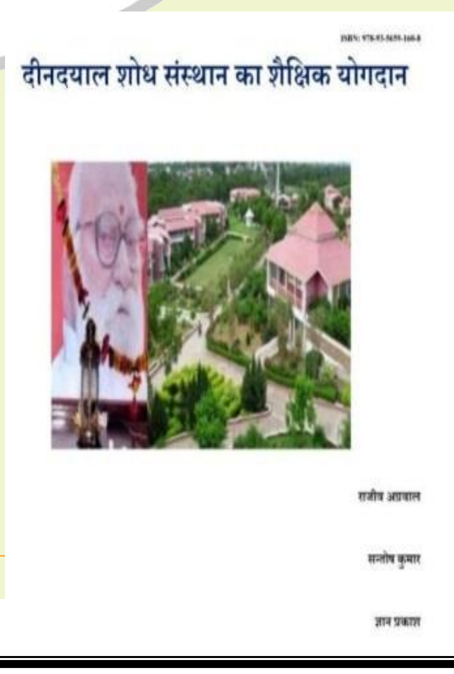
- रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट कि रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक दर्शन में शिक्षा की अहम् भूमिका है।
- मिशन का ऐसा मानना है कि निषधोत्मक विचार लोगों को दुर्बल बना देते हैं। सारे प्राणियों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना है। शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है बल्कि हमें उन विचारों की अनुभूति है जो जीवन निर्माण, मानव निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो।



- मन की एकाग्रता ही शिक्षा का सम्पूर्ण सार है। एकाग्रता की शक्ति ही ज्ञान के खजाने की एक मात्र कुंजी है। कार्य ध्येय की सिद्धि है और कारण साधन है।
- हमें वही मिलता है, जिसके हम पात्र होते है।
- शिक्षा होनी चाहिए, जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो, जिससे प्रत्येक मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ हो सके।
- सभी प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना ही है।
- पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने से प्रबल बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न होती है तथा वासनाओं को वश में कर लेने से उत्कृष्ट फल प्राप्त होते है।
- सदैव और सभी अवस्थाओं में मन, वचन और कर्म से पवित्र रहना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है।
- भलाई और बुराई दोनों का चरित्र-गठन में समान स्थान है और कभी-कभी तो सुख की अपेक्षा दुःख ही बड़ा शिक्षक होता है।
- मनुष्य की आत्मा स्वभाव से ही स्वयं प्रकाशित है अतः हमारे लिए प्रकाश का अस्तित्व सदा से ही है।
- सम्पूर्ण शिक्षा तथा समस्त अध्ययन का एक ही उद्देश्य है मनुष्य के व्यक्तित्व को गढ़ना।
- सूक्ष्मतम् को हम आत्मा कहते है और स्थूलतम् को शरीर कहते है। सबसे अधिक शक्ति सूक्ष्म में होती है, स्थूल में नहीं।
- प्राचीन धर्मों ने कहा कि "वह नास्तिक है, जो ईश्वर विश्वास नहीं करता। नया धर्म कहता है कि "नास्तिक वह है, जो स्वयं में विश्वास नहीं करता
- भारत वर्ष की पुरानी शिक्षा प्रणाली वर्तमान प्रणाली से बिल्कुल भिन्न थी। विद्यार्थियों को शुल्क नहीं देना पड़ता था। ऐसी धारणा थी कि ज्ञान इतना पवित्र है कि उसे किसी मनुष्य को बेचना नहीं चाहिए| ज्ञान का दान मुक्त हस्त होकर बिना कोई दाम लिए करना चाहिए।
- उपरोक्त विचारों को आत्मसात करते हुए रामकृष्ण मिशन वर्तमान में रामकृष्ण मिशन द्वारा एक विश्वविद्यालय, एक कला और विज्ञान कालेज, एक संस्कृत कॉलेज, एक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाएँ, एक शारीरिक शिक्षा का कालेज तथा एक संस्कृत विद्यालय संचालित है।
- साथ ही रामकृष्ण मिशन द्वारा दो पालिटेक्निक कालेज, दो जूनियर तकनीकी एवं औद्योगिक विद्यालय, दो इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, दो ग्रामीण विकास प्रशिक्षण संस्थाएँ तथा दो राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान केन्द्र की भी स्थापना की गयी है।

- चार (4) जूनियर बेसिक प्रशिक्षण संस्थाएँ तथा चार (04) कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी है। आठ रात्रिकालीन विद्यालय/भप्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की स्थापना की गयी है। बारह उच्च माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी है।
- चौदह (14) जूनियर हाईस्कूल/मिडिल स्कूल की स्थापना की गयी है पच्चीस (25) माध्यमिक विद्यालयों, पैतालिस (45) व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र पचास (50) प्राथमिक विद्यालय, 50 अन्य शिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गयी है।
- इस प्रकार मिशन द्वारा 734 विविध शैक्षणिक संस्थान/प्रकल्प संचालित है, जिनमें लगभग एक लाख से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा समय-समय पर अनेकों व्यवसायिक पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं जैसे-दुग्ध, मुर्गीपालन, बतख पालन, बकरी पालन, मत्स्य पालन, पक्षी पालन, मधुमक्खी पालन, रेशम कीट पालन, कृषि बागवानी, पुष्पों का अध्ययन आदि कार्बनिक खेती, जैविक खाद, मशरूम की खेती फसलों की देखभाल आदि।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक इकाईयां जैसे बालक संघ, ज्ञानवाहिनी आदि कार्यरत है।
- रामकृष्ण मिशन सांस्कृतिक कैम्पस के अन्तर्गत व्यक्तित्व विकास की 26 ईकाइयाँ संचालित है। योगाध्यान आदि में 24 ईकाइयाँ संचालित है। बच्चों के कैम्प (छुट्टियों के समय में शामिल) में 4 ईकाइयाँ संचालित है। मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में 326 ईकाइयाँ संचालित है।

सन्तोष कुमार द्वारा वर्ष 2020 में "दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक योगदान का अध्ययन" किया। कुमार ने अपने शोध में पाया कि-

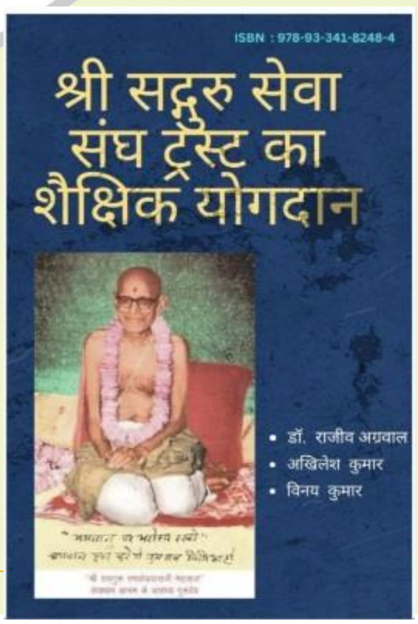


- दीनदयाल शोध संस्थान के संस्थापक नानाजी देशमुख ने अपने बाल्यकाल में गरीबी एवं कष्टों का सामना किया है। उनका जीवन बड़े संघर्षों से परिपूर्ण था।
- उन्होंने अपने जीवन की कष्टमय परिस्थिति को देखकर समाज के अन्य वंचिक लोगों के उत्थान हेतु दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की।

- जिसके द्वारा गरीब लोगों को निःशुल्क शिक्षा, स्वावलम्बन और व्यावसायिक शिक्षा हेतु अनेक परियोजनाएं संचालित की जाती हैं।
- समाज में गरीब वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने हेतु निःशुल्क आवासीय विद्यालयों की स्थापना की।
- इस विद्यालय में बागवानी के लिए पर्याप्त मैदान उपलब्ध है जिससे छात्रों के द्वारा समग्र गतिविधियाँ करायी जाती है।
- विद्यालय परिसर में विभिनन प्रकार के पेड़ जैसे - आंवला, करौंदा, आम आदि हैं, जिससे बच्चों को आचार, मुरब्बा, कैंडी आदि बनाना सिखाते है।
- यहाँ पर शिक्षा व्यवस्था आश्रम पद्धति की तरह है। समय से जगना, नित्य क्रिया करना, वन्दना, सायं के समय शाखा आदि सिखाया जाता है।
- यहाँ पर कक्षावार पाँच से छः छात्र/छात्राओं की दैनिक ड्यूटी लगायी जाती है जिनकी नास्ता, भोजन आदि कराने की ज़िम्मेदारी होती है।
- इस विद्यालय में प्रत्येक दिन अलग-अलग शिक्षक दिनाधिकारी होते है। अगर कोई शिक्षक अपने दिन में अनुपस्थित है तो उसमें उस शिक्षक की जगह अगले शिक्षक को दिनाधिकारी नियुक्त किया जाता है। यह चक्रिय होता है।
- यहाँ पर बच्चे भोजन के समय में भोजन वितरण के समय प्रेरक गीत तथा भोजन मंत्र करते हैं।
- तत्पश्चात सभी बच्चे एक साथ मिलकर अनुशासन से शान्ति पूर्वक भोजन करते हैं।

अखिलेश कुमार द्वारा वर्ष 2024 में “श्री सद्गुरु सेवा ट्रस्ट के शैक्षिक योगदान का अध्ययन” किया गया। अखिलेश कुमार ने अपने शोध में पाया कि-

- सद्गुरु सेवा ट्रस्ट की स्थापना श्री रणछोड़ दास जी महाराज द्वारा की गई।
- श्री रण छोड़ दास जी महाराज एक मानवीय संत थे। तपस्या और समाज सेवा उनके जीवन में पूर्ण सामंजस के साथ मौजूद थे।
- महाराज जी का जन्म महाराष्ट्र के अमरावती जिले के एक गांव बायफल में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्हें श्री रामानंद जी के प्रति गहन भक्ति थी।



- वे अत्यंत सरल व सर्वप्रिय संत थे दुबला-पतला शरीर लेकिन उसमें असीम प्रेम और ऊर्जा थी।
- इन्होंने गरीब लोगों के लिए अनूठी सेवा की और उनके कष्टों को कम करने का प्रयास किया।
- गुरुदेव रणछोड़ दास जी ने शिक्षा को समाज के उत्थान का प्रमुख साधन माना। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्राप्त कर सकता है।
- उन्होंने अपने उपदेशों में शिक्षा के महत्व को बार-बार रेखांकित किया और इसे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बताया।
- इन्होंने निःस्वार्थ और त्यागपूर्ण सेवा के तरीकों से कई परोपकारी संस्थानों, अस्पतालों, विद्यालयों की स्थापना को प्रेरित किया, जो देश के कई हिस्सों में संचालित हैं। श्री सदुरु सेवा संघ ट्रस्ट भी उन्ही में से एक है।
- श्री सदुरु सेवा संघ ट्रस्ट की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू नैतिकता और मानवता के प्रति जागरूकता फैलाना है। रणछोड़ दास जी महाराज के सिद्धांतों के अनुसार, शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समाज में नैतिकता, ईमानदारी, और सेवा के मूल्यों को भी सिखानी चाहिए। श्री सदुरु सेवा संघ ट्रस्ट के शैक्षिक कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- श्री सदुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में समाज सेवा की भावना को बढ़ावा दिया जाता है। रणछोड़ दास जी महाराज के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य समाज की सेवा और सुधार भी होना चाहिए ट्रस्ट के शिक्षण कार्यक्रम इस बात पर जोर देते हैं कि विद्यार्थी समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें और समाज कल्याण के लिए कार्य करें।
- तत्कालीम समय में महिलाओं की शिक्षा पर बहुत कम ध्यान दिया जाता था, लेकिन गुरुदेव ने महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित किया। वे मानते थे कि महिलाओं का शिक्षित होना समाज के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।
- ट्रस्ट सभी के लिए शिक्षा के मूल्य में दृढ़ता से विश्वास करता है। क्योकी साक्षरता समुदाय को सामाजिक जीवन और अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में लाने में काफी हद तक योगदान देती है।
- समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती शिक्षा प्रदान करने के लिए, ट्रस्ट ने शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा।

- ट्रस्ट ने शुरुआत में एक स्कूल से की और धीरे-धीरे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षा और व्यावसायिक संस्थानों को जोड़ा।
- ट्रस्ट अपने तत्वावधान में कई प्राथमिक, माध्यमिक और व्यावसायिक संस्थान चलाता है, जिसमें स्कूल शिक्षा, नर्सिंग, पैरामेडिकल साइंस, कंप्यूटर शिक्षा, संस्कृत शिक्षा और संगीत शामिल हैं।
- योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षण का उच्चतर मानक आधुनिक एवं पारंपरिक तरीकों से शिक्षण गतिविधि आधारित एवं व्यावहारिक शिक्षा ताकि छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा सके और उनकी रचनात्मक प्रतिभाओं की खोजा जा सके।
- तनाव मुक्त शिक्षण वातावरण व खेल गतिविधियों के लिए विशाल परिसर की व्यवस्था की गई है।

2.3. समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा पूर्व में किए गए कतिपय शोधों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया जिसमें रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता, वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन, विश्व जागृति मिशन के शैक्षिक योगदान, चिन्मय मिशन के शैक्षिक योगदान, अखिल भारतीय वनवाशी कल्याण आश्रम के शैक्षिक योगदान, रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक योगदान, दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक योगदान, श्री सद्गुरु सेवा ट्रस्ट के शैक्षिक योगदान का अध्ययन इत्यादि सामिल हैं।

शोधकर्ता को संम्बन्धित साहित्य के अध्ययनों से यह स्पष्ट तौर पर ज्ञात हुआ कि शैक्षिक योगदान विषय पर समय-समय पर जो भी शोध कार्य हुए हैं उनमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शैक्षिक योगदान को कहीं सम्मलित नहीं किया गया, इतना ही नही वरन छात्र संगठनों के विषय में भी कोई शोध कार्य नही हुए हैं जबकि आज के शिक्षा जगत में इनकी भी अपनी महत्व पूर्ण भूमिका होती है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) ने भारत की शिक्षा-व्यवस्था के विविध आयामों पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष—दोनों स्तरों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा है। इसलिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शैक्षिक योगदान विषय पर किया गया शोध निश्चित रूप से जन मानस के लिए उपयोगी साबित होगा।

तृतीय अध्याय

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का परिचयात्मक विवरण

3.1 स्थापना की पृष्ठभूमि

3.2 संगठन का लक्ष्य

3.3 ABVP की विचार बैठकें

3.4 ABVP की प्राथमिताएं

3.5 परिषद के आग्रह बिन्दु

3.6 परिषद का दायित्व

3.7 परिषद की रणनीति

3.8 ABVP की विशिष्टताएं

3.9 ABVP के मूलभूत सिद्धान्त

तृतीय अध्याय
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का परिचयात्मक विवरण

3.1 स्थापना की पृष्ठभूमि

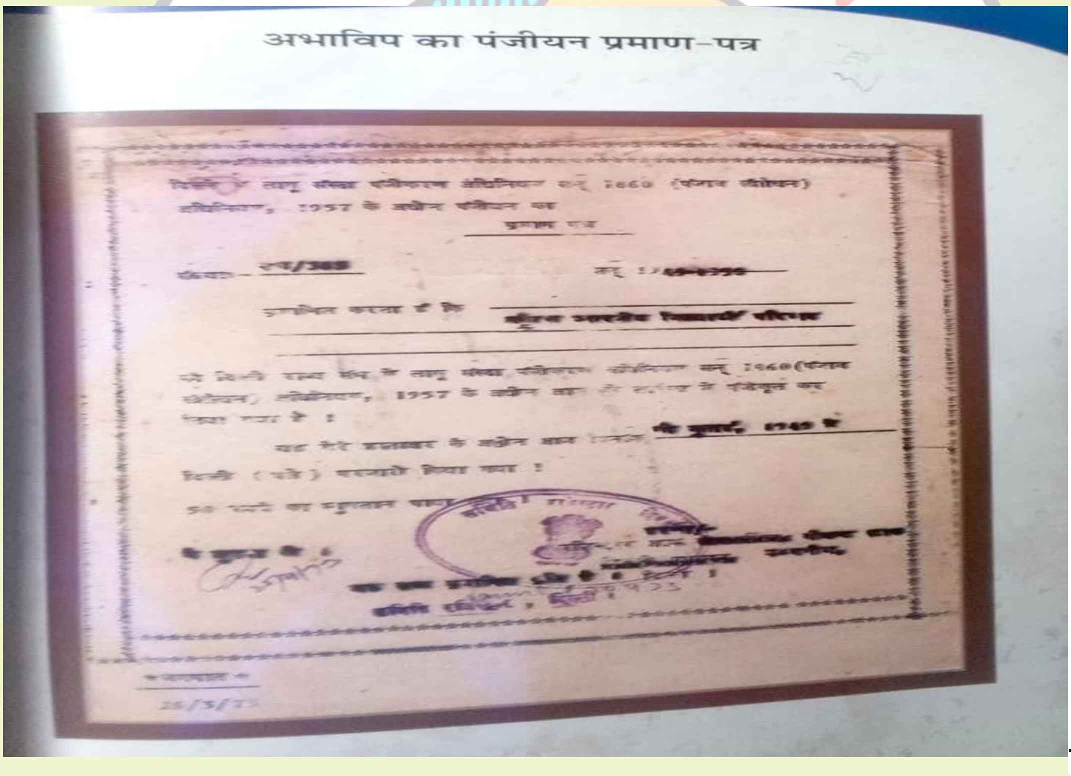
जून 1948 में 'अभाविप' का जन्म हुआ। जुलाई 1948 के 'पाञ्चजन्य' समाचार पत्र ने एक विज्ञप्ति को प्रकाशित करते हुए लिखा—'विभिन्न विद्यार्थी संगठनों की दलबंदी एवं घृणित राजनीति से ऊब कर देश के प्रगतिशील तत्त्वों ने 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद' संगठन बनाने का निश्चय किया है।' इस प्रकार अभाविप का सोसाइटी के रूप में विधिवत् पंजीयन 9 जुलाई, 1949 को हुआ। इसकी प्रथम कार्यसमिति के अध्यक्ष ओम प्रकाश बहल एवं महामंत्री केशव देव वर्मा बनाए गये। इन्हीं दिनों पंजाब और जम्मू में राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित एस.एन.ए. (Students' Nationalist Association) नाम से एक अन्य संगठन भी अस्तित्व में आया था, जिसने आगे चल कर 1952 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में अपना विलय कर लिया। स्पष्ट चिंतन, तदनुरूप गतिविधियाँ, स्थायी कार्यकर्ता समूह एवं अध्यापकों के आधार पर अभाविप भारत में एकमात्र 'संपूर्ण' एवं स्वतंत्र छात्र संगठन बन गया। इसने छात्र - समुदाय की शक्ति को राष्ट्र-निर्माण के कार्य में सार्थक रूप से छात्र संगठन हेतु एक दर्शन 'छात्र, आज का नागरिक' की भी खोज की। परिषद ने अपने अनुभव, संसार भर में हुई छात्र सक्रियताओं तथा छात्र समुदाय की संभावित क्षमताओं के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात् यह दर्शन प्रस्तुत किया, जिसे परिषद ने 'छात्रशक्ति - राष्ट्रशक्ति' के शब्दों में भी व्यक्त किया। इन सभी विशेषताओं के आधार पर भारत के सार्वजनिक जीवन में ' अभाविप' ने सत्तर के दशक के अंत तक स्वयं को एक संपूर्ण, स्वतंत्र एवं स्थायी



छात्र संगठन के रूप में स्थापित कर लिया वस्तुतः गत अनेक दशकों का उसका इतिहास गुणात्मक एवं संख्यात्मक विकास के साथ ही राष्ट्र-निर्माण के कार्य में विविध प्रकार से योगदान का इतिहास हैं।

3.2 संगठन का लक्ष्य

प्रथम दिन से ही संगठन का लक्ष्य स्पष्ट था पुनर्निर्माण। उसे कैसे प्राप्त करना है? उसके संबंध में भी प्रायः स्पष्टता थी, क्योंकि यह निर्माण कार्य था, इसलिएसकारात्मक सोच एवं रचनात्मक प्रयत्नों की आवश्यकता अनुभव की जाती थी, अतः स्थान-स्थान पर रचनात्मक गतिविधियाँ प्रारंभ की गयीं, परंतु सार्वजनिक जीवन में कुछ मुद्दे ऐसे भी आते हैं, जिनके कारण आवाज उठानी पड़ती है अथवा आंदोलन करना पड़ता है। इसलिए अनेक आंदोलनात्मक गतिविधियाँ भी संगठन के द्वारा आरंभ की गयीं। उन दिनों भी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में छात्रसंघ और उनके चुनाव होते थे। अभा-


अभाविप का पंजीयन प्रमाण-पत्र

-विप के कार्यकर्ताओं को लगा कि छात्रसंघों में हमें भी सहभाग करना चाहिए। यहाँ-वहाँ अभाविप के कार्यकर्ताओं ने चुनावों में भाग लिया। छात्रसंघों के माध्यम से अथवा अन्य प्रकार से छात्रों का प्रतिनिधित्व एवं नेतृत्व करना भी अभाविप के कार्य में सम्मिलित हुआ, अतः अभाविप का प्रयत्न कार्य तीन प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से होने लगा रचनात्मक, आंदोलनात्मक एवं प्रतिनिधित्वात्मक। स्थापना के पश्चात् कुछ वर्षों तक अभाविप का विकास धीमी गति से हुआ। सन् 1967 में इसके विकास में तब गति

आई, जब मुंबई के एक महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक यशवंत राव केलकर परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। यद्यपि श्री केलकर एक वर्ष ही अध्यक्ष रहे, परंतु अभाविप रूपी भवन के शिल्पी के रूप में लगभग दो दशकों तक उन्होंने ही परिषद का मार्गदर्शन किया। जहाँ तीन प्रकार की गतिविधियों से संगठन प्रारंभ हुआ, वहीं तीन प्रकार की सैद्धांतिक भूमिका भी अभाविप ने अपनाई। चूँकि राष्ट्र-निर्माण का सकारात्मक कार्य करना था, इसलिए अभाविप ने निश्चयपूर्वक यह सैद्धांतिक भूमिका अंगीकार की कि हमें रचनात्मक कार्य करना है। उसने यह भी सैद्धांतिक भूमिका स्वीकार की कि रचनात्मक कार्य प्रथम पुरुषी मानसिकता से संभव होता है। प्रथम पुरुषी मानसिकता अर्थात् पहले कोई भी उचित व आवश्यक लगने वाला कार्य स्वयं करना, उसके पश्चात् ही दूसरों से वैसा करने की अपेक्षा करना। रचनात्मक कार्य का प्रत्यक्ष गतिविधियों से की गयी।

3.3 ABVP की विचार बैठकें

संगठन नें अपने बीते कालखण्ड के मूल्यांकन, वर्तमान की चुनौतियों, रणनीतियों और रणनीतियों की दृष्टि से आगामी आग्रह के बिंदुओं पर विचार-विमर्श करना आवश्यक समझा जिसका परिणाम था विचार बैठकों का आरंभ। इन विचार बैठकों के निष्कर्ष इस प्रकार हैं

- राजनीति अब अपना संन्दर्भ खो चुकी है, सामाजिक परिवर्तन हेतु शक्ति लगाई जाए। सत्ता में कौन है और उनका व्यवहार क्या है, इसकी चिंता न करें। राजनीतिक हवा से विलग रह कर दूरगामी रचनात्मक कार्य में लगे।
- एक लोकतांत्रिक राजवंश का विकास और राजनीतिक दलों का विनाश समाज में कुंठा उत्पन्न कर रहा है। इससे मुक्ति केवल एक 'पर्याय उपकरण दल' के उभरने से ही मिलेगी। आज राजनीति सब पर हावी है। राजतंत्र के नियंत्रण के बिना सामाजिक व शैक्षणिक परिवर्तन भी असंभव है। अत: एक राजनीतिक पर्याय को लेकर राजनीतिक परिवर्तन के लिए संपूर्ण प्रयास करना होगा। अभाविप का दलगत राजनीति से दूर रहना गलत परिणाम देने वाला है। 'असम आंदोलन' के बाद राजनीतिक परिवर्तन छात्रों ने चुनाव लड़ा और उनकी सरकार बनी।
- राजनीति का स्थान महत्त्वपूर्ण है, राजनीति आवश्यक है, प्रासंगिक है, परंतु दलगत राजनीति में उलझना छात्र संगठन का काम नहीं है। यदि छात्र-संगठन मत्ता- राजनीति में जाए, तो उसकी सामयिकता अथवा विश्वासार्हता व जीवन-निष्ठा समाप्त हो जाएगी।

3.4 ABVP की प्राथमिताएँ

ABVP द्वारा अपने संगठनात्मक आग्रह की तीन प्राथमिकताएं निश्चित की गई हैं-

- रचनात्मक गतिविधियों को बढाना आवश्क है।
- परिसर में हमारा प्रभाव इस स्तर तक होना चाहिए कि हम छात्र-समुदाय के नेतृत्व कर्ता दिखें।
- समाज के सभी स्तरों और हिस्सों से आने वाले छात्रों का अपने संगठन से समावेश होना चाहिए।

3.5 परिषद के आग्रह बिन्दु

शिक्षा-क्षेत्र में शिक्षा-तंत्र के दोष विभिन्न दुर्व्यवहारों के द्वारा गोचर होते रहते हैं। इनसे संघर्ष करना पड़ेगा, एक-एक दोष पर अंगुलि रख कर निर्णायक आंदोलन करना पड़ेगा (केवल भ्रष्टाचार का नाम लेकर हवाई संघर्ष नहीं)। 'नयी शिक्षा नीति' की दूरदृष्टि व क्रियान्वयन के अभाव पर हमें आवाज उठानी है। विचार व व्यवहार, दोनों ही स्तरों पर कार्यक्रम आयोजित करने होंगे। सामाजिक समता व राष्ट्रीय एकात्मता के लिए लोकशिक्षा का व्यापक कार्यक्रम हाथ में लेना पड़ेगा। अपनी भूमिका की किसी भी अनुभूति में अभाविप का यह दायित्व बनता है कि वह देश की प्राणहीन राजनीतिक स्थितियों में चेतना उत्पन्न करने का काम करे। इस देश में 'राजनीतिक ललकार' लोकतंत्र की तात्कालिक आवश्यकता है। राजनीतिक, आर्थिक व शैक्षिक क्षेत्रों की विवादास्पद नीतियों के बारे में सरकार के समक्ष जन के स्तर पर चुनौती देने की भी आवश्यकता है। समाज को, विशेषकर छात्रों को प्रभावित करने वाले विशिष्ट आर्थिक मुद्दे उठाना आवश्यक है; गरीबी, अभाव व बेरोजगारी के विरुद्ध केवल हवाई लड़ाई से काम नहीं चलेगा।

- **राष्ट्रवादी ताकतों को एकजुट करना** इसमें कहा गया कि देश के शत्रुओं से प्रेरणा व शस्त्र प्राप्त करने वाले अलगाववादी तत्व एक पापी गठबंधन में जुटे हैं, यह स्पष्ट है। एक उत्कट व सतत जन अभियान के माध्यम से सभी स्तरों पर, छात्रों में मातृभूमि के प्रति उत्कट भक्ति का आह्वान व उसे देशभक्ति की निर्णायक शक्ति का परिचय देने वाली गतिविधि उत्पन्न करनी पड़ेगी। इस विषय में एक निरंतर अभियान चलाना होगा, विशेष रूप से कश्मीर के विषय में । इतिहास के ठीक ज्ञान के प्रकाश में चलाया गया ऐसा अभियान युवा-मानस में अखंड भारत का सपना जगाएगा।
- **शैक्षिक परिवर्तन का अभियान** इसमें स्पष्ट किया गया कि शैक्षिक परिवर्तन की माँग एक बार फिर उठानी चाहिए। केंद्र व राज्य सरकारों के सामने माँग-पत्र रखना चाहिए, जिसमें अभाविप

का शैक्षिक विचार भी प्रस्तुत हो और शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु अभाविप का उत्तर भी। इसका अनुवर्तन, प्रशिक्षण प्रदर्शन दोनों माध्यमों से करना चाहिए।

- **व्यवस्था परिवर्तन की बहस प्रारंभ करना**

इसे बहुआयामी बताया गया, जिसमें 'राजनीतिक संवैधानिक', 'आर्थिक हमारा विकास ढाँचा', 'सामाजिक- सांस्कृतिक' तथा 'शिक्षा व शिक्षातंत्र नौकरशाही से नियंत्रित' जैसे कूल पाँच आयामों में विचारपूर्वक प्रस्तुत किया गया और निष्कर्ष स्वरूप कहा गया-व्यवस्था-परिवर्तन का यह अभियान एक निरंतर बौद्धिक गतिविधि की अपेक्षा करता है। यह समय की माँग है, क्योंकि समाज - संगठन का भारतीय विचार पर आधारित ढाँचा दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। इतिहास हमें बताता है कि हर महान् क्रांति के पूर्व-काल में प्रचंड वैचारिक आँधियाँ चली हैं। इस मात्रा में देखें तो आनेवाला दशक एक पुनर्विलोकन व परिवर्तन का दशक है। दुनिया भर की धर्म-विचार की आकांक्षा का नेतृत्व छात्र करेगा, ऐसा लगता है। बुद्धिजीवियों की आंदोलनपरता राष्ट्रीय समाज में व्यवस्था परिवर्तन लाएगी। विश्व की व्यवस्था भी बदलेगी। संभव है, इस प्रयास का कठोर हिंसक विरोध हो, परंतु छात्रों की आंदोलनपरता का विस्फोट समाज की सद्विवेक बुद्धि का प्रतिनिधित्व करेगा और अंततः विजयी होगा। कालचक्र का घूमना अटल है, आज-कल या शायद परसों।

3.6 परिषद का दायित्व

1. विचार की स्पष्टता व कार्य की प्रेरणाएं

• भारत की वास्तविक पहचान

• हिंदुत्व का आधुनिक संदर्भ

• भविष्य के भारत की कल्पना

जैसे विषयों पर व्यापक अध्ययन एवं प्रबोधन की आवश्यकता।

2. सामाजिक संवेदना जाग्रत करने वाले उपक्रम-

• सामाजिक एवं विभिन्न प्रकार की सेवाएँ करने के लिए छात्रों को और संस्थाओं के सहयोग से अवसर प्रदान करना।

• विकासात्मक गतिविधियाँ (SFD), जैसे पर्यावरण, जल, ऊर्जा आदि पर छात्रों का व्यापक अभियान • कार्यकर्ताओं के लिए श्रमानुभव शिविरों जैसे उपक्रम का आयोजन।

• सामाजिक समरसता, महिलाओं की समस्याओं एवं आरक्षण जैसे विधिक व सामाजिक मुद्दों पर जागरण एवं पहल करना।

ऐसे विषयों पर सामाजिक आंदोलनों की भी संभावनाएँ हैं।

3. **शिक्षा के भारतीयकरण के अभियान को अधिक व्यापक बनाना,**

पाठ्यक्रम के साथ-साथ सभी प्रकार से परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना। शिक्षा के व्यापारीकरण के विरोध में संघर्ष को देशव्यापी एवं निर्णायक स्वरूप देना एवं समाधान हेतु व्यापक सहभाग से बहस को आगे बढ़ाना।

4. **छात्रसंघ चुनाव**

छात्रसंघ चुनाव के माध्यम से छात्रों की सहभागिता एवं संघर्षशील आंदोलनों से समाज के लिए सभी क्षेत्रों में युवा नेतृत्व खड़ा करना एवं से विकसित करना।

5. **देश की सुरक्षा के समक्ष चुनौतियाँ**

जैसे-

• नक्सलवाद का भयंकर स्वरूप

• आतंकवाद का फैलता जाल

• चीन की विस्तारवादी मानसिकता

• बांग्लादेशी घुसपैठ

आदि मुद्दों पर सरकारों की स्वार्थपरक ढीली-ढाली एवं समझौतावादी नीतियों को देखते हुए ऐसे मुद्दों पर सजगता से बढ़ाने और दबाव बनाने हेतु आंदोलन-

(अ) देश की एकात्मता को बढ़ावा देने वाली गतिविधियाँ ।

(ब) सामाजिक दंड-शक्ति के रूप में भ्रष्टाचार, विषमता आदि विषयों पर आंदोलन।

(स) छात्र जीवन में मूल्यों एवं देश-समाज के लिए कुछ करने की ललक जाग्रत करने हेतु सघन प्रयास।

3.7 परिषद की रणनीति

छात्रों में व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर आदर्शवाद स्थापित होने हेतु सघन प्रयास-

1. सार्वजनिक जीवन का अनुशासन, महिलाओं के प्रति सम्मान, कुरीतियों से लड़ाई, अप्रामाणिकता एवं भ्रष्टाचार का विरोध पर्यावरण के प्रति सजगता एवं व्यक्तिगत सादगी, समरसता का भाव तथा पीडितों एवं गरीबों के प्रति।

2. ऐसे आदर्शों हेतु संघर्ष की मानसिकता आत्मीयता तैयार हो। सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों का सही आकलन करते हुए विकास की यात्रा में सभी का न्यायपूर्ण सहभाग बने, इस हेतु सजगता की भूमिका।

3. सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु संघर्ष।

4. भारतीय शिक्षा को आधुनिक संदर्भ में अपनी अवधारणाओं पर पुनर्गठित करने हेतु देशव्यापी बहस।

5. महाशक्ति एवं महान् भारत' छात्रों का सपना बने,

• भारत की वास्तविक पहचान एवं भविष्य की कल्पना हेतु जागरण एकता एवं एकात्मता के लिए अभियान देश विरोधी ताकतों का पर्दाफाश एवं उनसे संघर्ष, जैसे- शहरी नक्सलवाद, धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अल्पसंख्यक तुष्टीकरण एवं आतंकवाद या अलगाववाद का छद्म समर्थन।

6. बौद्धिक तथा वैचारिक स्तर पर व्यापक बहस एवं जागरण-

• महिलाओं के प्रति अवधारणा,

• गरीबों एवं पिछड़ों के लिए न्याय का उचित मार्ग (नक्सली हिंसा नहीं है)

धर्मनिरपेक्षता एवं मूल पहचान व संस्कृति का स्थान,

• लव जिहाद, बीफ फेस्टिवल या महिषासुर उत्सव जैसे विषयों को वैचारिक स्तर पर निरस्त करना।

विकास की गति, स्वरूप तथा महत्त्वपूर्ण मुद्दे-

गरीबों का अधिकार, भारतीय अवधारणा, रोजगार, पर्यावरण, सुविधा, भारत की क्षमता, भारतीय नस्ल, बीज का संरक्षण आदि।

7. शिक्षा

नयी शिक्षा नीति, अवधारणा, पुनर्रचना, भारतीय ज्ञान एवं इतिहास का समावेश जैसे मुददों पर व्यापक पहल आवश्यक। वर्तमान समय में सभी आधुनिक संपर्क साधनों का उपयोग करते हुए सारे शैक्षिक परिसरों तथा सभी प्रकार के छात्रों में पहुँच की आक्रामक व ठोस योजना जरूरी है। समय की माँग है कि अपना कार्य सर्वग्राह्य, सर्वस्य सर्वव्यापी बने, जो भारत की सर्वांगीण उन्नति में मुख्य भूमिका निभाए। इस हेतु जो क्षेत्र कमजोर हैं, उन्हें पदाक्रांत करने की रणनीति बने- (जैसे- नाट्य, कला आदि विभिन्न क्षेत्रों हेतु अखिल भारतीय योजना व कार्यक्रम बने।

• विभिन्न प्रकार के संगठन, छात्रों के समूह आदि को जोड़ कर काम करने की रणनीति बने। व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सरकार से मुद्दों पर संघर्ष एवं समन्वय की साझा रणनीति बने ।

8. सरकारी शिक्षा संस्थाओं का बचाव एवं सुधार, नशामुक्ति, पर्यावरणयुक्त स्वच्छ भारत अभियान।

3.8 ABVP की विशिष्टताएँ

3.8.1 अध्यापक सहभागिता

अभाविप के संचालन में अध्यापक भी सक्रिय थे। विद्यार्थी एवं अध्यापक दोनों ही शैक्षिक परिवार का अंग होते हैं। अभाविप ने माना कि इस परिवार का एक और अंग होते हैं - शिक्षाविद्। शिक्षाविद् वे होते हैं, जो शिक्षा की विषय-वस्तु का निर्णय करते हैं एवं शिक्षा व्यवस्थाओं के प्रमुख संचालक होते हैं। अभाविप ने तीनो अंगो को एक ही परिवार का सदस्य माना तथा यह प्रतिपादित किया कि उचित शिक्षा- व्यवस्था हेतु तीनों का सामंजस्य आवश्यक है। अभाविप की स्थापना के प्रथम दिन से ही एक विषय तय हुआ, वह था संगठन में अध्यापकों की भूमिका। विद्यार्थी और अध्यापक की पूरकता तो एक सर्वविदित तथ्य था ही, परंतु विद्यार्थी संगठन की स्थापना में अध्यापकों ने सक्रिय भूमिका निभायी और उसके पदाधिकारियों के रूप में उसके कार्यकर्ता भी बने। इसलिए अभाविप अध्यापकों की सक्रिय सहभागिता के आधार पर स्थापित होने वाला एक विशिष्ट छात्र संगठन बना। कालक्रम में अध्यापकों की सहभागिता के परिणामस्वरूप ही अभाविप की एक विशेषता स्थापित हुई और वह थी अभाविप का एक सतत उदीयमान स्थायी संगठन वाला रूप। विद्यार्थियों की

प्रवहमानता, विशेषकर महाविद्यालयीन विद्यार्थी की अति प्रवहमानता, एक ऐसा तथ्य था, जिससे अभाविप का सामना हुआ। अधिकांश महाविद्यालयीन विद्यार्थी स्नातकीय शिक्षण प्राप्त करते थे और

उनका विद्यार्थी काल प्रायः तीन-चार वर्षों का होता था। ऐसे विद्यार्थी वर्ग में प्रतिवर्ष एक-तिहाई अथवा चौथाई नये विद्यार्थी जुड़ते थे तो इतने ही उससे बाहर भी हो जाते थे। अध्यापकों के रूप में अभाविप को स्थायी एवं परिपक्व कार्यकर्ता प्राप्त होते रहे, जिनके कारण अभाविप में स्थायी संगठन वाले अनेक तत्त्व स्थापित होते गये; यथा- वह एक संपूर्ण, स्वायत्त एवं स्वतंत्र छात्र संगठन के रूप में भारत के सार्वजनिक जीवन में उदित हुआ।

3.8.2 सामूहिकता

विचार-विमर्श में सहभागिता, निर्णय प्रक्रिया में सामूहिकता व पारदर्शिता, अनेक कार्यकर्ताओं में कार्य एवं दायित्व का विभाजन, प्रत्येक कार्यकर्ता को कार्य व प्रत्येक कार्य के लिए कार्यकतां की योजना, निर्णय की जिम्मेदारी सामूहिक, क्रियान्वयन में सबका सहभाग, यश का श्रेय सबको, न्यूनताओं की जिम्मेदारी भी सबकी यह अभाविप की सामूहिकता की कार्य-प्रक्रिया है। समीक्षा निरपेक्ष भाव से एवं अनुवर्तन में सबका सहभाग व दायित्व, कार्य में नये लोगों को जोड़ कर विस्तारित होते: इसी विशिष्ट पद्धति का परिणाम है- 'टीम' एवं टीम भाव का निरंतर विस्तार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की कार्य-पद्धति के मूल तत्त्व हैं- सामूहिकता-पारस्परिकता-अनामिकता- अनौपचारिकता और इनके आधार पर विकसित 'टीम'। मानव एक बौद्धिक प्राणी है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी समझ होती है। सामूहिक निर्णय प्रक्रिया के कारण यह सूत्र वाक्य सृजित हुआ कि 'सभी कार्यकर्ता महत्त्वपूर्ण हैं, किंतु अपरिहार्य कोई नहीं।' संगठन में प्रत्येक कार्यकर्ता 'मैं' की जगह 'हम' और 'मैंने' की जगह 'हमने' के भाव से अपना सक्रिय योगदान करता है, जिससे, 'अनामिकता' संगठन सूत्र का एक महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक हिस्सा बना और संगठन में मानव-व्यवहार का एक उदात्त पक्ष विकसित हुआ। मत भिन्नताओं के बावजूद कार्यकर्ताओं में 'हम-भावना' सुरक्षित रहती है। इस 'हम भावना' के पीछे का सूत्र है—' आंतरिक स्नेह-आंतरिक सुधार'; अर्थात् विचारों में भिन्नता होते हुए भी आंतरिक स्नेह सुदृढ़ रहता है, यही भाव अभाविप के संगठन-तंत्र में 'परिवार-भाव' को सृजित करता है। इसी प्रक्रिया में से अभाविप में 'टीम' जैसी अद्भुत परिकल्पना साकार हुई।

3.8.3 टीम

वस्तुतः 'टीम' शब्द का प्रयोग खिलाड़ियों की 'टीम' से लिया गया और भाव भी वही था कि खेल के मैदान में जिस प्रकार सामूहिक भाव से खिलाडी खेलते हैं और हार जीत का श्रेय पूरी टीम को मिलता है किसी एक खिलाडी को नही। वस्तुतः आंतरिक स्नेह और पारिवारिक भाव के संबंधों की डोर से बँधे कार्यकर्ताओं का वह समूह, जो अनामिकता के भाव से संगठन के किसी पद पर रहे या न रहे, संगठन के सभी पक्षों पर सदैव चिंतन-मनन करने की स्थिति तक पहुँचता था, टीम कहा जाने लगा। इस प्रकार किसी छात्र संगठन में टीम की परिकल्पना अद्भुत और अनोखी थी। अभाविप में यह परिकल्पना साकार हुई और पर्दे के पीछे रह कर 'टीम' में कार्य करने वाले कार्यकर्ता अपनी इसी शास्त्र शुद्ध कार्य-पद्धति से निकलते रहे हैं।



3.8.4 कार्यकारी परिषद

अभाविप ने प्रांत, विभाग और जिला केंद्रों पर 'टीम' बनने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया और इसमें सफलता भी मिली। 'टीम' अभाविप के संगठनात्मक तंत्र का एक प्रमुख अनौपचारिक हिस्सा है। पर वहाँ भी अध्यक्ष- मंत्री चुने जाते हैं। प्रदेश अध्यक्ष अपनी कार्यकारी परिषद घोषणा प्रदेश अधिवेशन में ही करता है। नगर एवं कॉलेज की कार्यकारी परिषद गठन हेतु अध्यक्ष- मंत्री का चुनाव सदस्य सम्मेलन आयोजित कर किया अभाविप संगठन-तंत्र में सामूहिकता- पारस्परिकता- अनामिकता और अनौपचारिक के साथ अनुभवी कार्यकर्ताओं की टीम द्वारा सृजित शास्त्र-शुद्ध कार्य पद्धति की देन है कि अभाविप के अब तक के इतिहास में सभी प्रकार के चुनाव सर्वसम्मति से संपन्न हुए हैं। अध्यक्ष महामंत्री/मंत्री के पद पर एक से अधिक नाम आने की स्थित अधिकारी द्वारा सबको सूचित किया जाता है। इस स्थिति में सामान्यतः परंपरा रही है कि सभी परस्पर चर्चा से किसी एक नाम पर सहमति बना कर शेष सभी अपना नाम वापस लेने की सूचना चुनाव अधिकारी को देते हैं। इस प्रकार सर्वसम्मति से अध्यक्ष-महामंत्री/मंत्री का चुनाव संपन्न होता आ

रहा है। वर्ष 2025-26 के लिए नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रो. रघुराजकिशोर तिवारी व महामंत्री डॉ. वीरेन्द्र सिंह सोलंकी पुनर्निवाचित किए गए हैं।

3.8.5 सदस्यता

कार्यकारी परिषद के गठन के पूर्व देश भर में एक वर्ष के लिए पाँच रुपये सदस्यता शुल्क लेकर छात्र - छात्राओं और सौ रुपए सदस्यता शुल्क लेकर शिक्षकों को सहयोगी सदस्य बनाया जाता है। सामान्यतः जुलाई से सितंबर माह में सदस्यता अभियान के तहत बनाए गये सदस्यों का सम्मेलन कर नगर कार्यकारी परिषद का गठन किया जाता है; तत्पश्चात् नगर इकाइयों द्वारा भेजे गये प्रस्तावों पर प्रदेश अधिवेशन में प्रदेश अध्यक्ष एवं मंत्री का चुनाव होता है और तब राष्ट्रीय परिषद द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष- महामंत्री का चुनाव संपन्न कर राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद के गठन का कार्य पूरा किया जाता है। सदस्यों द्वारा चुनी हुई कार्यकारी परिषद एक इकाई के रूप में अगले चुनाव (सामान्यतः एक वर्ष) तक कार्य करती है। नियमित संगठनात्मक गतिविधियों को चलाने वाली कार्यकारी परिषद एक सक्षम इकाई का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार, अभाविप के संगठनात्मक विस्तार एवं विकास क्रम के साथ-साथ इकाई,एवं संपर्क स्थान तथा विस्तार केंद्र की अवधारणा उत्पन्न हुई।

3.8.6 निर्णय प्रक्रिया

प्रत्येक विषय पर सोचने एवं समझने की व्यक्तिगत प्रवृत्ति एवं क्षमता के कारण मत वैभिन्य समूह चिंतन का स्वाभाविक आधार है। संगठनात्मक कार्य पद्धति में इस बात को समझा और स्वीकार किया जाता है कि घोर मनभेद नहीं' और 'सब चलेंगे साथ चलते' के साथ सामूहिक एवं पारदर्शिता पर आधारित कार्य पद्धति का विकास होता है। यह स्वीकार किया गया कि किसी निर्णय पर असहमति के बावजूद सामूहिकता हेतु साथ चलेंगे और यदि उक्त निर्णय अथवा तय दिशा गलत हुई, तो पुनः एक साथ वापस आकर नयी दिशा में, नये निर्णयानुसार आगे बढ़ सकेंगे, जब कभी मत वैभिन्य और निर्णय न हो पाने की स्थिति में विषय को कुछ समय के लिए छोड़ दिया जाता है, जिसे लेकर अभाविप में एक मुहावरा प्रचलित हुआ— 'मुरने देना'। परिणामत: बात बात में संगठन-तंत्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा और अनुभव आधारित संगठनात्मक ताना-बाना मजबूत होता रहेगा। इससे सामूहिकता और पारस्परिकता का भाव सृजित होता है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की कार्य-पद्धति में 'विचार-विमर्श के अनेक मंच' की परिकल्पना को साकार रूप दिया गया। पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं, शिक्षक कार्यकर्ताओं एवं अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के बीच विचार-

विमर्श का एक सांगठनिक यंत्र 'टीम' है, तथापि अंतिम रूप से निर्णय कार्यकारी परिषद ही लेती है। निर्णय की प्रक्रिया में 'मत अनेक निर्णय एक' का मंत्र स्वीकार किया जाता है। निर्णय के पूर्व विभिन्न मतों पर विचार-विमर्श के बाद अंततः निर्णय सर्वमान्य होता है। यदि किसी विषय पर निर्णय होने की स्थिति नहीं बन पाती, तो कुछ समय के लिए उक्त विषय सबके सोचने-समझने के लिए छोड़ दिया जाता है और आपस में उस विषय पर बातचीत जारी रखते हैं। इससे ही अभाविप में 'मुरने दो' का मुहावरा प्रचालित हुआ।

3.8.7 पूर्व योजना-पूर्ण योजना

अभाविप कार्य-पद्धति की एक मुख्य विशेषता संगठनात्मक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के संदर्भ में 'पूर्व योजना पूर्ण योजना' की नीति है। टीम एवं कार्यकारी परिषद की बैठकों में संगठनात्मक योजना एवं कार्यक्रमों के सभी पक्षों पर दहनरा एवं सूक्ष्मता के साथ विचार विमर्श कर पूरी योजना को अंतिम रूप दिया जाता है। 'पूर्व योजना पूर्ण योजना' आधारित बैठकों के कारण व्यवस्थित संगठन तंत्र का विकास एवं अपने ढंग के अनूठे कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संपादन इस छात्र-संगठन की विशेषता बनी।

3.8.8 बैठक

अभाविप में 'बैठक' कार्य-पद्धति का प्रमुख हिस्सा है। बैठक भी सामूहिकता- पारस्परिकता एवं आंतरिक स्नेह का मूर्त रूप है। विविध प्रकार की बैठके संगठनात्मक निर्णय प्रक्रिया में सहयोगी होने के साथ ही कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक होती हैं। महाविद्यालय की औपचारिक व्यवस्था के अंतर्गत कार्यकारी परिषद की बैठकों से लेकर राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद की बैठकों तक समूहगत निर्णय के स्थान हैं, जबकि विचार-विमर्श हेतु अनौपचारिक व्यवस्थांतर्गत, यथा- टीम की बैठकें, प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठकें, कार्यक्रम हेतु विभिन्न समितियों की बैठकें इत्यादि समूहगत निर्णय का मंच होती हैं। बैठक में समय पालन से प्रारंभ होकर समय के प्रति कार्यकर्ताओं की प्रतिबद्धता कार्यक्रमों एवं निजी जीवन में भी दिखाई देती है। एक साथ बैठकर विचार-विमर्श कर विविध मत के बावजूद एक मत से निर्णय होने की स्वस्थ परंपरा का विकास इन्हीं विविध प्रकार की बैठकों की देन है। सामान्यतः कार्यकारी परिषद की बैठकें तय रहती हैं और नियमित होती हैं। नगर कार्यकारी परिषद की साप्ताहिक बैठक का आग्रह रहता है, जबकि प्रांतीय एवं राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद की बैठक एक वर्ष में कम-से-कम तीन बार की जाती है। केंद्रीय टीम की बैठक लगभग दो माह पर होती है। इसी प्रकार सभी प्रांतों की टीम बैठकें भी प्रांत के योजनानुसार की जाती हैं। बैठकों का संचालन भी पूर्व निर्धारित व सुनिश्चित ढंग से किया जाता है। बैठक

प्रारंभ होने से पूर्व बैठक स्थल की सुव्यवस्था एवं वातावरण का पूरा ध्यान रखा जाता है। बैठक कौन चलाएगा, यह तय रहता है। बैठक में चर्चा के बिंदु पहले भी और बैठक शुरू होते समय भी तय किए जाते हैं। एक प्रकार से सर्वाधिक जोर नियमित बैठकों पर होता है। बैठकें निर्णय करने का स्वाभाविक मंच होती हैं। कार्य की दृष्टि से शैक्षिक परिसर नगर, जिला, विभाग, प्रांत, क्षेत्र और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित बैठकें अभाविप की कार्य-पद्धति का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं।

3.8.9 प्रवास

योजना बना कर पूर्व सूचना के आधार पर चलने वाला प्रवास संगठनात्मक विस्तार में सहायक हुआ, फिर अखिल भारतीय स्तर से लेकर जनपद स्तर तक प्रवासी कार्यकर्ताओं की श्रृंखला खड़ी हुई और प्रवास अभाविप की कार्य-पद्धति का अंग बन गया। योजनानुसार संगठनात्मक प्रवास, कार्यक्रमात्मक प्रवास, विषयगत प्रवास इस बात के सूचक हैं कि संगठन ने प्रवास की एक आचार संहिता विकसित की। प्रवासी कार्यकर्ता का कार्यालय पर अथवा किसी कार्यकर्ता के घर रुकना, कार्यकर्ताओं के यहाँ जलपान - भोजन, कार्यकर्ताओं के साथ अनौपचारिक बातचीत, कार्यकर्ता-परिवार के लोगों के साथ अनौपचारिक बातचीत आदि इस आचार-संहिता के मूल तत्त्व हैं।

3.8.10 कार्यकर्ता

अभाविप में मन के संस्कार की महत्ता को समझते हुए गुण-विकास को व्यक्ति-परिवर्तन का आधार बनाया गया है। अपने वैचारिक अधिष्ठान को जितना महत्त्व प्राप्त है उतना ही महत्त्व कार्यकर्ता का भी माना जाता है, क्योंकि कार्यकर्ता ही संगठन का प्रतिरूप है। उसके व्यवहार और उसके विचार के आधार पर ही समाज में संगठन की छवि बनती है। अतः अभाविप ने कार्यकर्ता-विकास हेतु संगठनात्मक कार्यक्रमों के रूप में एक ऐसा तंत्र विकसित किया है, जिसकी छोटी-बड़ी अनेक प्रक्रियाओं तथा अनेक प्रकार के औपचारिक-अनौपचारिक प्रशिक्षणों से गुजरकर कार्यकर्ता तैयार होता है। बैठक, स्वाध्याय मंडल, अभ्यास वर्ग, अधिवेशन एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के बारे में विचार करते समय कार्यकर्ता- विकास पर भी विशेष ध्यान रहता है। इनमें अभाविप की रीति-नीति, आचार-विचार से सीखते हुए वह मानवीय संवेदनाओं, उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन के प्रति जवाबदेह राष्ट्रभक्त नागरिक बनने की प्रक्रिया का हिस्सा हो जाता है।

कार्यकर्ता अभाविप द्वारा निर्धारित अपने संगठनात्मक स्वरूप एवं कार्यक्रमों में अनुशासनपूर्ण जीवन-दृष्टि का अनौपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है। समूहगत व्यवहारों से बहुत कुछ सीखता एवं आत्मसात् करता हुआ वह सजग, जागरूक, सामाजिक संवेदनायुक्त, राष्ट्रप्रेमी एवं समग्र जीवन-दृष्टि से परिपूर्ण नागरिक बनता है। आज के संदर्भ में अभाविप को सामाजिक कार्यकर्ता-निर्माण का एक अनौपचारिक विश्वविद्यालय कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। एक अर्थ में अभाविप वह प्रयोग भूमि है, जहाँ आकर छात्र छात्राएँ कार्यक्रमों में सहभागी होकर परिश्रम एवं स्वविवेक का उपयोग करते हुए स्वाभाविक प्रक्रिया के तहत अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं।

3.8.11 अभ्यास वर्ग

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अपने कार्यकर्ताओं के वैचारिक प्रबोधन एवं कार्य-पद्धति के अनुरूप उन्हें ढालने हेतु प्रशिक्षण वर्गों का नियमित आयोजन करती है। इस प्रशिक्षण वर्ग को अभाविप संगठन में 'अभ्यास वर्ग' कहा जाता है। वस्तुतः इन अभ्यास वर्गों के माध्यम से अभाविप में प्रशिक्षण तंत्र विकसित हुआ और पूरे देश में अभाविप के उद्देश्यों और उसकी विचारधारा से जुड़े कार्यकर्ताओं के निर्माण का भी आधार बना। देश में राष्ट्रीय स्तर पर, प्रान्तीय स्तर पर, जनपद स्तर पर इकाई स्तर पर अभ्यास वर्गो का आयोजन होता है सैद्धांतिक भूमिका, कार्य-पद्धति, संगठनात्मक स्थिति और कार्य-विस्तार, कार्यकर्ता-विकास, एक सक्षम इकाई (कार्यकर्ता, कार्यकारिणी, कार्यक्रम, कार्यालय, कोष) जैसे विषय (व्यावहारिक, सैद्धांतिक और वैचारिक) सभी अभ्यास वर्गों में चर्चा के बिंदु रहते हैं।



3.8.12 अधिवेशन

अभाविप के स्थापना काल से राष्ट्रीय अधिवेशन प्रारंभ हो गया था, किंतु 1959 से प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन नियमित रूप से होने लगे और राष्ट्रीय अधिवेशन अभाविप की कार्यप्रणाली अथवा संगठन तंत्र का एक अनिवार्य हिस्सा हो गया। यह अधिवेशन अभाविप संगठन के लोकतांत्रिक स्वरूप, संगठनात्मक स्वरूप एवं सक्रियता का साक्षी बनता है। अभाविप के देश भर के कार्यकर्ता प्रति वर्ष एक स्थान पर जुटकर तीन दिनों तक विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श करते हुए गत एक वर्ष के कार्यों की समीक्षा एवं अगले एक वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा पर अपनी सहमति प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय व प्रांतीय स्तर के अधिवेशन प्रतिवर्ष अक्टूबर से दिसंबर तक संपन्न हो जाते हैं।

3.8.12 जनसंम्पर्क

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में कार्यकर्ताओं व विद्यार्थियों में संम्पर्क रखने की योजना उसकी कार्य-पद्धति का ही सहज अंग है। क्रमश: अनुभव के अनुरूप इसे और अधिक सुनियोजित, व्यापक एवं सतत बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जनसंपर्क की विशेष योजना आरंभ की गयी। मुम्बई ने अभाविप के शुभचिंतकों के साथ ही आर्थिक सहयोगियों से भी निरंतर संपर्क बनाए रखने के व्यवस्था सर्वप्रथम प्रारंभ हुई। विद्यार्थी परिषद के विभिन्न आयोजनों में आने क अतिथियों शैक्षिक कार्यक्रमों में आने वाले शिक्षाविदों, संपादकों, पत्रकार शैक्षिक प्रशासकों, प्रमुख राजनेताओं गण्यमान्य नागरिकों, कलाकारों, साहित्यकारों इत्यादि से निरंतर संपर्क, संवाद के माध्यम से उन्हें अपनी गतिविधियों, नवीन प्रयोगों प्रति व विकास के संबंध में अद्यतन रखने की योजना चलाई जाती है। अभाविप को इसक लाभ भी मिलता है और छात्रशक्ति राष्ट्रशक्ति है. इसे देश समाज के प्रभावी लोग में स्थापित करने में भी सफलता प्राप्त हुई है। अभाविप के प्रयासों के अनुरूप ही लोग विद्यार्थियों की रचनात्मक, सकारात्मक शक्ति व राष्ट्रीय हित के संदर्भ में उसकी भूमिका को प्रभावी माध्यम मानने लगे हैं, अतः एक सशक्त छात्र संगठन व आंदोलन को समाज से नैतिक, बौद्धिक एवं व्यवस्थात्मक सहयोग और प्रोत्साहन भी मिलता है।

3.8.13 जनसंचार

- **राष्ट्रीय छात्रशक्ति पत्रिका**

शैक्षिक पुनर्रचना के उदात्त लक्ष्य से प्रेरित शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका है राष्ट्रीय छात्रशक्ति। शिक्षा जगत में होने वाली हर गतिविधि और हलचल पर इसकी नजर रहती है। राष्ट्रीय

छात्रशक्ति पत्रिका का प्रकाशन 1978 में परिषद द्वारा प्रारंभ किया गया अपने स्थापना काल से ही यह पत्रिका परिसरों की समस्याओं को उठाने, विश्वविद्यालयों में चल रही रचनात्मक गतिविधियों को समाज के सामने लाने, शिक्षा संबंधी नीतियों के निर्माण के समय शिक्षा जगत् के विभिन्न घटकों का पक्ष संबंधित मंचों तक पहुँचाने, नयी शिक्षा नीति सहित अनेक नीतिगत निर्णयों से विद्यार्थियों को अवगत कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। शिक्षा से जुड़े अनेक मुद्दों पर इस पत्रिका ने शिक्षकों व विद्यार्थियों को अद्यतन रखने तथा परिसरों को स्पंदनयुक्त बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की है। समय के साथ पत्रिका का भी विस्तार हुआ है वर्ष 2017 से राष्ट्रीय छात्र शक्ति पत्रिका का प्रकाशन अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों भाषाओं मे शुरु किया गया, बदलते तकनीक और डिजिटलीकरण के दौर में राष्ट्रीय छात्रशक्ति पत्रिका अब डिजिटल मंच पर भी उपलब्ध है, संपूर्ण देश में राष्ट्रीय छात्रशक्ति के पाठक हैं। सुदूर लद्दाख, उत्तर पूर्व के राज्यों, अंडमान तथा गोवा, दमन तक यह पत्रिका पहुँचती है। इस अर्थ में यह राष्ट्रीय एकता एवं एकात्मता के प्रसार में योगदान कर रही है। छात्रशक्ति का डिजिटलीकरण होने के बाद यह देश-विदेश के किसी भी कोने में बैठे पाठकों के लिए सुलभ है।

- **रक्तरंजित बिहार पत्रिका**

अभाविप द्वारा 1999 में 'रक्तरंजित बिहार' नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की गयी, जिसमें परिषद द्वारा जहानाबाद सहित संपूर्ण बिहार प्रदेश में जारी हिंसा के विरोध में 'हिंसा विरोधी मार्च' का विस्तृत विवरण दिया गया था।

- **सोशल मीडिया**

अभाविप देश का एकमात्र ऐसा छात्र संगठन है, जिसने वर्तमान छात्रों की आवश्यकताओं को समझते हुए स्वयं का स्वतंत्र एप शुरू किया। इतना ही नहीं है कार्यकर्ताओं के विकास हेतु ई-गतिविधि का पूरा उपयोग किया जा रहा है। यह आर सामाजिक संचार माध्यमों के सभी प्रकार के मंचों में सक्रिय है। ई-ए.बी.बी.पी. की शुरुआत 1998 में हुई। विद्यार्थी परिषद सोशल मीडिया द्वारा छात्रों तक अपना मत पहुँचाने में सफल रही है। छात्रों युवाओं से जुड़ का राष्ट्रीय, शैक्षिक, सामाजिक इत्यादि मुद्दे भी उठा रहे हैं। अभाविप छात्रों के लिए वेबसाइट के माध्यम से सहज उपलब्ध है। इस प्रकार वर्चुअल माध्यम से परिषद ने लाखों युवाओं तक अपनी पहुँच बनाई है। सोशल मीडिया के माध्यम से अब तक शैक्षणिक जानकारी, छात्रों की आवाज को मंच देना, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, प्रश्नोत्तरी,

फोटोग्राफी. वीडियो. पोस्टर-नारे, निबंध लेखन आदि चलाया जा रहा है। प्रवेश, परीक्षा, आपदाओं, महामारी में अभाविप की हेल्पलाइन भी चलाते आ रहे हैं। वर्ष 2015 से राष्ट्रीय अधिवेशनों का लाइव प्रसारण भी हो रहा है।

3.9 ABVP के मूलभूत सिद्धान्त

3.9.1 राष्ट्र की अवधारणा

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का लक्ष्य लेकर कार्य करने वाले अभाविप के समक्ष 'राष्ट्र' की अवधारणा का चित्र स्पष्ट करना प्रमुख चुनौती थी। तत्कालीन विश्व में राष्ट्र, राज्य, देश और सभ्यता पर दुनिया के विद्वानों-चिंतकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच अनेक मतभेद थे। पश्चिमी अवधारणा पश्चिमी देशों के अनुसार विकसित हुई थी और भारतीय मनीषियों की विकसित अवधारणा से उनका कोई मेल नहीं था। स्वाधीन भारत का राजनीतिक नेतृत्व भी राष्ट्र, राज्य, देश, संस्कृति, सभ्यता, धर्म आदि शब्दों की पश्चिमी अवधारणा से भ्रमित हुआ। तत्कालीन राष्ट्रीय विचारधारा के लोगों ने इस खतरे को महसूस किया। 'अभाविप' का जन्म भी इसी परिवेश में हुआ। अतः अभाविप ने राष्ट्र, राज्य, देश, संस्कृति, सभ्यता और धर्म की कोई नयी परिभाषा नहीं प्रस्तुत की; अपितु वैभवशाली राष्ट्र के रूप में भारत को दुनिया के क्षितिज पर पुनः प्रतिष्ठित करना अपना लक्ष्य बनाया। विद्यार्थी परिषद ने सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा पर आधारित भारत राष्ट्र का स्वरूप देश की युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करने के साथ ही अपनी विचारधारा का स्पष्ट चित्र रेखांकित करते हुए छात्र-छात्राओं के बीच अपने संगठनात्मक ढाँचे का विस्तार किया। वस्तुतः राष्ट्र, नदियों, पहाड़ों, मैदानों और कंकड़ों आदि के ढेर से नहीं बनता, अर्थात् यह भौतिक इकाई मात्र नहीं है; इसके लिए उस राष्ट्र में रहने वाले समाज के अंत:करण में वहाँ की भूमि के प्रति श्रद्धा की अनुभूति आवश्यक है। हमारे राष्ट्र का इतिहास ऋषि-मुनियों की संरचना, तपश्चर्या एवं त्यागमय जीवन और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के पुरुषार्थ-चतुष्टय पर आधारित एक संपूर्ण जीवन-दृष्टि का इतिहास है। ज्ञान और विज्ञान, योग और उपभोग, लौकिक और पारलौकिक जीवन में समन्वय की जीवन-दृष्टि हमारी विशिष्टता है। हमारी भाषाएँ विभिन्न हैं, उपासना पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न हैं, वेश-भूषा व खान-पान में विविधताएँ हैं, बावजूद इसके भारतीय संस्कृति और हमारी जीवन-दृष्टि के मूल स्रोत एक ही हैं। परंपराएँ एक हैं, राष्ट्रीय जीवन एक है, महापुरुष एक हैं, मातृभूमि के प्रति अडिग श्रद्धा में एकरूपता है तथा

भारतीय राष्ट्रीयता के बाहर हर नागरिक का हृदय अनेक समान आदर्शों एवं जीवन-मूल्यों पर एक समान झंकृत होता है। इस प्रकार भारत में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता का विचार कुछ सौ वर्षों का नहीं अपितु सनातन काल से है। मानव-कल्याण के व्यापक और उदार जीवन-दर्शन के समग्र चिंतन के कारण यहाँ सामूहिक जीवन में एक समान अनुभूतियाँ उत्पन्न हुई और इन्हीं सामूहिक अनुभूतियों की आधारशिला पर भारत का राष्ट्र जीवन विकसित हुआ। भारत में मानव-जीवन के श्रेष्ठ गुणों की आराधना का भाव गूँज उठा तथा भारत के राष्ट्रीय मानस का समवेत स्वर फूट पड़ा - 'सृष्टि की प्रत्येक हलचल में संघर्ष नहीं, पूरकता है।' भारत का राष्ट्रत्व प्राणिमात्र के प्रति कल्याण की भावना लेकर प्रकट हुआ है। अभाविप ने माना है कि भारत की उक्त गौरवमयी संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा, अर्थात् राष्ट्रीय पुनर्निर्माण से ही राष्ट्र- जीवन में चतुर्दिक् व्याप्त विकृतियों का शमन एवं निराकरण हो सकता है। इस प्रकार 'एक राष्ट्र- एक जन' आधारित सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के प्रति अभाविप की पूर्ण निष्ठा है। अभाविप ने स्वीकार किया कि परस्पर संघर्ष, विद्वेष, प्रतिद्वंद्विता के आधार पर प्रकट हो रही पश्चिमी संस्कृति की विभीषिकाओं से यदि विश्व को बचाना है तो भारत के सशक्त सांस्कृतिक राष्ट्रत्व को पुनः प्रतिष्ठित करना होगा।

3.9.2 संस्कृति एवं सभ्यता

अभाविप ने भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में 'संस्कृति' की अवधारणा को स्वीकार किया है। हमारी धारणा है कि 'संस्कृति' मनुष्य के भूत, वर्तमान तथा भावी जीवन का अपने में पूर्ण विकसित स्वरूप है संस्कृति मानव जीवन की प्रेरणादायिनी शक्ति है। प्रत्येक राष्ट्र की दीर्घकालिक ऐतिहासिक गतिविधि का लोकहितकारी तत्व उसकी संस्कृति है। वास्तव में संस्कृति वह है, जो सूक्ष्म एवं स्थूल, मन एवं कर्म, आध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन का सामंजस्य कर कल्याण करती हैं। संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर अनेक व्यक्तियों अथवा समूहों द्वारा किया गया एक अनुभवसिद्ध बौद्धिक प्रयास है। मानव विभिन्न स्थानों पर रहते हुए विशेष प्रकार के सामाजिक वातावरण, संस्थाओं, प्रथाओं, परंपराओं, व्यवस्थाओं, धर्म, दर्शन, लिपि, भाषा तथा कला-शिल्पों का विकास करके अपनी विशिष्ट संस्कृति का निर्माण करता है। किसी राष्ट्र-समाज की श्रेष्ठतम आध्यात्मिक एवं भौतिक उपलब्धियाँ ही संस्कृति है। संस्कृति उन सूक्ष्म तत्त्वों से संपर्क रखती है. जिन्हें हम तत्संबंधी राष्ट्र-समाज के विचार, विश्वास, रुचि, कला एवं आदर्श के रूप में देखते हैं। प्रत्येक राष्ट्र-समाज की अपनी रुचि, समझ और विश्वास होते हैं, जिनके अनुरूप वह राष्ट्रीय समाज अपनी संस्कृति का स्वरूप बनाता है।

समाज द्वारा लौकिक क्षेत्र में की गयी उन्नति का नाम सभ्यता है, संस्कृति आंतरिक है, जबकि सभ्यता बाह्य। सभ्यता के निर्माण तथा सांस्कृतिक जीवन के लक्ष्य को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। सभ्यता और संस्कृति दोनों ही एक-दूसरे से इस प्रकार मिले हुए हैं कि उन्हें अलग करना कठिन है। सांस्कृतिक क्रियाकलापों से सभ्यता विकसित होती है और संस्कृति के अभाव में सभ्यता का कोई अस्तित्व नहीं रह पाता। किसी भी राष्ट्र अथवा समाज की समस्त आत्मिक तथा भौतिक उपलब्धियाँ क्रमशः संस्कृति तथा सभ्यता के अंतर्गत आती हैं।

प्राकृतिक सीमाओं से निर्मित एक विशाल भू-क्षेत्र में फैला भारत आश्चर्यजनक विभिन्नताओं से परिपूर्ण है। भारत के एक ओर हिमालय पर्वत पर अनंत हिमराशि के फलस्वरूप भयंकर ठंड रहती है तो दूसरी ओर कोंकण और कोरोमंडल क्षेत्र में असह्य गरमी पड़ती है। यदि एक स्थान पर पृथ्वी इतनी निचली है कि समुद्र की सतह के बराबर है, तो दूसरी ओर विश्व के सर्वोच्च हिमशृंग हैं। चेरापूँजी में यदि प्रतिवर्ष 400 इंच वर्षा होती है, तो कुछ रेगिस्तानी क्षेत्रों में पाँच इंच या उससे भी कम। यदि एक ओर मानव-विहीन शुष्क मरुस्थल है, तो दूसरी ओर गंगा की उर्वर धरा । जलवायु की विभिन्नता के कारण ऋतुओं, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों तथा मानव शरीर रचना में भी असीमित विभिन्नताएँ हैं। हर थोड़ी दूरी पर बोलियाँ बदल जाती हैं। देश के संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। यह राष्ट्र विभिन्न उपासना-पद्धतियों का जन्मदाता है, दर्शन की अनगिनत शाखाएँ यहाँ की भूमि में विकसित हुई हैं। चिंतन की स्वायत्तता और देशकाल के अनुसार सदैव अपने को अत्याधुनिक रखने की ललक से यहाँ बहुविध भाषा बोली और उपासना पद्धतियाँ विकसित होती रहीं। भारत विश्व का इकलौता ऐसा देश है, जिसपर प्रकृति की सर्वाधिक अनुकंपा रही है। छह ऋतुएँ इस देश को प्रकृति की अनोखी देन हैं। इन्हीं विविधताओं को देख कर कुछ ने भ्रमवश तो कुछ ने षड्यंत्रपूर्वक जान-बूझ कर भारत को अनेक संस्कृतियों एवं राष्ट्रों का समूह माना, किंतु अधिकाधिक भारतीय विद्वानों ने इस मत का खंडन किया है। ' अभाविप' के राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य में 'संस्कृति' और 'राष्ट्र' के प्रति उक्त अराष्ट्रीय एवं भ्रमपूर्ण मतवाद को समाप्त कर भारत की 'सांस्कृतिक राष्ट्रीयता' की वास्तविक अवधारणा को पुनः प्रतिष्ठापित करना भी शामिल है। अभाविप की मान्यता है कि विविधताओं से युक्त, प्राकृतिक सीमाओं से आबद्ध संपूर्ण भारत की संस्कृति एक है और भारत एक पुरातन राष्ट्र है। भारत की जो भौगोलिक विविधता दिखाई देती है, उसमें एक मौलिक एकता

है, जिसने हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक भारतीय जीवन को एक सूत्र में बाँधे रखा है। भारत के प्राचीनतम साहित्य में भी इस एकात्म 'भारतवर्ष' का गौरवपूर्ण उल्लेख मिलता है। महाकाव्यों एवं पौराणिक साहित्य में संपूर्ण क्षेत्र को एक राष्ट्र के रूप में उल्लिखित करते हुए 'भारतवर्ष' कहा गया है। वैदिक वाङ्मय के अनुसार भारतवर्ष के उत्तर में हिमाच्छादित पर्वत थे, पश्चिमोत्तर में सिंधु एवं सुलेमान सहित हिंदुकुश की पहाड़ियाँ थीं दक्षिण पश्चिम, दक्षिण एवं पूर्व में समुद्र था वैदिक साहित्य में जिन पवित्र सप्त नदियों का एक साथ उल्लेख है, वे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु और कावेरी भारतवर्ष की भौगोलिक-सांस्कृतिक एकता की सूचक हैं। तीर्थ-स्थान, पवित्रनदियाँ तथा पर्वत संपूर्ण भारत में श्रद्धास्पद रूप में विद्यमान हैं। प्राचीनता, समानता, आध्यात्मिकता, सार्वभौमिकता, ग्रहणशीलता एवं समन्वय की सांस्कृतिक विशेषताएँ पूरे देश में एक जैसी मिलती हैं। ये भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता के सबल प्रमाण हैं।

3.9.3 राष्ट्रीय पुनर्निमाण

भारतवर्ष भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक राष्ट्र रहा है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने भारत की इसी सांस्कृतिक विशिष्टता पर आधारित राष्ट्र की एकता एवं अखंडता में अपनी पूरी निष्ठा व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का व्यापक लक्ष्य अपने सामने रखा। भारत मातृभूमि, पुण्यभूमि एवं कर्मभूमि है। परिषद ने इसी वैचारिक भूमि पर देश की शक्ति को राष्ट्र-शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने का भगीरथ प्रयास प्रारंभ किया।

अभाविप ने 'सांस्कृतिक राष्ट्र' की उपर्युक्त अवधारणा को स्वीकार करते हुए माना कि भारत प्राचीनकाल से गौरवशाली राष्ट्र रहा है। अतः हमें राष्ट्र का नवनिर्माण न कर, अपने राष्ट्र का ही पुनर्निर्माण करना है।

3.9.4 छात्र संगठन का दर्शन

वस्तुतः पूर्व वैदिककाल भारती संस्कृति के विकास का स्वर्ण युग था । हमारे मनीषियों ने एक स्वस्थ समाज के रचना कर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति विकसित की। कालांतर में विदेशी गुलामी एव अन्य कारणों से अनेक विकृतियाँ आई और भारत की शासन व्यवस्था दीर्घकाल तक विदेशियों की राजसत्ता का गुलाम रही। स्वाभाविक रूप से धीरे-धीरे उसका परिणाम समाज पर होने लगा। गुलामी के इस लंबे कालखंड में ये विकृतियाँ न केवल रूढ़ हो गयीं, अपितु अन्यान्य सामाजिक कुरीतियाँ भी हमारे समाज में व्याप्त होने लगीं। इनमें जातिप्रथा, छुआछूत, सतीप्रथा और दहेजप्रथा आदि उल्लेखनीय हैं। अंग्रेज सरकार

की ओर से मैकाले द्वारा भारत की हमारी मूल शिक्षा-व्यवस्था को षड्यंत्रपूर्वक उद्ध्वस्त करने और सरकार की मुखापेक्षी पीढ़ी का निर्माण करने वाली औपनिवेशिक शिक्षा-पद्धति लागू करने के फलस्वरूप गुलामी का रंग और भी गहरा होता चला गया। सदियों की गुलामी के बाद जब 1947 में भारत ने ब्रिटिश सत्ता से स्वतंत्र हुआ तो अवसर आया अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेकर अपनी समूह संस्कृति पर आधारित युगानुकूल, समर्थ एवं समृद्ध भारत आत्मनिर्भर बनाने का हमारी संस्कृति का एक वैश्विक लक्ष्य और नियति है।

3.9.5. ABVP का दर्शन (Philosophy of ABVP)

- **राष्ट्रीय पुनर्निर्माण (National Reconstruction):**

  ABVP का मानना है कि छात्रों को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। उनका मानना है कि छात्रों के माध्यम से ही राष्ट्र का विकास संभव है.

- **शिक्षा में रचनात्मकता (Creativity in Education):**

  ABVP शिक्षा के क्षेत्र में रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देने में विश्वास रखता है। उनका मानना है कि शिक्षा छात्रों को न केवल ज्ञान प्रदान करे, बल्कि उन्हें रचनात्मक और समस्या-समाधानकर्ता भी बनाए।

- **छात्रों का विकास (Student Development):**

  ABVP छात्रों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें उनका बौद्धिक, शारीरिक, और नैतिक विकास शामिल है। उनका मानना है कि छात्रों को देशभक्त, चरित्रवान, ईमानदार और परिश्रमी होना चाहिए.

- **दलगत राजनीति से ऊपर (Above Party Politics):**

  ABVP एक छात्र संगठन है और वह किसी भी राजनीतिक दल से ऊपर उठकर छात्रों के हित में काम करने में विश्वास रखता है

- **सर्वसमावेशी और समरस (Inclusive and Harmonious):**

ABVP एक सर्वसमावेशी और समरस छात्र संगठन है जो सभी छात्रों को साथ लेकर चलने में विश्वास रखता है

- **राष्ट्रव्यापी आंदोलन (Nationwide Movements):**

ABVP ने विभिन्न राष्ट्रीय मुद्दों पर छात्र आंदोलन चलाए हैं, जैसे कि शिक्षा के व्यवसायीकरण के खिलाफ, बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ, और धारा 370 को हटाने के लिए समय समय पर अनेकों राष्ट्रव्यापी आन्दोलन किए गए।

1. राजकीय मनमानी कहीं भ्रष्टाचार तो कहीं गुंडागर्दी और हिंसा का विरोध करने के लिए



अभाविप चर्चा में बनी रही। 1966 में उत्तर प्रदेश में सामान्य अंग्रेजी विषय को अनिवार्य बनाए जाने के विरोध में परिषद के नेतृत्व में स्थान-स्थान पर अनशन, धरने और प्रदर्शनों का आयोजन आरंभ हो गया। उस आंदोलन के व्यापक प्रभाव को देखते हुए अंग्रेजी को अनिवार्य करने संबंधी अपने आदेश को वापस लेने के लिए सरकार को बाध्य होना पड़ा।

2. इसी प्रकार बिहार में उर्दू को द्वितीय राजभाषा घोषित करने के सरकार के प्रयासों के विरुद्ध वहाँ की इकाई ने पूरे बिहार में व्यापक जनांदोलन खड़ा किया। छात्र नेता छात्राओं सहित जाने माने नेताओं, शिक्षाविदों और उच्च न्यायालय के जजों द्वारा समर्थन देने के कारण सरकार को परिषद के सम्मुख झुकना पड़ा और अपना निर्णय वापस लेना पड़ा।

3. इसी प्रकार 1967 में संसद में राजभाषा संशोधन विधेयक प्रस्तुत किए जाने का विद्यार्थी परिषद ने पुरजोर विरोध किया और केंद्र की सरकार को अपने कदम वापस खींचने के लिए मजबूर कर दिया। इस विधेयक के अंतर्गत भारत की दो राजभाषाएँ बनाने का प्रस्ताव था - हिंदी और अंग्रेजी। इस आंदोलन के अंतर्गत 14 से 21 सितंबर तक 'राष्ट्रभाषा सप्ताह' आयोजित किया गया, जो देश भर में मनाया गया। दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के अनेक स्थानों पर इस निमित्त सत्याग्रह, छात्र आंदोलन, परिचर्चाएँ, भाषणमाला और जन-जागरण के कार्यक्रम आयोजित हुए। जिस समय यह विधेयक संसद् में प्रस्तुत किया जाना था, अभाविप के कार्यकर्ताओं ने तत्कालीन दिल्ली प्रदेश मंत्री राजकुमार भाटिया के नेतृत्व में संसद् मार्ग पर गिरफ्तारी देनी शुरू कर दी।

- **शिक्षा का भारतीयकरण (Indianization of Education):**

  ABVP शिक्षा के भारतीयकरण के लिए भी काम कर रहा है, ताकि शिक्षा छात्रों को अपनी संस्कृति और विरासत से जोड़ा जा सके।



चतुर्थ अध्याय

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की शैक्षिक गतिविधियाँ

4.1 विकासार्थ विद्यार्थी (SDF)

4.2 श्रमानुभव शिविर

4.3 बुक बैंक

4.4 ‘ग्रामोत्थान हेतु छात्र’ अभियान

4.5 अन्तर राज्य छात्र जीवन दर्शन

4.6 युवा विकास केन्द्र

4.7 यात्राएँ

4.8 मेरा घर भारत देश

4.9 नि:शुल्क कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेण्टर

4.10 निःशुल्क कोचिंग कक्षाओं का संचालन

4.11 प्रज्ञा शोध केन्द्र

4.12 विवेकानन्द संस्कार संस्था

4.13 संस्कार वर्ग

4.14 परिसर बचाओ आन्दोलन

4.15 गढचिरौली विद्यापीठ

4.16 शिक्षा के व्यापारीकरण के विरुद्ध संघर्ष

4.17 प्रतिभा समागम

4.18 आदर्श महाविद्यालय

4.19 कल्याण छात्रावास

चतुर्थ अध्याय

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की शैक्षिक गतिविधियाँ

4.1. विकासार्थ विद्यार्थी (Student for Development)

'विद्यार्थी समुदाय को पुनर्निर्माण में लगाने का राष्ट्रीय प्रयास' का यह विचार विकासार्थ विद्यार्थी के कार्य का मूल आधार है। रचनात्मक कार्य छात्र संगठन के कार्य का अहम हिस्सा है, यह दर्शन अभाविप ने विकसित किया। इसकी शुरुआत रक्तदान, विवेकानंद जयंती, विभिन्न प्रतियोगिता व अनेक सकारात्मक कार्यक्रमों से हुई। विकासार्थ विद्यार्थी परिषद का ऐसा प्रयास है, जो छात्रों को आर्थिक एवं भौतिक विकास के साथ-साथ मानवीय विकास से जुड़े उन मुद्दों की तरफ ध्यान आकृष्ट कराता है, जिससे जनसामान्य प्रभावित होता है। विकासार्थ विद्यार्थी विकास के सही मायने क्या हों, जहाँ प्रकृति व मानव का सह-अस्तित्व सुरक्षित रहे, इस दिशा में सोचने को प्रेरित करता है। देश की प्रगति का भारतीय मॉडल क्या हो, देश कैसे आगे और किस दिशा में आगे बढ़े कि वह सतत विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण पर भी बल दे सकें, इस उद्देश्य के साथ विकासार्थ विद्यार्थी की स्थापना की गयी। विकासार्थ विद्यार्थी की अवधारणा जल, जंगल, जमीन, जानवर व जन के उद्देश्य पर केंद्रित है। जन का विकास मानव समृद्धि व जीवन मूल्य को साथ लेकर करना, यही विकासार्थ विद्यार्थी का ध्येय है। विकास की भारतीय अवधारणा में विकास का तात्पर्य सामाजिक एवं आर्थिक दोनों पहलू को विकसित करना, मानवविकास सूचकांक, अर्थात् गुणवत्ता के साथ-साथ उच्च मानक स्तर विकसित करना. हर हाथ को काम देना, जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करना, उत्तरोत्तर प्रगति के साथ स्थाई विकास करना, न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति होने से है। इसी भारतीय अवधारणा को आधार मानते हुए अभाविप ने अपना रचनात्मक कार्य प्रारंभ किया। इस प्रकल्प के अन्य महत्त्वपूर्ण अभियानों में गंगा सेवा, प्लास्टिक मुक्त अयोध्या, वृक्ष मित्र अभियान नैमिषारण्य (उत्तर प्रदेश), वृक्ष बंधन अभियान, असम और ग्रीन कैंपस - क्लीन कैंपस इत्यादि उल्लेखनीय हैं, जिनके माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन के प्रयास हो रहे हैं। अभाविप ने एस.एफ. डी. को प्रत्येक कॉलेज इकाई स्तर तक गतिविधि के रूप में नियमित चलाने का आग्रह प्रारंभ किया है, जिससे पर्यावरण संरक्षण और विकासात्मक गतिविधियों के माध्यम से महाविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र - छात्राएँ समाज परिवर्तन हेतु अपनी-अपनी

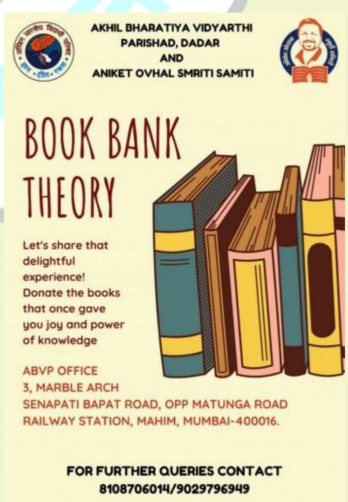
रुचि के अनुसार सक्रिय रह सकें और छात्र आज का नागरिक की अवधारणा को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त कर सकें।

4.2. श्रमानुभव शिविर

1966 से 1973 ई. के कालखंड में अभाविप के रचनात्मक कार्यों की श्रृंखला में अनेक और आयाम जुड़ गये, जिनमें 'श्रमानुभव शिविर' एक प्रमुख प्रकल्प के रूप में उभरा। सन् 1967 में नागपुर के निकटवर्ती जिलों चंद्रपुर एवं अमरावती के वनांचल में एक श्रमानुभव शिविर का आयोजन हुआ। दत्ताजी डिडोलकर द्वारा तैयार की गयी विस्तृत योजनानुसार इस शिविर में नागपुर विश्वविद्यालय से संबंधित सभी महाविद्यालयों को सम्मिलित किया गया। इस शिविर के लिए 125 छात्रों तथा 25 प्राध्यापकों का चयन किया गया। दो दिन के परिचय शिविर के पश्चात् इन छात्रों ने बीस दिन तक अनेक प्रकल्पों उपप्रकल्पों का संचालन किया। छात्रों को तीन गटों और आगे अनेक उपगटों में बाँट कर गाँवों में सेवानुभव हेतु भेजा गया। इस शिविर को इतनी प्रतिष्ठा मिली कि महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री वसंतराव नाईक पूरे एक दिन तक शिविर के हरिसाल केंद्र पर रहे। इसी प्रकार कलमखार केंद्र पर नागपुर के आयुक्त एन. एस. देसाई अपनी पत्नी के साथ शिविर में आए। उपर्युक्त दोनों श्रमानुभव शिविरों के सफलतापूर्वक संचालन के बाद विभिन्न प्रांतों में श्रमानुभव शिविरों का आयोजन प्रारंभ हो गया।

4.3. बुक बैंक

बुक बैक एक ऐसी सुविधा है, जिसके अंतर्गत छात्रों को उनकी पाठ्यपुस्तकें एक निश्चित अवधि के लिए उधार देते हैं। यह व्यवस्था विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए लाभकारी होती है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और महंगी किताबें खरीदने में सक्षम नहीं होते। वर्तमान समय में जब शिक्षा की लागत बढ़ती जा रही है, ऐसे में बुक बैक छात्रों को अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराकर न केवल उनकी आर्थिक सहायता करता है, बल्कि उन्हें पढ़ाई में आगे बढ़ने का अवसर भी देता है। इससे सभी छात्रों को समान शैक्षिक संसाधन मिलते हैं और शिक्षा में समानता आती है। इसके अलावा, बुक बैक प्रणाली से पुस्तकों का पुनः उपयोग होता है,



जिससे पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान मिलता है। यह योजना अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा 1960 70 के दशक में वडोदरा से शुरु की गयी। शुरु में कई संस्थाओं के साथी आपस में मिल कर छात्रो के

लिए पुस्तकों का प्रबंधकरते थे परंतु यह बहुत कम लोगों तक ही पहुच पाते थें। उन्ही दिनों स्थानीय 'खुशालचंद चैरिटेबल ट्रस्ट' एक बुक बैंक चलाता था, जिसका लाभ अनेक लोग लेते थे. परंतु वह भी पर्याप्त नहीं था इसलिए अभाविप के तत्कालीन कार्यकर्ताओं ने एक बुक बैंक प्रारंभ करने का निर्णय लिया। कार्यकर्ता उत्साहित होकर काम में लगे। वे घर घर जाते और पुरानी पुस्तके ले आते थे। इस तरह धीरे-धीरे पुस्तकें संग्रह होती गयीं और छोटे पैमाने पर पुस्तकों का वितरण शुरू हो गया, फिर भी पुस्तकों की कमी बनी रहती थी, अतः 'इंदुमति चैरिटेबल ट्रस्ट' को एक प्रार्थना पत्र भेजा गया और वहाँ से सालाना 10,000 रुपए अनुदान मिलना शुरू हो गया।

4.4. 'ग्रामत्थान हेतु छात्र' अभियान

देश की छात्रशक्ति को ग्राम विकास की प्रक्रिया से जोड़ने और ग्रामीण पुनर्रचना के कार्य में उनकी प्रतिभा का विनियोग करने के लिए 'ग्रामोत्थान हेतु छात्र' अभियान नामक प्रकल्प 2 अक्टूबर, 1977 को प्रारंभ किया गया। इस प्रकल्प के अंतर्गत निरंतर उपेक्षा के कारण उजड़ रहे गाँवों में ग्रामीण तकनीक, विकास और संस्कृति जैसे विषयों पर चर्चा करते हुए लोगों को गाँवों की ओर पुनः प्रवृत्त करने हेतु सशक्त वैचारिक अभियान चलाने का संकल्प लिया गया। ग्रामीण अंचलों में 'अभियान केंद्र' स्थापित करने की योजना बनाई गयी।

4.5. अन्तर राज्य छात्र जीवन दर्शन

राष्ट्रीय एकात्मता-अखंडता हेतु एक प्रभावी पहल- अंतरराज्य छात्र जीवन-दर्शन (SEIL)" में देश भर के छात्रों के बीच समन्वय एवं परस्पर संबंधों के सहारे राष्ट्रीयता के भावों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा वर्ष 1966 में विभिन्न भाषा-भाषी राज्यों के छात्र समुदाय में राष्ट्रीय एकीकरण की मूल भावना को प्रकट करने वाला अति महत्त्वपूर्ण प्रकल्प अंतरराज्य छात्र जीवन-दर्शन (SEIL: Students' Experience in Inter-State Living) प्रारंभ किया गया। जिसके निम्न उद्देश्य हैं

i. उर्वरित भारत और पूर्वोत्तर के बीच उत्पन्न संवादहीनता की स्थिति और दूरी को समाप्त कर संवाद प्रारंभ करना ।

ii. हम सब एक हैं, सांस्कृतिक रूप से भी समान हैं', यह भावना उत्पन्न करना।

iii. सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के विषय में जानकारी और उनमें परस्पर अपनत्व की भावना जाग्रत करना

iv. सांस्कृतिक सौहार्द की भावना उत्पन्न करना। देश के युवाओं को विविध अवसर प्रदान कराना, ताकि वे विविधता में निहित एकता का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकें।

v. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से एकात्मता के अंतसूत्रों को दृढ़ और व्यापक बनाना।

अंतरराज्य छात्र जीवन-दर्शन' की उपलब्धियाँ

एस ई आई एल. द्वारा प्रतिवर्ष पूर्वोत्तर के छात्रों की एक माह की अखिल भारतीय स्तर की यात्राओं का आयोजन किया जाता है। वे अलग-अलग स्थानों पर विभिन्न परिवारों में, उस परिवार के सदस्यों की तरह ही पारिवारिक परिवेश में रहते हैं। वहाँ की रीति-नीति, सांस्कृतिक-भौगोलिक, सामाजिक-राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से परिचय प्राप्त करते हैं, एक आत्मीयता के बंधन में बँध जाते हैं और क्रमशः उस परिवार के साथ उनका नियमित आत्मीय संपर्क आरंभ हो जाता है।

4.6. युवा विकास केन्द्र

अभाविप स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष 1998 99 में अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन (SEBI) को सुचारू रूप से संचालित करने, उसके स्थायित्व को सुदद करने, पूर्वोतर भारत के युवाओं के लिए जान एवं प्रगति के नये द्वार खोलने के उद्देश्य से गुवाहाटी में एक केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इसका अन्य उद्देश्य पूर्वोतर के युवाओं को उनके राज्यों की प्रगति के साथ जोड़ना तथा उन्हें जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रोत्साहित करना भी था। पूर्वोत्तर भारत का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा आर्थिक विकास का अभाव है। इस दृष्टि से वहाँ के युवकों का मार्गदर्शन और प्रशिक्षण देने की कोई व्यवस्था नहीं थी। वर्ष 2004 में 'युवा विकास केंद्र' की स्थापना से इस कमी को दूर करने की पहल की। इस केंद्र पर शैक्षणिक संकुल में कार्यशालाएं, परिसंवाद, कंप्यूटर प्रशिक्षण व्यक्तित्व विकास शिविर, कौशल विकास प्रशिक्षण, राज्य स्तरीय बोर्ड परीक्षा की तैयारी प्रशिक्षण, विधि- जागरूकता व चिकित्सा शिविर आदि का संचालन किया जाता है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की सार्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में युवा विकास केंद्र की ओर से गुवाहाटी में 25 26 नवंबर, 2007 को आयोजित एक विशेष कार्यक्रम 'पूर्वोतर युवा महोत्सव' उल्लेखनीय है, जिसमें पूर्वोत्तर के सभी प्रांतों के युवाओं की सक्रिय भागीदारी रही। युवा महोत्सव से पूर्व पूर्वोत्तर के सभी प्रमुख

केंद्रो ईटानगर, इंफाल, अगरतला, डिब्रूगढ़, उत्तर लखीमपुर बरपेटा भवरी, सिलचर आदि स्थानों पर राष्ट्रभक्ति आधारित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यहाँ पर एक जनसभा आयोजित कर ज्ञात अज्ञात क्रांतिवीरों की श्रद्धांजलि दी गयी। समापन कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख दत्तात्रेय होसबाले ने संबोधित किया। इसमें 46 स्थानों में कल 323 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जिनमें 72 छात्राएँ और 17 विभिन्न जनजातीय समूहों का प्रतिनिधित्व रहा। इस कार्यक्रम के माध्यम से पूर्वोत्तर के युवाओं को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त हुई। केंद्र में व्यवसाय की दृष्टि से उपयुक्त कौशल विकास हेतु संचालित पाठ्यक्रम इस प्रकार हैं- क्रेन ऑपरेटर, भारी वाहन परिचालन, बेसिक कंप्यूटर एप्लीकेशन, डी.टी.पी. ऐंड ग्रॉफिक डिजाइनिंग, टैली एकाउंटिंग, टूर ऑपरेटर, मोबाइल रिपेयरिंग।

4.7. यात्राएँ

ABVP अनुसूचित जाति और जनजाति छात्रों की शिक्षा सुविधाओं और छात्रवृत्ति के लिए सदा सक्रिय रहती है। वह उनमें अपने देश और समाज के प्रति संवेदना और ज्ञानात्मक प्रतीति का विस्तार भी करना चाहती है उन्हे ऐसे अवसर देना चाहती है जिससे वे अपने व्यक्तित्व का विकास एवं बौद्धिक उन्नयन के द्वारा समाज मे एकरस हो सके इस हेतु विद्यार्थी परिषद ने नये-नये स्वरूप विकसित किए हैं, जिनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं।

4.7.1. जीवन यात्रा

इस प्रकल्प के अन्तर्गत पूर्वोत्तर के छात्र-छात्राओं को पश्चिमी भारत में भ्रमण करवाकर वहां की संस्कृति सभ्यता से परिचित करवाना है। इस प्रकल्प की शुरुवात 1966 में हुयी थी जब 78 छात्रों का दल श्रीमती विष्णु सहाय, पद्मनाभ आचार्य, मदनदास देवी, गीता, शांतनु शेंडे तथा दत्ताजी डिड़ोलकर के प्रयास से मुम्बई पहुँचा।

4.7.2. अनुभव अध्ययन

अनुभव अध्ययन यात्रा के द्वार सामन्य कार्यक्रमों के विद्यार्थी परिषद से इस यात्रा का आयोजन वंचित वर्गों के लिए 9 मई से 13 मई 2002 तक किया। यह यात्रा बस्तर से विशाखापटनम तक गयी उड़ीसा और आंध्र प्रदेश के अनेक पिछड़े ग्रामीण छात्र



उच्च शिक्षा एवं उच्च तकनीकी शिक्षा को देखने समझने अनुभव करने हेतु इस यात्रा में सम्मिलित हुए। साथ ही अत्यंत पिछडे जनजातीय छात्र छात्राओं के साथ परस्पर विचार विमर्श और चर्चा का हिस्सा बने। इन छात्रों को इंजीनियरिंग कॉलेज, उच्च स्तरीय कंप्यूटर सेंटस विश्वविद्यालय दर्शन, समुद्र भ्रमण उद्योगदर्शन एवं नाल्को (उडीसा), बस्तर में हस्तकला शिल्प केंद्र का भ्रमण एवं मंदिर स्थलों का दर्शन भी कराया गया। इससे सांस्कृतिक सामंजस्य स्थापना का अवसर भी प्राप्त हुआ।

4.7.3 मातृभूमि दर्शन यात्रा

उत्तराखंड के ऊधमसिंह नगर जिले में खटीमा नामक स्थान पर थारु जनजाति का एक बड़ा समूह रहता है। ये लोग स्वयं को मुगलों के विरुद्ध घास की रोटियाँ खाकर देशाभिमान के लिए आजीवन संघर्ष करने वाले इतिहास प्रसिद्ध महान पराक्रमी राष्ट्र गौरव के प्रतीक महाराणा प्रताप का वंशज मानते हैं। उनका मानना है कि मुगलों से पराजित होने के कारण ये चित्तौडगढ से पलायन कर इधर आ बसे। आज भी वे महाराणा प्रताप की जयंती मनाते हैं, उनसे संबंधित कई प्रकार के कार्यक्रम करते हैं. किंतु समाज से उपेक्षा के कारण दुःखी भी होते हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की उत्तराखंड इकाई ने उनकी वेदना समझते हुए उनके लिए 'मातृभूमि दर्शन' की योजना बनाई और इन वर्गों के मनोगत दुर्बल भावों को दूर करने हेतु समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए 30 छात्र-छात्राओं के एक दल का भ्रमण सुनिश्चित किया गया। यह यात्रा 22 अप्रैल, 2005 का उत्तराखंड के खटीमा से चल कर चित्तौड़गढ़ आई, जहाँ उन्होंने दो दिन तक महाराणा प्रताप के घर उनके परिवार के लोगों के साथ गैर-जनजाति परिवार में रहने का अनुभव प्राप्त किया। उन्होंने राजस्थान में 4 दिनों तक भ्रमण किया। इस यात्रा के माध्यम इन्हें आत्मनिरीक्षण और परीक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनमें देश के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना पुनः जीवित हो उठी। इस यात्रा के परिणामस्वरूप उनमें आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास का भाव भी जाग्रत हुआ। उन्होंने नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में बढ़ रहे माओवादी प्रभाव के विरुद्ध भी संघर्ष करने का संकल्प व्यक्त किया। ऐसी यात्राओं के माध्यम से अभाविप ने समाज परिवर्तन के एक नये आयाम को नये प्रयोग के रूप में स्थापित किया है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चित्तौड़ में महाराणा प्रताप के वंशज राणा अरविंद सिंहजी मेवाड ने इस थारू छात्र दल का स्वागत सत्कार किया उन्हें अतिथि घोषित किया और प्रसन्न होकर 'मैं भी खटीमा आऊँगा' की सहज घोषणा की। यह घटना छात्र छात्राओं के लिए चिरस्मरणीय बन गयी। अभाविप जनजातीय छात्रों के

विकास के ऐसे अनेक कार्यक्रम एव सम्मेलन समय-समय पर करती रहा है। इन सम्मेलनों के कारण अखिल भारतीय स्तर पर जन-जाति छात्रों में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

4.8 मेरा घर भारत देश

अन्तर्राज्य छात्र जीवन दर्शन से एक प्रकल्प निकला जिसका नाम था मेरा घर भारत देश। यह अन्तर्राज्य छात्र जीवन दर्शन का सहयोगी प्रकल्प है जिसका कार्य पूर्वोत्तर भारत के सीमांत छात्रों को भारत के अन्य नगरों में शिक्षणार्थ रख कर उनके आवास, भोजन एवं शिक्षा का प्रबन्ध करना है। यह पूर्वोत्तर भारत और देश के अन्य भागों में रहने वाले लोगों के बीच व्यापक रूप से समझ बढ़ाने वाला। इसमें उद्योगपतियों, साहित्कारों व प्राध्यापकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

4.9 नि:शुल्क कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेण्टर

अरुणाचल प्रदेश में कंप्यूटर शिक्षा की अनुपलब्धता एवं छिटपुट चलने वाले कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्रों द्वारा छात्र-छात्राओं से अत्यधिक शुल्क वसूलने के कारण निर्धन छात्र-छात्राओं के लिए इसका प्रशिक्षण लेना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया था और इन प्रशिक्षण केंद्रों द्वारा छात्र-छात्राओं का व्यापक शोषण हो रहा था। इन विद्यार्थियों को इस शोषण से मुक्त कराने का संकल्प लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने इंटानगर में 30 अक्टूबर, 2011 को एक निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र आरंभ किया. जिसका उद्घाटन



अभाविप के राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री अतुल भाई कोठारी के हाथों संपन्न हुआ। इसमें कुल 10 कंप्यूटर सेट लगाए गये और छात्र-छात्राओं की आवश्यकताओं के अनुकूल प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया गया। इसके आसपास लगभग 10 निजी कंप्यूटर केंद्र भी संचालित हो रहे थे, जो एक पाठ्यक्रम पूरा करने के 10 हजार रुपए लेते थे। गुणवत्तापूर्ण एवं निःशुल्क शिक्षण के कारण अभाविप के इस प्रशिक्षण केंद्र पर छात्र-छात्राओं की भीड़ लगने लगी। एक बैच में 100 युवाओं का पंजीकरण किया जाता और चार माह के लिए अग्रिम पंजीकरण करने पर भी अनेक छात्र-छात्राओं को बिना पंजीकरण के लौटना पड़ता था। एक दिन में सात बैच चलाने पड़ते थे। वर्ष 2011 से 2016 तक 2000 से भी अधिक छात्र छात्राओं को प्रशिक्षणोपरांत

प्रमाण-पत्र दिए जा चुके थे। युवा विकास केंद्र, गुवाहाटी से संबद्ध होकर पूरी गुणवत्ता व सफलतापूर्वक अभाविप ने निःशुल्क ऑनलाइन प्रवेश-प्रक्रिया भी संचालित की, जो 2017 से जारी रही। इस केंद्र की लोकप्रियता एवं छात्रों की आवश्यकताओं को समझते हुए अब आसपास निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण देने वाले 15 से अधिक अन्य केंद्र भी संचालित होने लगे हैं, जिन्होंने अभाविप द्वारा बनाए गये पाठ्यक्रम को ही अपनाया है।

4.10. निःशुल्क कोचिंग कक्षाओं का संचालन

1984 की में बिहार की 'परीक्षा में कदाचार रोको आंदोलन' देशव्यापी स्वरूप ग्रहण कर रहा था। बिहार के कार्यकर्ता विभिन्न विद्यालयों में जाते और मैट्रिक परीक्षा में बैठने की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को एक कार्ड देते थें जिस पर लिखा रहता-'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बिहार प्रदेश परीक्षा में शामिल हो रहे सभी छात्र-छात्राओं को सफलता की मंगलकामना करती है, कृपया परीक्षा को कदाचार-मुक्त बनाएँ।' इसी क्रम में जब अभाविप कटिहार के कार्यकर्ताओं ने स्थानीय 'त्रिवेणी नायक उच्च विद्यालय' के छात्र छात्राओं के बीच पहुँच कर अपना आह्वान किया और उस पर उनकी प्रतिक्रिया सुनी, तो चिंतन करने को बाध्य हो गये। विद्यार्थियों की शिकायत थी कि यहाँ कक्षाएँ नहीं चलतीं और हम अपने परिवारों से इतने सुविधा- संपन्न भी नहीं हैं कि कहीं से सारी तैयारी कर लें, फिर कदाचार मुक्त परीक्षा देना स्वाभाविक ही बहुत कठिन हो जाता है। परिषद कार्यकर्ताओं ने इस चुनौती को स्वीकार किया और निर्णय लिया कि हम अगले वर्ष 1985 से कटिहार में निःशुल्क कोचिंग कक्षाओं का संचालन करेंगे। तब से आरंभ हुआ निःशुल्क कोचिंग का यह केंद्र अब तक लगातार सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है, जो महेश्वरी अकादमी, अमला टोला में व्यवस्थित रूप से गतिशील हैं। यह प्रातः 6 से 9 बजे तक नवंबर माह से आरंभ होकर बोर्ड परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व तक चलाया जाता है।

निर्धन, मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को साक्षात्कार के द्वारा प्रवेश दिया जाता है। वर्तमान में नामांकन शुल्क 60 रुपए हैं। सिनेमा हॉल में विज्ञापन के माध्यम से, जिले के सभी कॉलेज व विद्यालयों में सूचना पट्ट पर लेटर पैड पर कोचिंग की नोटिस और समाचार पत्रों के माध्यम से प्रसार प्रचार किया जाता है। लॉज और मोहल्लों में संपर्क अभियान भी चलाया जाता है। कई प्रकार के पर्चे नगर के अनेक स्थानों पर वितरित किए जाते हैं।

यहाँ प्रवेश पाने वाले सभी छात्र-छात्राओं के लिए पाठ्य व लेखन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। नोट्स भी तैयार करके उपलब्ध कराया जाता है और बीच बीच में टेस्ट भी लिये जाते हैं। जिले के लोकप्रिय व अनुभवी शिक्षकों द्वारा संबंधित विषयों पर शिक्षण कराया जाता है।

4.11. प्रज्ञा शोध केन्द्र

महाराष्ट्र के जलगाँव जिले में जब अमलनेर की बात आती है, तो संतश्रेष्ठ सखारामजी महाराज, श्रीमंत प्रताप सेठजी और पूज्य साने गुरुजी जैसी महान विभूतियां से पावन हुई भूमि के शैक्षिक वातावरण के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले 'प्रज्ञा शोध केंद्र' का अनूठा स्थान ध्यान में आता है। परिषद द्वारा प्रारंभ किए गये अनेक उपक्रमों में यह केंद्र अमलनेर के मानबिंदु के रूप में स्थापित है। समाज के पिछड़े वर्ग के प्रतिभा संपन्न विद्यार्थियों को खोज कर उनका बौद्धिक विकास करना उनमें गुणवत्ता विकसित करना, उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा उपलब्ध कराना और उन्हें समाज हित के कार्यों के लिए भी सक्षम बनाना 'प्रज्ञा शोध केंद्र' का मुख्य उद्देश्य है। विद्यार्थियों को न केवल पुस्तक ज्ञान मिले, बल्कि उनमें सुषुप्त गुणों को मुखर होने का अवसर भी प्राप्त हो, इसके लिए प्रयत्न करना और शिक्षा–संस्कारों से परिपूर्ण आदर्श चारित्र्य का निर्माण करना, जो भारत का वास्तविक प्रतिनिधि लगे। सामान्य तथा गरीब परिवारों के मेधावी विद्यार्थियों की शिक्षा धनाभाव के कारण न रुके, ऐसे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 1978 में 'प्रज्ञा शोध केंद्र' की स्थापना की गयी। इस केंद्र में आने वाले हर विद्यार्थी का मार्गदर्शन किया जाता है. जिसके लिए अनुभव संपन्न प्राध्यापकों का निःशुल्क सहयोग मिलता है। यह केंद्र ऐसे सभी शिक्षकों के त्यागपूर्ण प्रयत्नों से खड़ा है और प्रगति पथ पर अग्रसर है। इस केंद्र ने अमलनेर की शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योग दिया है। यहाँ से शिक्षित होकर निकलने वाले प्रज्ञावंत विद्यार्थी चिकित्सक, अभियंता, तहसीलदार प्राध्यापक जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण दायित्वों का निर्वाह करते हुए समाज हित में सक्रिय हैं।

4.12. विवेकानन्द संस्कार संस्था

अभाविप ने 1967 ई. में लातूर में एक शैक्षिक प्रकल्प की शुरुआत की, जिससे महाराष्ट्र के वनवासी एवं



ग्रामीण अंचलों से आने वाले छात्र-छात्राओं को शिक्षा हो सके। इसलिए छात्रावास तथा उनके छात्रों के मानसिक शारीरिक विकास सुलभ को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के उपक्रम चलाए गये। इन्हें स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से स्थानीय निवासियों एवं अभाविप के वर्तमान व पूर्व कार्यकर्ताओं के सहभाग से कार्यारंभ किया गया। 15 अगस्त, 1974 को 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विवेकानंद संस्कार संस्था, लातूर' नाम से स्वतंत्र संस्था घोषित कर उसका पंजीकरण कराया गया। प्रारंभ में दयानंद महाविद्यालय के प्रांगण में किराए की जगह लेकर 20 छात्रों के लिए भोजन व आवास सहित छात्रावास शुरू किया गया, जिसका औपचारिक उद्घाटन भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री बासप्पा दानप्पा जनी (बी.डी. जनी) ने किया था। 1981 ई. में छात्रावास, अभ्यासिका, परिषद कार्यालय, पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की निवास-व्यवस्था से युक्त भवन का निर्माण किया गया। निवास केंद्र एवं उपक्रमों का लाभ सैकड़ों छात्रों को हुआ, जिनमें से कई प्रशासनिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत हैं। 1993 ई. में किल्लारी परिसर में आए प्रलयंकारी भूकंप के बाद संघ परिवार के सहायता कार्य हेतु संस्था के भवन का सफल उपयोग हुआ। भूकंप पीड़ित छात्र-छात्राओं के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जनकल्याण समिति ने अपना छात्रावास संस्था की इमारत में ही शुरू किया। संकल्पित योजनानुसार पुराने भवन में संघ योजना से पूर्वोत्तर के मेघालय से आए 25 छात्रों के लिए छात्रावास चलाया जाता है।

4.13. संस्कार वर्ग

"आधुनिक विकास का यह अनिवार्य दोष है कि वह तीव्र गति से आर्थिक विकास की खाई का निर्माण करता है। फलतः देश में एक ओर थोड़े लोगों पास अत्यधिक धन सम्पदा है तो वही दूसरी ओर एक बडे वर्ग के पास मूलभूत संसाधनो का आभाव। समाज में बहुतायत में जातिपात छुआछूत का आज भी व्यापक रूप देखने को मिलता है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने बिहार के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के साथ विभिन्न शासनों में हुए अन्याय को समाप्त करने हेतु 2015 में प्रयास प्रारंभ किए। अनुसूचित जाति एवं जनजातीय छात्र छात्राओं की शिक्षा हेतु छात्रवृति में वृद्धि एवं उनके नियमितीकरण, छात्रावासों की समस्याओं को दूर कर सुविधा संपन्न व रहने योग्य बनाने की माँग को लेकर परिषद ने अनेक प्रकार की कोशिशें आरंभ कीं।

परिणामतः जनजातीय छात्र-छात्राओं एवं उनके छात्रावाम में अपनी पैठ जमा चुके नक्सली-माओवादियों और ईसाई मिशनरियों के हाथ पाँव फूल गये। उन सभी परिसरों एवं छात्रावासों में अपने राष्ट्रीय विचार के साथ अभाविप का प्रवेश हुआ और राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों एवं शहरी माओवादियों के विरुद्ध छात्रों का एक प्रभावी आंदोलन खड़ा हुआ और छात्रावासों से संचालित नक्सलियों के केंद्र भी बंद हो गये। <u>अभाविप द्वारा</u>

1999 में 'रक्तरंजित बिहार' नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की गयी, जिसमें परिषद द्वारा जहानाबाद सहित संपूर्ण बिहार प्रदेश में जारी हिंसा के विरोध में 'हिंसा विरोधी मार्च' का विस्तृत विवरण दिया गया था। बिहार में 60-70 के दशक में नक्सलबाड़ी से प्रारंभ हुई हिंसक माओवादी क्रूरता की स्थिति तथा उसके 'वर्ग-शत्रु के खात्मा' सिद्धांत की समीक्षा की गयी। उल्लेखनीय है कि उस दौर में जहानाबाद नक्सली हिंसा का गढ़ बन गया था। सत्तर के दशक में नक्सलियों द्वारा अनेक सामूहिक हत्याओं का श्रृंखलाबद्ध खूनी खेल आरंभ किया गया। सामूहिक रूप से जमीनें कब्जा कर लेना, खड़ी फसलें काट लेना अथवा जला देना दैनंदिन जीवन की घटनाएँ बन गयी थीं। लोग भयाक्रांत होकर घरों की छत पर रात-रात भर जागते, खेत जाने से कतराते और दिन-रात महिलाओं-बच्चों की रखवाली करते। न जाने कितने ही लोग अपनी वंश परंपरा को बचाए रखने व जीवन यापन के उद्देश्य से गाँव छोड़ कर सपरिवार उत्तर प्रदेश, दिल्ली की ओर पलायन कर गये। विभिन्न समाज वर्गों के बीच सघन वैमनस्य और अविश्वास भर उठा। लोग बदले की भावना से एक-दूसरी जातियों का नरसंहार करने लगे। फलतः प्रतिक्रिया स्वरूप 1995 में वर्ग संघर्ष का एक विद्रुप सामने आया विरोधी संगठन के रूप में 'रणवीर सेना' नामक एक अन्य संगठन खड़ा हो गया।"

4.14. परिसर बचाओ आन्दोलन



विद्यार्थी परिषद ने अपनी सैद्धान्तिक भूमिका में भी शैक्षिक परिवार की जो अद्भुत परिकल्पना सम्मुख रखी थी, उसी के आधार पर शिक्षा-क्षेत्र में एक पारिवारिक भाव उत्पन्न करने की दृष्टि से शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षाविद इन तीनों को शैक्षिक परिवार का अनिवार्य घटक माना, अपनी संगठनात्मक संरचना में विद्यार्थियों के साथ शिक्षक समुदाय को भी स्थान दिया और छात्र-शिक्षक शिक्षाविद की त्रिवटी के आधार पर शैक्षिक परिवर्तन के अपने प्रयासों

को गतिशील रखा। इन सारे प्रयत्नों के बाद भी शिक्षा और शिक्षण का जो यूरोपियन प्रतिदर्श हमने स्वीकार कर लिया था उसके दुष्परिणामवश पूरे देश में विद्या के मंदिरों का शैक्षिक वातावरण तीव्रता से नष्ट हो रहा था। वहां का शैक्षिक परिदृश्य पूरे देश को चिंता में डाल रहा था और पठन-पाठन में लगातार ह्रास देखने को मिल रहा था। छात्र शिक्षक संबंध भी अपनी गरिमा खो रहा था, शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही कक्षा की पढाई से कट कर दूर-दूर थे। शिक्षा परिसर विविध प्रकार के अभावों एवं अनियमितता के शिकार हो रहे थे।

ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी परिषद ने 1992-93 में ' परिसर बचाओ' अभियान के माध्यम से इस परिदृश्य को बदलने और शैक्षिक परिसरों को नये रचनात्मक प्रयोगों के माध्यम से सकारात्मक दिशा देने का बीड़ा उठाया। पूरे देश में छात्र छात्राओं, शिक्षकों एवं शिक्षाविदों में जागरूकता लाने के उद्देश्य का मार्ग चयन किया गया। इन संवादों के माध्यम से बदलाव की नयी धारा बह चली और उसी उत्साह में अलग-अलग प्रदेशों में हुए शैक्षिक प्रदर्शनों में भारी संख्या में छात्र-छात्राएँ उमड़ पड़े। इसके तहत हुए विभिन्न प्रदर्शनों में महाराष्ट्र में 1,32,000, कर्नाटक में 85,000, उत्तर प्रदेश में 61,000, राजस्थान में 40,000 और गुजरात में 35,000 संख्या एकत्र हुई। शिक्षा क्षेत्र में हुए संवाद-प्रदर्शनों ने एक नयी चेतना का निर्माण किया। इसी क्रम में शैक्षिक अराजकता के विरुद्ध आक्रोश व्यक्त करने हेतु अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री विनोद तावड़े तथा पूर्व महामंत्री हरेंद्र प्रताप के नेतृत्व में 25 जनवरी, 1994 को पटना की सड़कों पर 23 हजार छात्रों का विराट् प्रदर्शन हुआ, जिसमें लाठीचार्ज, आँसू गैस, पानी की बौछार के आगे भी छात्र झुके नहीं और अपना अहिंसक आंदोलन जारी रखा।

4.15. गढचिरौली विद्यापीठ

गढ़चिरौली एक जनजातीय बहुल जिला है। महाराष्ट्र के अन्य जिलों की तुलना में यह बड़े क्षेत्रफल वाले जंगल से युक्त है। जिले में रोजगार और औद्योगिक साधनों की कमी के कारण यह यथास्थिति में ही बना रहा। इस जिले के विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा इसका नक्सल प्रभावित होना रहा है। इस जिले में युवक युवतियों के लिए शिक्षा का अवसर भी नगण्य बना हुआ था। ऐसी परिस्थिति में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का ध्यान इस ओर गया। यहाँ शिक्षा की स्थिति सुदृढ़ हो, नौजवान शिक्षित होकर रोजगार प्राप्त करें, जिले का विकास हो, इस बहुद्देशीय लक्ष्य को सामने रख कर अभाविप ने गढ़चिरौली में सन् 2000 में नागपुर विद्यापीठ का एक उपकेंद्र बनवाने में सफलता प्राप्त की। उस उपकेंद्र को विश्वविद्यालय बनाने के लिए विद्यार्थी परिषद ने चर्चा शुरू की। 'शिक्षा जीवन के लिए

जीवन वतन के लिए ऐसी घोषणा करते हुए सर्वप्रथम नागपुर विद्यापीठ के सीनेट में अभाविप के सीनेट सदस्य ने जोरदार चर्चा चलाई। इसके लिए तत्कालीन कुलपति को परिषद कार्यकर्ताओं के साथ जाकर ज्ञापन भी सौंपा।

यह विषय धीरे-धीरे जोर पकड़ने लगा. फिर सीनेट की सभा में प्रस्ताव भी पारित किया गया, किंतु इसे करने के लिए अभाविप गढ़चिरौली ने 2002 से निरंतर माँग-पत्र स्मरण पत्र बार बार देकर अपना प्रयास जारी रखा। कुलपति से लगातार मिलते रहे। प्रयास रंग लाया और सरकार ने इस हेतु 2004 में एक समिति का गठन किया। जिसके अध्यक्ष तत्कालीन कुलपति प्रो. रीड नियुक्त हुए। गढ़ समिति की सभी चर्चाओं में अभाविप ने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी और पर जिले में इसमें युवाओं से सहयोग का आह्वान करते हुए उन्हें समझाया कि हमारे भविष्य के विकास के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसर खोलने वाला गढ़चिरौली विद्यापीठ ही हो सकता है। 2006 बँक चली समिति की कार्यवाही में अभाविप ने उसके समक्ष संवाद, भरना, आंदोलन सबकुछ किया, जिसमें सर्वाधिक सहभाग जिले के जनजातीय विद्यार्थियों का रहा। समिति के कार्य के साथ ही अभाविप की भूमिका भी सर्वव्यापी बनाने के प्रयास व्यापक होने लगे, फिर एक 'सर्वसमावेशी आंदोलन समिति' बनाई गयी। यह तय हुआ कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सड़क पर आंदोलन का नेतृत्व करेगी और समिति के शेष कार्यकर्ता सभी क्षेत्रों से छात्र छात्राओं को एकत्र कर आंदोलन में सहयोग करेंगे। अभाविप के नेतृत्व में इस प्रकार की समिति का निर्माण किया गया, जिसमें प्राध्यापक भैया साहब ठाकरे एवं अभाविप के पूर्व कार्यकर्ता प्रशांत भृगुवार सचिव बनाए गये। इसमें सभी दलों के विधायक, सांसद, पार्षद एवं शिक्षाविद भी सहभागी हुए। 2007 में अभाविप ने अपने आंदोलन को तीव्र करते हुए चक्का जाम किया। सड़क पर कक्षा संचालन शुरू किया और विद्यापीठ का केंद्र गढ़चिरौली में स्थापित हो, इसको लेकर सुधीर मुनगंटीवार ने विधानसभा में माँग उठाई। इस मुद्दे पर अभाविप कार्यकर्ताओं ने चर्चा, संगोष्ठी और अन्य विधाओं से आंदोलन किए। विद्यार्थी परिषद ने एक बार पुनः 2011 में गढ़चिरौली में विद्यापीठ स्थापित करने की माँग को लेकर 'जिला बंद' का आह्वान किया, जिसमें स्कूल, कॉलेज के साथ ही बाजार तथा दुकानों को भी बंद रखा गया। इसका सभी दलों ने समर्थन किया और समिति भी लगातार इस आंदोलन के साथ खड़ी रही। 2011 के अंत में राज्य सरकार ने इसे गंभीरता से लिया और

विधानसभा में इसके पक्ष में सहमति प्रदान की। परिणामत: 02 अक्टूबर, 2012 को गढ़चिरौली में 'गोंडवाना विद्यापीठ' की स्थापना घोषित कर दी गयी जिसमें गढ़चिरौली व चंद्रपूर दो जिले सम्मिलित किए गये। गोंडवाना विद्यापीठ, गढ़चिरौली की स्थापना अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा लगातार बारह वर्षों तक किए गये विभिन्न प्रयासों और व्यवस्थित रीति से चलाए गये आंदोलन का परिणाम है।

4.16. शिक्षा के व्यापारीकरण के विरुद्ध संघर्ष

वर्ष 1995 में विश्व व्यापार संगठन के अस्तित्व में आने के साथ से ही भारत उसका स्वाभाविक सदस्य बन गया था, तब से ही उसके प्रावधान भारत को प्रभावित करने लगे थे, किंतु जब सेवा व्यापार समझौता (GATS) के प्रावधानों को आगे बढ़ाने की बात शुरू हुई और उसमें सेवा के 12 क्षेत्र शामिल किए गये,





जिनमें से एक क्षेत्र शिक्षा का भी था। स्वाभाविक ही सेवा के ये सारे ही क्षेत्र व्यापार के लिए खोले जा रहे थे और शिक्षा को व्यापार के क्षेत्र में मानने के लिए विकसित देशों का भारत पर दबाव बढ़ता जा रहा था, तब शिक्षा के व्यापारीकरण का लगातार विरोध

करने वालो में विद्यार्थी परिषद दृढ़ता के साथ खुल कर सामने आया। उसने शिक्षा और ज्ञान विषयक भारतीय दृष्टिकोण को सामने रखते हुए कहा कि शिक्षा दान की बात है, यह नि:शुल्क दी जानी चाहिए। जी. ए.टी.एस. प्रावधानों को मान लेने के बाद शिक्षा का व्यापारीकरण तीव्र गति से बढ़ जाएगा। निर्धन लोगों के लिए शिक्षा प्राप्त करन कठिन हो जाएगा। हमारे यहाँ शिक्षा को सेवा का माध्यम स्वीकार किया गया है। जी. ए.टी.एस. के माध्यम से विश्व व्यापार संगठन के नियम यदि शिक्षा को नियंत्रित करने लगे, तो सरकार का शिक्षा पर नियंत्रण ढीला पड़ने की संभावना होगी। उससे यहाँ आने वाली विदेशी शैक्षिक संस्थाओं से राष्ट्रीय व्यवहार करना होगा, अर्थात् जो व्यवस्थाएँ, सुविधाएँ अथवा अनुदान हम अपने देश की संस्थाओं को दे रहे हैं, वह सब विदिशी संस्थाओं को भी देना होगा। ऐसे में सरकार पर जो बोझ बढ़ेगा, उसके परिणामस्वरूप अपने देश की संस्थाओं को दी जाने वाली सुविधाएँ व अनुदान भी बंद करने पड़ेंगे, जिससे अनेक शैक्षणिक संस्थाओं के अस्तित्व पर संकट आ जाएगा।

4.17. प्रतिभा समागम

विविध साहित्य-सम्मेलनों में होने वाले वैयक्तिक आरोप-प्रत्यारोप और निंदा से बचाते हुए रचनात्मक आधार पर युवाओं का मार्गदर्शन कर युवा पीढ़ी को उन विध्वंसक प्रवृत्तियों से बचे रहने की सीख देने में अभाविप की एक विशेष सफलता है। इसके फलस्वरूप अनेक युवा छात्र साहित्यकर्मियों का उदय और युवाओं की छिपी साहित्यिक प्रतिभा का प्रखर प्रकाशन होते हुए सबने अनुभव किया है। साहित्यिक प्रतिभाओं के निखार में 'प्रतिभा संगम' कार्यक्रम विद्यार्थी परिषद की महत्वपूर्ण उपलब्धि है इसके योगदान की अनेक महानुभावों ने प्रशंसा की है। 'प्रतिभा-संगम' से जुड़े रहे अनेक कार्यकर्ता विविध संस्थाओं में गौरव बढ़ा रहे हैं।

4.18 आदर्श महाविद्यालय

शैक्षणिक परिसरों में अध्ययन-अध्यापन न होना, लंबे समय से बिहार की सामान्य समस्या रही है। वहाँ शिक्षा के केंद्र प्रायः शिक्षक-शिक्षार्थी विहीन ही पाए जाते थे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसे शैक्षिक पुनर्रचना में संलग्न विद्यार्थी संगठन के लिए यह असह्य हो गया। जो संगठन एक मान उद्देश्य लेकर रचनात्मक दृष्टिकोण लेकर सक्रिय है, उसका चितिंत और समाधान के मार्ग पर अग्रसर होना स्वाभाविक ही था। अतः 'बिहार विद्यार्थी परिषद' ने प्रत्येक जिले में एक आदर्श महाविद्यालय बनाने की योजना तैयार की। अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री बी. सुरेंद्रन तथा क्षेत्रीय संगठन मंत्री इत्यादि ने बिहार के 14 विभागों में सघन प्रवास किया और सभी कुलपतियों, प्राचार्यों एवं प्रधानाचार्यों से मिल कर बिहार की शैक्षिक परिस्थिति को बदलने हेतु प्रत्येक जिले में एक आदर्श महाविद्यालय बनाने हेतु संकल्प जाग्रत किया।

4.19 कल्याण छात्रावास

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का स्पष्ट मत है कि शिक्षा सारे समाज को सुलभ रहनी चाहिए। समाज के निर्बल वर्गों को भी शिक्षा से वंचित नहीं किया सकता। इन वर्गों को समान अवसर प्रदान करने की जिम्मेदारी शासन और समाज दोनों की बराबर है। अतः परिषद में अनुसूचित जाति एवं जनजाति समाज को व्यापक स्तर पर शिक्षित एवं विकसित करने हेतु उन्हें अतिरिक्त संसाधन सुविधाओं उपलब्ध करवाना आवश्यक माना है। परिषद कार्यकर्ताओं का शैक्षिक परिसरों और छात्रावासों में आवागमन बना रहता है। इसी क्रम में कल्याण छात्रावासों में आते-जाते वहाँ की



दुर्व्यवस्था, असुविधा, गंदगी और अनेक प्रकार के अभावों में रहने वाले जनजातीय एवं अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं के नारकीय जीवन पर ध्यान गया। कार्यकर्ता क्रमशः इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि न्यूनाधिक सभी राज्यों के कल्याण छात्रावासों में ऐसी ही स्थितियाँ हैं। फलत: इन छात्रावासों को ऐसी सभी समस्याओं से मुक्ति दिलाने की योजना बनी। पूरे देश में कल्याण छात्रावासों के सर्वेक्षण का निर्णय लिया गया। सर्वेक्षण के दौरान कुल छात्रावासों, कक्षों की संख्या, कुल छात्र छात्राएँ, कर्मचारी, भोजन, पानी, शौचालय, स्वच्छता, पुस्तकालय, स्वास्थ्य, छात्रवृत्ति, खेलकूद की व्यवस्था इत्यादि विषयों को ध्यान में रखा गया। उन्हें ये सुविधाएँ प्रदान कराने हेतु विद्यार्थी परिषद ने देश भर के 245 जिलों के 1,197 छात्रावासों का सर्वेक्षण कर उसका प्रतिवेदन तैयार किया, उसकी पुस्तक प्रकाशित की, राज्य सरकारों से उस रिपोर्ट के आधार पर छात्रावासों में आवासीय व्यवस्था की अस्त-व्यस्तता, भोजन- कुप्रबंधन, बिजली, पेयजल इत्यादि अनेक समस्याओं का समाधन करने हेतु प्रार्थना-पत्र दिए। विगत वर्षों में देश में बढ़ी जनजातीय एवं अनुसूचित जातीय छात्र - छात्रा संख्या को ध्यान में रखते हुए नये छात्रावासों के निर्माण की माँग भी रखी। परिणामतः अनेक राज्यों ने इस पर ध्यान देना आरंभ किया। किंतु कुछ राज्य सरकारों ने इस रिपोर्ट की उपेक्षा की। परिणामत: विद्यार्थी परिषद को माननीय सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर करनी पड़ी। जिसमें माननीय न्यायालय ने राज्य सरकारों को नोटिस जारी कर तत्काल कदम उठाने के निर्देश दिए। अभाविप के प्रयत्न से अनुसूचित जाति-जनजाति छात्र-छात्राओं के लिए अनेक प्रकार की सुविधाओं एवं

छात्रवृत्ति में भी बढ़ोतरी की गयी है। "जनजातीय महापुरुषों की जीवनी, उनकी सांस्कृतिक पर्यावरणीय आत्मीयता, कलात्मकता, उन्नत स्वास्थ्य इत्यादि को पाठ्यक्रमों में जोड़ कर राष्ट्रीय एकात्मता को सुदृढ़ करने की माँग भी परिषद ने सरकार के सामने रखी। उड़ीसा में छात्रावासों तथा लंबित छात्रवृत्ति की समस्या को लेकर विद्यार्थी परिषद ने अनेक प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से क्रमश: एक बड़ा आंदोलन किया। उड़ीसा के छात्रावासी कहीं-कहीं बाजार में भीख माँग कर अपनी पढ़ाई पूरी कर रहे थे। इस गंभीर समस्या को लेकर सर्वप्रथम जिला स्तर पर प्रदर्शन किए गये और समाचार-पत्रों के माध्यम से सरकार को 15 दिनों का समय देकर चेतावनी दी गयी कि यदि इस अवधि में छात्रावासों की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो 15 अगस्त, 2005 को विद्यार्थी परिषद विधान सभा का घेराव करेगी। समाधान न होने के कारण अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भुवनेश्वर में रैली निकाल कर विधानसभा के समक्ष धरना-प्रदर्शन तथा उसका घेराव किया गया। 'चलो विधान सभा' का आह्वान करते ही सैकड़ों छात्र विधानसभा तक पहुँच गये, पुलिस ने बर्बर तरीके से लाठीचार्ज किया और प्रदर्शन में आए 2,500 से ऊपर अनुसूचित जाति-जनजाति के छात्रों को गिरफ्तार कर लिया गया। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप विरोधी दल के नेताओं ने विधान सभा में हंगामा खड़ा किया, पक्ष-प्रतिपक्ष में तीखी नोक-झोंक हुई। दूसरे दिन मुख्यमंत्री ने लंबित छात्रवृत्ति को तुरंत देने की घोषणा की तथा 60 प्रतिशत की वृद्धि सहित प्रत्येक तीन माह पर नियमित छात्रवृत्ति का भुगतान किया जाएगा, किसी भी छात्रावास की समस्या का तुरंत समाधान होगा, ऐसा आश्वासन दिया। इस प्रकार मुख्यमंत्री ने विद्यार्थी परिषद की सभी माँगों को स्वीकार कर लिया। उड़ीसा में अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्रों का इतना विशाल प्रदर्शन पहली बार हुआ। फलस्वरूप प्रदेश में नये छात्रावासों का निर्माण भी कराया गया।

पञ्चम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

5.2 शैक्षिक निहितार्थ

5.3 शैक्षिक उपादेयता

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

पञ्चम् अध्याय
निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1. निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान' के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं-

5.1.1. परिचयात्मक विवरण सम्बन्धी

- ABVP की स्थापना जून 1948 में हुई
- संगठन का लक्ष्य राष्ट्रीय पुनर्निमाण करना तथा वैभवशाली राष्ट्र के रूप में भारत को दुनिया के क्षितिज पर पुनः प्रतिष्ठित करना है।
- ABVP का दर्शन, अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेकर अपनी समूह संस्कृति पर आधारित युगानुकूल, समर्थ एवं समृद्ध भारत का निर्माण एवं भारत को आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्राचीन भारतीय संस्कृति को एक शस्त्र के रूप में निर्धारित करना है।
- राष्ट्रवादी ताकतों को एकजुट करना, शैक्षिक परिवर्तन का महाअभियान एवं व्यवस्था परिवर्तन की बहस प्रारम्भ करना परिषद के आग्रह बिन्दु हैं।
- रचनात्मक गतिविधियों को बढाना, छात्र समुदाय के नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाना तथा समाज के सभी वर्गों, स्तरों और हिस्सों से आने वाले छात्रों का समावेशन करना परिषद की प्राथमिकताएँ हैं।
- हिन्दुत्व का आधुनिक सन्दर्भ एवं भारत की वास्तविक पहचान सुनिश्चित करना तथा भविष्य के भारत की परिकल्पना जैसे विषयों पर व्यापक अध्ययन एवं प्रबोधन परिषद का दायित्व है।
- अभाविप के संचालन में विद्यार्थी एवं अध्यापक दोनों ही सक्रिय होते हैं अध्यापकों की सक्रिय सहभागिता के आधार पर स्थापित होने वाला यह एक विशिष्ट छात्र संगठन है।
- 'टीम' अभाविप के संगठनात्मक तंत्र का एक प्रमुख अनौपचारिक हिस्सा है इसलिए प्रान्त, विभाग, जिला एवं कॉलेज स्तर पर कार्यकारी परिषदों का गठन किया जाता है।
- देश भर में एक वर्ष के लिए पाँच रुपये सदस्यता शुल्क लेकर छात्र-छात्राओं और सौ रुपए सदस्यता शुल्क लेकर शिक्षकों को सहयोगी सदस्य बनाया जाता है।

- निर्णय की प्रक्रिया में 'मत अनेक-निर्णय एक' का मंत्र स्वीकार किया जाता है। किसी निर्णय पर असहमति के बावजूद सामूहिकता हेतु साथ चलते हैं।
- अभाविप में 'बैठक' कार्य-पद्धति का प्रमुख हिस्सा है। बैठके संगठनात्मक निर्णय प्रक्रिया में सहयोगी होने के साथ ही कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक होती हैं।
- संगठनात्मक विस्तार हेतु प्रवास किया जाता है। अखिल भारतीय स्तर से लेकर जनपद स्तर तक प्रवासी कार्यकर्ताओं की एक श्रृंखला है।
- कार्यकर्ता ही संगठन का प्रतिरूप है। बैठक, स्वाध्याय मंडल, अभ्यास वर्ग, अधिवेशन एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के बारे में विचार करते समय कार्यकर्ता-विकास पर विशेष ध्यान रहता है।
- अभाविप में छात्र छात्राएँ कार्यक्रमों में सहभागी होकर परिश्रम एवं स्वविवेक का उपयोग करते हुए स्वाभाविक प्रक्रिया के तहत अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं।
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अपने कार्यकर्ताओं के वैचारिक प्रबोधन एवं कार्य-पद्धति के अनुरूप उन्हें ढालने हेतु प्रशिक्षण वर्गों का नियमित आयोजन करती है जिन्हे 'अभ्यास वर्ग' कहा जाता है।
- वर्ष 1959 से प्रतिवर्ष ABVP के राष्ट्रीय अधिवेशन नियमित रूप से हो रहे हैं, जिनमें देश भर के कार्यकर्ता एक स्थान पर जुटकर तीन दिनों तक विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श करते हैं। ये अधिवेशन प्रतिवर्ष अक्टूबर से दिसंबर तक संपन्न होते हैं।
- कार्यकर्ताओं व विद्यार्थियों में संम्पर्क रखना परिषद की कार्य-पद्धति का अंग है।
- शुभचिंतकों के साथ ही आर्थिक सहयोगियों, शिक्षाविदों, संपादकों, पत्रकार, शैक्षिक प्रशासकों, प्रमुख राजनेताओं गण्यमान्य नागरिकों, कलाकारों, साहित्यकारों इत्यादि से भी निरंतर संपर्क एवं संवाद बनाए रखा जाता है।
- परिषद द्वारा मासिक पत्रिका "राष्ट्रीय छात्रशक्ति" का प्रकाशन किया जाता है। इसके अतरिक्त का "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद" नाम से मोबाइल ऐप संचालित है।

परिषद् की शैक्षिक गतिविधियाँ

- परिषद द्वारा विकासार्थ विद्यार्थी के अन्तर्गत रचनात्मक कार्यक्रम यथा-रक्तदान, विवेकानन्द जयन्ती, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। यह कार्यक्रम सतत विकास एवं पर्यावरण संरक्षण को बल देता है।
- परिषद द्वारा श्रमानुभव शिविर का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें छात्रों एवं प्राध्यापको को गटों एवं उपगटों में बाटकर 20 दिनों तक गाँवों में सेवानुभव हेतु भेजा जाता है।
- ABVP 'बुक बैंक' छात्रों को अध्ययन सामाग्री उपलब्ध कराकर न केवल उनकी सहायता करता है, बल्कि उन्हें पढ़ाई में आगे बढ़ने का अवसर भी देता है।
- परिषद द्वारा '<u>ग्रामोत्थान हेतु छात्र अभियान</u>' के अन्तर्गत उपेक्षा के शिकार रहे गाँवों में ग्रामीण तकनीकी विकास एवं संस्कृति जैसे विषयों पर चर्चा करते हुए लोगों को गाँवों की ओर पुनः प्रवृत्त करने हेतु सशक्त वैचारिक अभियान चलाया जाता है।
- परिषद द्वारा संचालित '<u>अन्तर-राज्य छात्र जीवन दर्शन</u>' द्वारा पूर्वोत्तर के छात्रों की एक माह की अखिल भारतीय स्तर की यात्राओं का आयोजन किया जाता है। वे अलग-अलग स्थानों पर विभिन्न परिवारों में, उस परिवार के सदस्य की तरह ही पारिवारिक परिवेश में रहते हैं तथा वहाँ की रीति-नीति, सांस्कृतिक-भौगोलिक, सामाजिक-राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से परिचय प्राप्त करते हैं, एक आत्मीयता के बंधन में बँध जाते हैं और क्रमशः उस परिवार के साथ उनका नियमित आत्मीय संपर्क आरंभ हो जाता है।
- परिषद द्वारा पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों में ज्ञान एवं प्रगति के द्वार खोलने के उद्देश्य से '<u>युवा विकास केन्द्र</u>' की स्थापना की गयी है, जिसमें कार्यशालाएं, परिसंवाद, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास शिविर, बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी, विधि जागरूकता व चिकित्सा शिविर आदि का आयोजन किया जाता है।
- युवा विकास केन्द्र के अन्तर्गत कौशल विकास आदि से सम्बन्धित प्रशिक्षण आदि भी दिए जाते हैं।
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा समय-समय पर अनेक यात्राओं का आयोजन किया जाता है। जिससे छात्र समूचे राष्ट्र की भाषायी, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता को समझ सकें।

- परिषद द्वारा 'जीवन यात्रा' कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसका उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत को पश्चिमी भारत से जोड़ना तथा एक भारत-श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को मूर्त रूप देना है।
- 'अनुभव अध्ययन यात्रा' के द्वार सामान्य कार्यक्रमों का विकास करना परिषद का प्रमुख उद्देश्य है।
- परिषद द्वारा 'अनुभव अध्ययन यात्रा' का आयोजन वंचित वर्गों के उत्थान के लिए किया जाता है। जिससे पिछड़े ग्रामीण छात्र उच्च शिक्षा एवं उच्च तकनीकी शिक्षा को देखने-समझने का अनुभव प्राप्त करते हैं।
- अभाविप जनजातीय छात्रों के विकास के लिए मात्रभूमि दर्शन यात्रा का आयोजन समय-समय पर करता है।
- छिटपुट चलने वाले कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्रों द्वारा छात्र-छात्राओं से अत्यधिक शुल्क वसूलने के कारण परिषद द्वारा अनेक निःशुल्क कम्प्यूर ट्रेनिंग सेण्टर खोले गए हैं।
- परिषद द्वारा निर्धन, मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं के लिए निःशुल्क कोंचिग कक्षाओं का संचालन किया जाता है।
- महाराष्ट्र के वनवासी एवं ग्रामीण अंचलों से आने वाले छात्र-छात्राओं हेतु भोजन व आवास सहित छात्रावास अखिल 'भारतीय विद्यार्थी परिषद विवेकानन्द संस्कार संस्था' के अन्तर्गत शुरु किया गया।
- परिषद द्वारा 'प्रज्ञा-शोध केन्द्र' की स्थापना की गया है जिसका उद्देश्य समाज में पिछड़े वर्ग के प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थियों को खोजकर उनका बौद्धिक विकास करना, उनमें गुणवत्ता विकसित करना और उन्हें समाज हित के कार्यों के लिए भी सझम बनाना है।
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले छोटे-छोटे बच्चों के लिए संस्कार वर्ग शुरु किए गए हैं। स्कूली पढ़ाई के साथ अन्य संस्कार गतिविधियाँ करना, छात्रों के माध्यम से उनके परिवार एवं अभिभावकों से सम्पर्क बनाना और उनकी वास्तविक स्थिति से परिचित होना इसका लक्ष्य है।
- युवाओं में छिपी साहित्यिक प्रतिभा के निखार हेतु परिषद द्वारा प्रतिभा संगम का आयोजन किया जाता है। युवा-वर्ग को अभिव्यक्त होने के लिए प्रोत्साहित करना तथा उन्हें लेखन के माध्यम से व्यक्त होने में सहायता करना प्रतिभा संगम के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य है।

- विद्यार्थी परिषद ने शिक्षा-क्षेत्र में एक परिवार का भाव उत्पन्न करने की दृष्टि से शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षाविद इन तीनों को शैक्षिक परिवार का अनिवार्य घटक माना है।
- वर्तमान में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनो ही कक्षा की पढ़ाई से कट कर दूर हो गए हैं, शिक्षा परिसर विविध प्रकार के अभावों एवं अनियमितता के शिकार हो रहे हैं, ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी परिषद ने 'परिसर बचाओ अभियान' के माध्यम से इस परिदृश्य को बदलने और शैक्षिक परिसरों को नये रचनात्मक प्रयोगों के माध्यम से सकारात्मक दिशा देना प्रारम्भ किया है।
- महाराष्ट्र के जनजातीय बहुल एवं नक्शल प्रभावित जनपद गढ़चिरौली में शिक्षा की स्थिति सुदृढ़ करने, नौजवान शिक्षित होकर रोजगार प्राप्त करें एवं जिले का विकास हो इस बहुउद्देश्यीय लक्ष्य को सामने रखकर ABVP ने 'गोंड़वाना विद्यापीठ' की स्थापना की।
- परिषद चाहती है कि भारतीय चिन्तन के अनुरूप ज्ञान निःशुल्क सर्वसुलभ व गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। समाज के किसी भी व्यक्ति के लिए शिक्षा अप्राप्य जैसी न रहे।
- शैक्षिक परिसर में अध्ययन-अध्यापन न होना, शिक्षा केन्द्रों का प्रायः शिक्षक–शिक्षार्थी विहीन होना इत्यादि उच्च शिक्षा में विशेषकर निजी महाविद्यालयों की आम समस्या है। इस शैक्षिक परिदृश्य को बदलने हेतु विद्यार्थी परिषद प्रत्तेक जिले में एक 'आदर्श महाविद्यालय' बनाने हेतु संकल्पित है।
- ABVP ने जनजाति एवं अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं हेतु निर्मित कल्याण छात्रावासों की दुर्व्यवस्था, असुविधा, गन्दगी का संज्ञान लेकर आन्दोलन किया। फलस्वरूप नए छात्रावासों का निर्माण एवं अनुसूचित जाति-जनजाति के छात्र-छात्राओं के लिए अनेक प्रकार की सुविधाओं एवं छात्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी सम्भव हुयी।

5.2. शैक्षिक निहितार्थ

- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा समय-समय पर विभिन्न शैक्षिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जैसे रक्तदान, विवेकानन्द जयन्ती, विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन इत्यादि। समाज के अन्य शैक्षिक, राजनैतिक एवं सामाजिक संगठनों द्वारा भी इस प्रकार के आयोजन किए जाने चाहिए। ताकि सामाजिक समरसता एवं भाईचारे की भावना को मूर्त रूप दिया जा सके।

- सम्पूर्ण मानव सभ्यता को अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेकर अपनी समूह संस्कृति पर आधारित युगानुकूल, सामर्थ्य एवं समृद्धि हेतु प्रयास करना चाहिए।

- भारत को आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्राचीन संस्कृति को एक शस्त्र के रूप में निर्धारित करना अभाविप का दर्शन है वास्तव में यह दर्शन भारत के प्रत्तेक व्यक्ति, संस्था और संगठन का होना चाहिए।
- शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम, पाठ्येत्तर क्रियाओं, जन संचार माध्यमों एवं शोशल मीडीया में गौरवशाली प्राचीन भारतीय संस्कृति से संम्बन्धित प्रेरणा परिलक्षित होनी चाहिए। इन सब में अध्यापकों की सक्रिय भूमिका अत्यन्त आवश्यक है क्योंकी वही भविष्य के समाज के सच्चे निर्माता होते हैं।
- राष्ट्रवादी ताकतों को एकजुट करना अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आग्रह बिन्दु में से एक है। भारत की आजादी के समय से ही राष्ट्रविरोधी ताकतें सक्रिय रही हैं चाहे जम्मू-कश्मीर में तिरंगा जलाने की घटना हो या भारतीय सेना के जवानों पर पत्थर बाजी करना य़ा फिर हिन्दू धर्म की शोभायात्राओं पर मस्जिद से पथराव, ओवैसी द्वारा सार्वजनिक रूप से भड़काऊ बयान देना जैसे-15 मिनट को देश से पुलिस हटाने की धमकी, पहलगाम में स्थानीय कट्टरपंथियों सहयोग से आतंकियों द्वार धर्म पूंछकर हिन्दू धर्म के लोगों की नृशंस हत्या, छांगुर बाबा द्वारा धर्मान्तिरण का राकेट चलाना इत्यादि।

  इन राष्ट्रविरोधी ताकतों का सामना एकजुट होकर ही किया जा सकता है। ये राष्ट्रविरोधी ताकतें आस्तीन के साँप हैं जिनके विषय में सभी विद्यार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए।

  "अन्यथा हिन्दू घटा देश बँटा" जिस प्रकार जम्मू-कश्मीर से लाखों कश्मीरी पंडितों को रातों-रात विस्थापित होना पडा था ऐसी दृश्य सम्पूर्ण देश में देखने को मिलेंगें।
- विभिन्न राज्यों के छात्र समुदाय में राष्ट्रीय एकीकरण की मूल भावना विकसित करने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए।
- चूँकि छात्र राष्ट्र की प्रारम्भिक इकाई हैं इसलिए छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए राष्ट्रव्यापी कार्य योजनाएँ बनाई जानी चाहिए।
- विकासार्थ विद्यार्थी, श्रमानुभव शिविर जैसे कार्यक्रम विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर आयोजित किए जाने चाहिए।
- ग्रामोत्थान हेतु छात्र अभियान जैसी गतिविधियाँ केन्द्र सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से अन्तर विश्वविद्यालय स्तर पर वार्षिक रूप से आयोजित की जानी चाहिए।

- बुक बैंक, जैसी योजना विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा ग्राम एवं ब्लाक स्तर पर लागू की जाएं ताकि सबको उनकी जरूरत की पुस्तकें स्थानीय स्तर पर मिल सकें। इसका विस्तार विश्वविद्यालय स्तर तक भी किया जा सकता है।
- अन्तर राज्यीय छात्र जीवन दर्शन, युवा विकास केन्द्र जैसे कार्यक्रमों का आयोजन राज्य सरकारों द्वारा अन्तर राज्यीय स्तर पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में वार्षिक स्तर पर किया जाना चाहिए। मेडिकल एवं इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों के लिए ऐसे कार्यक्रमों में प्रतिभागिता अनिवार्य की जानी चाहिए चूँकि ऐसा देखा गया है उक्त क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थियों में मानविकी विषय से आने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा संवेदनाओं का विकास कम हो पाता है। ऐसे कार्यक्रमों से मानवीय भावनाएँ एवं मूल्यों के निर्माण में अधिक प्रबलता आएगी।
- यात्राएँ व्यक्ति का नजरिया बदलने वाली होती हैं इससे न केवल व्यक्ति के ज्ञान का विकास होता है बल्कि उनमें अपने देश और समाज के प्रति संवेदना भी विकसित होती है। व्यक्ति समूचे राष्ट्र की भाषायी, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता को समझ पाता है इसलिए शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इन्हे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।
- जीवन यात्रा, अनुभव अध्ययन यात्रा, मातृभूमि दर्शन यात्रा जैसे कार्यक्रमों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए।
- राज्य एवं केन्द्र सरकारों द्वारा छात्रों को गुणवत्तापूर्ण एवं निःशुल्क शिक्षा के प्रबन्ध हेतु निःशुल्क कोचिंग संस्थानों एवं कम्पयूटर संस्थानों की स्थापना की जानी चाहिए। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अभ्युदय कोचिंग का संचालन मण्डल एवं जिला स्तर पर किया जा रहा है जिसका विस्तार तहसील एवं ब्लाक स्तर पर किया जाना चाहिए।
- छात्रों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने हेतु निःशुल्क तकनीकी संयन्त्र यथा मोबाइल फोन, टैबलेट एवं लैपटाप उपलब्ध करवाने चाहिए। अथवा सभी विद्यार्थियों को सिक्योरिटी घनराशि जमाकरवाकर अध्ययन पर्यन्त लैपटाप ईश्यू करने चाहिए। तभी एक भारत श्रेष्ठ भारत एवं डिजिडल इंडिया की संकल्पना को साकार किया जा सकता सकेगा।

- सभी कॉलेज एवं स्कूल परिसरों में अनिवार्य रूप से निःशुल्क इण्टरनेट, एवं वाई-फाई की व्यवस्था होनी चाहिए। गरीब एवं वंचित समूह के विद्यार्थियों को भेदभाव का सामना न करना पड़े इसके लिए समान संरक्षण एवं बेरोजगारी की दशाओं में अनिवार्य भत्ते का प्रावधान किया जाना चाहिए।

- हर हाथ को काम देने के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए। कौशल प्रशिक्षण पूर्ण करने वाले प्रत्तेक विद्यार्थी को इण्टर्नशिप का अनिवार्य अवसर मिले जिससे होने वाली आय सीधे डी.बी.टी. के जरिए छात्रों के खाते में जानी चाहिए। जैसे शिक्षक प्रशिक्षण में अनिवार्य इण्टर्नशिप का प्रावधान है किन्तु वह जैसे-तैसे खाना-पूर्ति कर पूरी कर ली जाती है, परिषदीय एवं राजकीय विद्यालयों में सासनादेश के तहत भुगतान आधारित रूप से सम्पन्न करवाई जानी चाहिए।
- छात्र जो की भविष्य के नागरिक हैं सशक्त लोकतंत्र का हिस्सा बन सकें इसके लिए सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में अनिवार्य रुप से छात्र संघ की स्थापना की जानी चाहिए।
- छात्र राजनीति की शुचिता को बनाए रखने हेतु छात्र संघ का सदस्य बनने की ऊपरी आयु सीमा 25 वर्ष निर्धारित की जानी चाहिए। साथ ही छात्रों की मांग सीधे सासन स्तर तक पहुँच सके इसके लिए त्वरित समस्या समाधान पोर्टल की व्यवस्था केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, एवं UGC के स्तर पर पृथक-पृथक होनी चाहिए। समस्या समाधान हेतु जिम्मेदार प्राधिकारी को 24 घण्टे, 7 दिन एवं अधिकतम 15 दिन की टाइमलाइन समस्या की गम्भीरता के आधार पर निर्धारित हो। यथा समय समस्या समाधान न होने पर जिम्मेदारों पर स्वतः कार्यवाही प्रणाली स्वचलित माध्यम से विकसित हो।
- प्रतियोगी परीक्षाओं का ससमय आयोजन एवं उनकी शुचिता निर्धारण हेतु उचित प्रावधान किए जाने की आवश्यकाता है तथा समय-समय पर छात्रों से सुझाव लेकर उन्हे भी अमल में लाना चाहिए।
- सम्पूर्ण शिक्षा जगत में मूल्यांकन की प्रक्रिया में अमूलचूल परिवर्तन किए जाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार कैलकुलेटर एवं मोबाइलफोन ने विद्यार्थियों की मौखिक गुणा-भाग करने की क्षमता को समाप्तप्रायः कर दिया है उसी प्रकार आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के प्रयोग विद्यार्थी समस्त प्रश्नों के उत्तर लिख रहा है और उसके सोचने विचारने की क्षमता शून्यप्रायः होने की ओर तीव्रता से अग्रसर है।

  अतः (AI) के प्रयोग को दृष्टिगत रखते हुए मूल्यांकन की प्रक्रिया में बदलाव लाने की आवश्यकता है।
- विभिन्न विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं एवं सार्वजनिक महत्व के स्थलों के नाम प्रसिद्ध महापुरुषों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, भारत माता के अमर शहीदों के नाम पर रखे जाने चाहिए। ताकि सभी भारतवासियों में गौरव की अनुभूति हो सके। देश में बहुसंख्यक मात्रा में

मुगल आक्रांताओं के नाम दृष्टिगोचर होते हैं यथा- औरंगजेब रोड, अकबर रोड, शाहजहाँ नगर, अल्लापुर इत्यादि। गुलामी के धब्बों को बिना मिटाए बिना राष्ट्र गौरव का जागरण असम्भव है।

- विदेशी आक्रान्ताओं का महिमामण्डन करने वाले अध्यायों को स्कूली पाठ्यक्रम से पूरी तरह से बाहर किया जाना चाहिए। भारत माता के अमर शहीदों के साथ-साथ सार्वजनिक हित के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले त्यागी महानुभावों के त्याग एवं वीरता को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए।
- भाषायी विविधता को बढ़ावा देने हेतु बहुभाषा शिक्षण का प्रावधान माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर अवश्य किया जाए, लेकिन प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए।
- मजहबी एवं मकतबी शिक्षा राज्य पोषित शिक्षण संस्थानों में पूर्णतः प्रतिबन्धित हो। यह बात किसी से छिपी नही कि मदरसे ही स्लामिक कट्टरपंथी/जेहादी तैयार करने के कारखाने के रूप मे कार्य कर रहै हैं। आतंकी गतिविधियों को इन्ही का प्रश्रय प्राप्त है इनकी शिक्षा पद्धति, पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता है। इनमें सभी धर्मों के शिक्षक भर्ती हों व सभी धर्मों के विद्यार्थियों का प्रवेश सुनिश्चित किया जाए। इनके पाठ्यक्रम में सभी आधुनिक विषयों भाषा, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर इत्यादि का समावेश हो। प्रतिदिन राष्ट्रगान एवं राष्ट्रगीत का सामूहिक गायन अनिवार्य किया जाए।
- एक समान शिक्षा प्रणाली सम्पूर्ण राष्ट्र में लागू हो।
- सभी सांस्कृतिक भाषाओं- तमिल संस्कृत, कन्नड़, तेलगु, मलयालम, ओड़िया, असमिया, बंगाली, मराठी, पाली, प्राकृत को बढावा दिया जाना चाहिए तथा कम से कम एक का अध्ययन उच्च शिक्षा अथवा माध्यमिक स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप में अनिवार्य किया जाना चाहिए।
- शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा की व्यावहारिक जानकारी माध्यमिक स्तर पर दी जानी चाहिए।
- पर्यावरण एवं कुटुम्ब प्रबोधन तथा सामाजिक समरसता से सम्बन्धित नैतिक शिक्षा स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा हो।
- सामाजिक समरसता की भावना को विकसित करने हेतु समाज में व्यापक रचनात्मक कार्यक्रमों की आवश्यकता है। जिसके लिए शिक्षा जगत में भी प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।
- हमारे युवा नशे की लत से दूर रहें इसके लिए विद्यार्थी परिषद जैसे छात्र संगठनों को भी कुछ रचनात्मक कार्यक्रम चलाने चाहिए। जैसे बाँदा जनपद में अधिकांश विद्यार्थी गुटखे की लत के

शिकार हैं। शिक्षण संस्थानों की 500 मी. की परिधि में गुटखा, सिगरेट, मांस एवं मदिरा की दुकाने पूर्णतः प्रतिबन्धित होनी चाहिए।

- सही खान-पान की आदतों के विकास एवं जागरूकता हेतु व्यापक कार्यक्रम एवं अभियान चलाए जाने चाहिए।
- नशीले पदार्थों एवं स्वास्थ्य के लिए हानिकरक खाद्य पदार्थों के विज्ञापन एवं बहुचर्चित सेलीब्रिटी लोगों द्वारा इनके प्रचार प्रसार पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।
- राष्ट्रवादी विचारधारा को विकसित करने हेतु सभी शिक्षण संस्थानों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की कालेज इकाईयों का गठन होना अत्यन्त आवश्यक है।
- जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर भारत एवं देश की राजधानी दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय सहित उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया वि. वि. एवं देश भर में फैले मिशनरी क्रिश्चन शिक्षण संस्थाओं द्वारा जिस प्रकार से धर्म आधारित या यूँ कहे कि विशेष धर्म के प्रचार हेतु चरम स्थितियाँ तैयार होती रही हैं किन्तु समय-समय पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने यहां उत्पन्न उन्माद का न केवल कड़ा प्रतिकार किया बल्कि इनके काले चेहरे को समाज के सामने बेनाकाब किया जिससे इन पर लगाम लग सकी। इसलिए संगठन को और अधिक विस्तारित किए जाने व अधिकाधिक छात्रों एवं शिक्षकों के सहभाग कि आवश्यकता है।

5.3. शैक्षिक उपादेयता

किसी भी शोध का महत्व तभी होता है, जब उसकी शैक्षिक परिवेश में उपयोगिता निर्धारित की जा सके। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की शैक्षिक उपादेयता निम्नप्रकार से वर्णित की जा सकता है-

5.3.1. विद्यार्थियों हेतु

प्रस्तुत लघु शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा इसके निष्कर्षों एवं सुझावों के आधार पर विद्यार्थी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा उनके हित में उठाए गए मुद्दों, विभिन्न वर्गों से आ्ने वाले छात्र समुदाय के लिए किए जाने वाले प्रयासों के बारे में जान सकेंग। विद्यार्थियों में राष्ट्रवाद की भावना जागृत होगी साथ ही रचनात्माक कार्यों में प्रतिभाग करने हेतु उनकी रुचि बढ़ेगी। छात्र राजनीति से जुड़ने वाले विद्यार्थी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से सम्बन्धित सारगर्भित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। शिक्षण संस्थानों व शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु संघर्ष करने व उसे सकारात्मक निर्णय के साथ अन्तिम रूप देने के तौर तरीके सीख सकेंगें।

5.3.2. शिक्षकों के लिए

शिक्षक, शिक्षा जगत का महत्वपूर्ण घटक होने के साथ ही छात्र संगठनों में भी महत्व पूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत शोध से शिक्षक इस बात को समझ सकेंगे कि वे छात्रों के साथ मिलकर कैसे शिक्षा जगत की समस्याओं हेतु न केवल सक्रिय संघर्ष कर सकते हैं बल्कि अपने मूल शिक्षण कार्य के साथ-साथ राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रहित के कार्यों में सलग्न हो सकते हैं।

बहुत से शिक्षकों में छात्र संगठनों को लेकर अनेक भ्रांन्तियाँ होती हैं वे इन्हे आन्दोलनकारी व अव्यवस्था उत्पन्न करने की इकाई मानते हैं। प्रस्तुत शोध के अध्ययन के उपरान्त अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सम्बन्ध में न केवल उनकी जानकारी बढ़ेगी बल्कि वे इसके शिक्षा के क्षेत्र में किए जाने वाले बेहतरीन प्रयासों को जान सकेंगे।

5.3.3. अभिभावकों के लिए

अभिभावक शिक्षा के क्षेत्र में छात्र संगठनों की भूमिका समझ सकेंगे। अभिभावक यह जानेंगे कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ही एकमात्र ऐसा राष्ट्रवादी संगठन है जो न केवल छात्रहितों के लिए संघर्ष करता है बल्कि अपनी रचनात्मक गतिविधियों एवं सामूहिक प्रयास से छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अभिभावक वैसे तो छात्र संगठनों व राजनीति से अपने बच्चों को दूर रखने का प्रयास करते हैं लेकिन प्रस्तुत शोध के अध्ययन के उपरान्त वे अपने बच्चों को विद्यार्थी परिषद से जोड़ने हेतु स्वयं आगे आएंगे।

अभिभावक यह जान सकेंगे कि शिक्षक, विद्यालय/शिक्षण संस्थान के अतरिक्त भी कोई संगठन है जो शिक्षा के सही उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयास करता है।

5.3.4. शासन/प्रशासन के लिए

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में शिक्षा जगत से सम्बन्धित अनेक चुनौतियों एवं समस्याओं की चर्चा की गयी है तथा उनके समाधान भी निष्कर्षों एवं सुझावों में बताए गए हैं। उक्त अनुशंसाओं को लागू कर शिक्षा जगत में अनेंको सुधार किए जा सकते हैं।

5.3.5. जन सामान्य हेतु

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध जन सामान्य के बीच अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की प्रतिकृति साबित होगा। वे सम्पूर्ण विद्यार्थी परिषद को सारगर्भित रूप में समझ सकेंगें। परिषद द्वारा किए जा रहे

सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रवादी कार्यों एवं छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु किए जाने वाले रचनात्मक कार्यक्रमों के विषय में जान सकेंगें।

5.4. भावी शोध हेतु सुझाव

'शोध' अध्ययन के क्षेत्र में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रंखला है जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी प्रारम्भ हो जाती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किए जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए सम्भव नहीं होता, जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किए गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं-

- ABVP छात्रो में व्यक्तित्व विकास का कार्य करता है भावी शोध में "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का छात्रों के व्यक्तित्व में योगदान" शीर्षक से शोध कार्य किया जा सकता है।
- ABVP ने भारतीय राजनीति में अनेक राजनेता/नेतृत्व कर्ता दिए हैं जो भूतकाल एवं वर्तमान में महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं जैसे- यशवन्त राव केलकर, अशोक सिंहल, सुषमा स्वाराज, रेखा गुप्ता, अरुण जेटली, हेमन्त विश्वा शर्मा, पुष्कर सिंह धामी, मोहन यादव, भजन लाल शर्मा, ब्रजेश पाठक, सुनील बंसल इत्यादि इस आधार पर भावी शोध में "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राजनैतिक योगदान का अध्ययन" किया जा सकता है।
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का एक आनुषंगिक संगठन (परिशिष्ट-1) है भावी शोध में संघ के निम्नलिखित आनुषंगिक संगठनों के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया जा सकता है-

विद्याभारती, संस्कार भारती, संस्कृत भारती, सेवा भारती, सरस्वती शिशु मन्दिर, वनवासी कल्याण आश्रम, विवेकानन्द केन्द्र, अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ, भारतीय शिक्षण मंण्डल, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दीनदयाल शोध संस्थान, क्रीडा भारती, विज्ञान भारती, आरोग्य भारती, प्रज्ञा प्रवाह।

- भावी शोध में "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलनों के शैक्षिक प्रभाव का अध्ययन" किया जा सकता है।
- भावी शोध में "ABVP की शैक्षिक पहलों का सामाजिक न्याय के परिप्रेक्ष में अध्ययन" किया जा सकता है।
- भावी शोध में "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शैक्षिक गतिविधियों के प्रति जागरूकता का अध्ययन" किया जा सकता है।
- भावी शोध में "एबीवीपी एवं अन्य छात्र संगठनों के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन" किया जा सकता है।
- इसी तरह भावी शोध में "ABVP द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों का अन्य स्वयं सेवी संगठनों द्वारा चलाए जा रहे प्रकल्पों के साथ तुलनात्मक अध्ययन" किया जा सकता है।
- भावी शोध में "शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अन्य स्वयं सेवी संस्थाओं/संगठनों के शैक्षिक योगदान का अध्ययन" किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह, किरन (2008)। *रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता* Ph.D शोध-प्रबन्ध।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी।

http://hdl.handle.net/10603/178440

तिवारी, बाबूलाल (1996-97)। *वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन* Ph.D शोध-प्रबन्ध।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी।

http://hdl.handle.net/10603/10744

आबी शादाब, (2009)। *डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन*

http://hdl.handle.net/10603/235529

कान्त, मनोज व अन्य (2022)। *ध्येय-यात्रा (खण्ड-एक)*। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

कान्त, मनोज व अन्य (2022)। *ध्येय-यात्रा (खण्ड-दो)*। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

कुमार, राकेश (2020) ने *"ब्रह्माकुमारीज का शैक्षिक योगदान"* एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध, बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/neelam-publish-book_202106/mode/1up

कांत, पियूष (2020)। *विश्व जागृति मिशन के शैक्षिक योगदान विषय पर अध्ययन* एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध। बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/ilovepdf_merged_202107/mode/2up?view=theater

सिंह, धीरेन्द्र कुमार (2020)। *चिन्मय मिशन के शैक्षिक योगदान का अध्ययन* एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध। बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/ilovepdf_merged_202107/mode/2up?view=theater

सिंह, राकेश कुमार (2021)। *अखिल भारतीय वनवाशी कल्याण आश्रम के शैक्षिक योगदान अध्ययन*एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध। बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/final-book-submitted-30-june-22/E%E2%80%93book%20final%20sumitted%20to%20published%202july/page/62/mode/2up

द्विवेदी, सुरेश कुमार (2019)। *रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान का अध्ययन"* एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध। बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/merged-1_202206/page/n157/mode/1up

कुमार, सन्तोष (2020)। *दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक योगदान का अध्ययन*एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध। बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/isbn-file/mode/1up

कुमार, अखिलेश (2024)। *श्री सद्‌गुरु सेवा ट्रस्ट के शैक्षिक योगदान का अध्ययन*एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध। बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/ilovepdf_merged_202107/mode/2up?view=theater

परिशिष्ट

I. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के आनुषांगिक संगठन

II. ABVP से सम्बन्धित समाचार

III. जीवन वृत्त

परिशिष्ट

I.

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ (RSS) के प्रमुख अनुषांगिक संगठन

	संगठन		संगठन
1	विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान	18	राष्ट्र सेविका समिति
2	विश्व हिन्दू परिषद	19	अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत
3	भारतीय किसान संघ	20	अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
4	अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद	21	शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
5	भारतीय शिक्षक मण्डल	22	संस्कृत भारती
6	अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद	23	आरोग्य भारती
7	भारत विकास परिषद	24	प्रज्ञा प्रवाह
8	सीमा जागरण मंच	25	लघु उद्योग भारती
9	राष्ट्रीय सेवा भारती	26	विज्ञान भारती
10	अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ	27	नेशनल मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन
11	वनवासी कल्याण आश्रम	28	दीन दयाल शोध संस्थान
12	हिन्दू जागरण मंच	29	भारतीय मजदूर संघ
13	स्वदेशी जागरण मंच	30	सक्षम
14	संस्कार भारती	31	क्रीड़ा भारती
15	सहकार भारती	32	अधिवक्ता परिषद
16	साहित्य परिषद		
17	भारतीय जनता पार्टी		

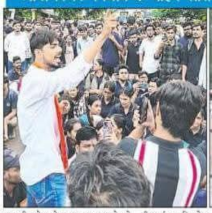
परिशिष्ट II

ABVP से सम्बन्धित समाचार

अयोध्या/बाराबंकी

मान्यता नहीं होने के विरोध में ABVP का छात्रों संग प्रदर्शन, पुलिस ने फटकारी लाठी, कई घायल

श्रीरामस्वरूप विवि के बाहर सात घंटे चला धरना, देवा रोड जाम




NBT न्यूज, मार्ती : चिनहट-देवा रोड के श्रीरामस्वरूप विश्वविद्यालय के गेट को बंद कर सोमवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकर्ताओं ने छात्रों के साथ प्रदर्शन किया। आरोप है कि यहां पर विधि संकाय के तीनों विषयों की मान्यता नहीं है और इसके विपरीत क्लास चलाई जा रही हैं और फीस वसूली जा रही है। प्रदर्शन कर रहे रहे छात्रों और एबीवीपी कार्यकर्ताओं को हटाने के लिए पुलिस ने लाठियां चलाईं।

कॉलेज प्रबंधन ने छात्रों पर बेवजह का बवाल करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने लाठी चलाने से इनकार किया है। विश्वविद्यालय के गेट पर सोमवार की सुबह ही एबीवीपी के अवध प्रांत संगठन मंत्री पुष्पेंद्र बाजपेयी के नेतृत्व में छात्र-छात्राएं जुटे थे। प्रदर्शन करनेवालों की संख्या करीब 500 के आसपास थी। छात्रों के गेट पर बैठने के कारण चिनहट-देवा मार्ग पर जाम लग गया। विभाग संगठन मंत्री आकाश शुक्ला के अनुसार संस्थान की मान्यता 2022 में बीसीआई ने समाप्त कर दी थी। ...

लाठीचार्ज में 25 लोग घायल : भाजपा

बिना मान्यता कोर्स के खिलाफ प्रदर्शन, पुलिस ने भांजीं लाठियां

विद्यार्थियों के साथ एबीवीपी कार्यकर्ता भी प्रदर्शन में रहे शामिल | 22 छात्र-छात्राएं घायल | एलएलबी कोर्स को लेकर विवाद



देवा-चिनहट मार्ग स्थित श्रीराम स्वरूप विश्वविद्यालय के निकट प्रदर्शनकारी को पीटते पुलिसकर्मी • जागरण



मेयो अस्पताल परिसर में मौजूद एएसपी विकास चंद त्रिपाठी • जागरण





संवादसूत्र, जागरण • बाराबंकी : देवा-चिनहट मार्ग स्थित श्रीराम स्वरूप विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने सोमवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर हंगामा किया। बिना मान्यता एलएलबी की पढ़ाई कराए जाने का मामला सामने आने के बाद करीब 700 विद्यार्थी परिसर में एकत्र होकर प्रदर्शन करने लगे, दोपहर में एबीवीपी के कार्यकर्ता भी उसमें शामिल हो गए। प्रदर्शनकारी यूनिवर्सिटी प्रशासन पर मनमाने ढंग से डिपार्टमेंट चलाने और भविष्य से खिलवाड़ करने का आरोप लगा रहे थे। ...

जिला अस्पताल पहुंचे मंत्री और भाजपाई

बाराबंकी : मेयो में भर्ती घायल एबीवीपी के कार्यकर्ताओं को देर रात जिला अस्पताल लाया गया। जहां राज्य मंत्री सतीश चंद शर्मा, हैदरगढ़ विधायक दिनेश रावत, पूर्व जिलाध्यक्ष संतोष सिंह सहित तमाम भाजपा के पदाधिकारी जिला अस्पताल पहुंचे। घायलों से बात करके घटना की जानकारी ली और दोषियों पर कठोर कार्रवाई का आश्वासन दिया, देर रात तक वहां भाजपाइयों का जमावड़ा लगा रहा।

कुछ लोग फैला रहे भ्रम नहीं आएगी वैधता की समस्या : कुलसचिव

700 विद्यार्थी एकत्र होकर करने लगे प्रदर्शन, बाद में एबीवीपी कार्यकर्ता भी जुड़े

बिन मान्यता चल रहे कोर्स के खिलाफ किया प्रदर्शन, पुलिस ने भांजीं लाठियां

22 छात्र-छात्राएं घायल, कई पुलिस कर्मियों को भी आईं चोटें

सीओ सहित कई पुलिसकर्मी घायल

घटना के बीच बचाव में सीओ सिटी हर्षित चौहान भी घायल हुए. भीड़ के आक्रोश का शिकार कई अन्य पुलिसकर्मी भी हुए, जिसमें महिला दारोगा रूबी, सिपाही विभोर विक्रम और विनोद यादव शामिल हैं. भीड़ का शिकार युवक को बचाने में सबसे ज्यादा विनोद को चोट आई, लेकिन युवक को सुरक्षित बचा लिया गया.

BARABANKI/LUCKNOW (1 Sept) : देवा-चिनहट मार्ग स्थित श्रीराम स्वरूप विश्वविद्यालय के स्टूडेंट्स ने सोमवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर हंगामा किया. बिना मान्यता एलएलबी की पढ़ाई कराए जाने का मामला सामने आने के बाद करीब 700 विद्यार्थी परिसर में एकत्र होकर प्रदर्शन करने लगे, दोपहर में एबीवीपी के कार्यकर्ता भी उसमें शामिल हो गए, प्रदर्शनकारी यूनिवर्सिटी प्रशासन पर मनमाने ढंग से डिपार्टमेंट चलाने और भविष्य से खिलवाड़ करने का आरोप लगा रहे थे. प्रदर्शन उग्र होने पर पुलिस ने भी बल प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों पर लाठियां भांजी, जिसमें 22 छात्र-छात्राएं घायल हुए हैं. देर रात तक प्रदर्शन जारी रहा.

मान्यता नहीं होने का आरोप

सुबह करीब 10 बजे छात्र-छात्राएं कैंपस में विरोध प्रदर्शन करने लगे. आरोप था कि विश्वविद्यालय ने बार काउंसिल आफ इंडिया (बीसीआई) से मान्यता नहीं ली है, इसके बावजूद एलएलबी और बीए-एलएलबी कोर्स में प्रवेश लेकर पढ़ाई कराई जा रही है. आक्रोशित विद्यार्थियों ने कैंपस से निकलकर देवा-चिनहट रोड पर जाम लगाने की कोशिश की. दोपहर करीब दो बजे एबीवीपी कार्यकर्ता भी उनके समर्थन में उतर आए, स्थिति को देखते हुए कई थानों की पुलिस को बुला लिया गया. करीब चार बजे उग्र भीड़ ने पुलिस से डंडा छीनकर मारपीट की. हमले में गंभीर युवक को बचाकर पुलिस गदिया चौकी ले गई तो चौकी पर तोड़फोड़ और पथराव किया. पुलिस से हाथापाई भी हुई. यूनिवर्सिटी के कुलसचिव डा. नीरज जिंदल ने कहा कि बच्चों का भविष्य सुरक्षित किया जाएगा और बीसीआइ से मान्यता दिलाने की प्रक्रिया चल रही है.

मेयो अस्पताल पर प्रदर्शन

मारपीट में घायल करीब आठ लोगों का पुलिस ने मेडिकल परीक्षण कराया, जिसमें से दो का जिला अस्पताल व अन्य को मेयो में भर्ती कराया गया, जहां पहुंचे एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने सीओ हर्षित चौहान व पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया. लाठी चार्ज के लिए सभी सीओ को जिम्मेदार बता रहे थे. स्थिति को देखते हुए वहां कई थानों की पुलिस व अधिकारी डटे रहे. वहीं सीओ, नगर कोतवाल और गदिया चौकी इंचार्ज को एहतियात के तौर पर वहां से हटा दिया गया.

"मान्यता को लेकर चल रहे प्रदर्शन के दौरान विवाद हुआ है. दोनों पक्षों से कई लोग घायल हुए हैं. अभी किसी पक्ष से कोई तहरीर नहीं आयी है. स्थिति पूरी तरह से कंट्रोल में है. सभी पहलुओं पर पुलिस जांच कर रही है.
अर्पित विजयवर्गीय, पुलिस अधीक्षक

प्रदर्शनकारी एबीवीपी कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने किया लाठीचार्ज

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी



अभाविप के प्रदर्शनकारी कार्यकर्ताओं पर लाठियां भांजते पुलिसकर्मी। अमृत विचार

अमृत विचार : बिना मान्यता एलएलबी की पढ़ाई कराने का आरोप लगाते हुए गदिया स्थित श्री रामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी के बाहर विरोध प्रदर्शन कर रहे एबीवीपी कार्यकर्ताओं की पुलिस से झड़प हो गई। पुलिस चौकी में भी तोड़फोड़ की, इसके बाद इन्हें सड़क पर दौड़ाकर पीटा गया। लाठीचार्ज से गंभीर रूप से घायल करीब एक दर्जन से अधिक कार्यकर्ताओं को अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालांकि पुलिस ने लाठीचार्ज से इंकार किया, कहा कि प्रदर्शनकारी यूनिवर्सिटी के गार्ड से भिड़ रहे थे, इसलिए दोनों को अलग कराया गया।

बताते चलें कि शहर कोतवाली क्षेत्र के गदिया पुलिस चौकी स्थित श्री रामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी के एलएलबी के छात्र कई दिनों से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। इनका कहना है कि कॉलेज बिना मान्यता के एलएलबी की पढ़ाई कराता रहा और इसकी आड़ में अवैध वसूली की, जबकि यूनिवर्सिटी के पास एलएलबी की मान्यता ही नहीं है। इससे तमाम छात्रों का भविष्य अधर में हो गया है। सोमवार को भी यूनिवर्सिटी के बाहर बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी एकत्र हुए और इनके समर्थन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अवध प्रांत के अध्यक्ष पुष्पेन्द्र बाजपेई, प्रांत सह मंत्री अभिषेक बाजपेई के अलावा वैष्णवी सिंह, देवेन्द्र सिंह, सलामुद्दीन, अभयराम त्रिपाठी, योगेश सिंह, कामिल, विशाल, अभय शुक्ला, कार्तिकेय, आदर्श पांडेय आदि कार्यकर्ता भी जुटे। गेट के बाहर हंगामा व नारेबाजी के बीच प्रदर्शनकारी कॉलेज के भीतर दाखिल हो गए, प्रदर्शन उग्र होते देख मौके पर मौजूद पुलिस ने इन्हें बाहर खदेड़ा, इसी बीच कालेज के गार्ड को किसी ने पीट दिया। वहीं निकट की पुलिस चौकी का शीशा भी तोड़ दिया गया। पुलिस बल ने लाठीचार्ज कर दिया। परिषद के विभाग संगठन मंत्री आकाश शुक्ल ने बताया कि प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिससे घायल एक दर्जन कार्यकर्ताओं को इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी विकास चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि प्रदर्शन के दौरान यूनिवर्सिटी के गार्ड से छात्रों की हाथापाई हो गई थी। पुलिस ने दोनों को सिर्फ अलग करा दिया। बाकी मौके पर शांति है।

"कुछ लोगों द्वारा छात्रों में भ्रम फैलाया जा रहा है, जबकि बार काउन्सिल ऑफ इंडिया से एलएलबी कोर्स को अनुमोदन प्राप्त है। उन्होंने कहा कि सत्र 2022-23 का अनुमोदन दस्तावेज बीसीआई की वेबसाइट पर उपलब्ध है तथा 2027 तक का शुल्क भी जमा कर दिया गया है। रजिस्ट्रार ने आश्वासन दिया कि किसी भी छात्र को भविष्य में डिग्री की वैधता को लेकर कोई समस्या नहीं होगी और विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सुरक्षित भविष्य के लिए प्रतिबद्ध है।
-नीरजा जिंदल, रजिस्ट्रार

विद्यार्थी परिषद ने महाराणा प्रताप चौक पर उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर का फूंका पुतला



बांदा ब्यूरो चीफ मयंक शुक्ला
बाँदा (दैनिक उजाला पत्रिका)।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विगत पिछले 75 वर्षों से राष्ट्रहितों व छात्रहितों के लिए संघर्ष आवाज बुलंद करता आ रहा है । इसी के निमित श्री रामस्वरुप मेमोरियल विश्वविद्यालय लखनऊ में विद्यार्थियों से लगातार की जा रही अवैध वसूली, भ्रष्टाचार व अनियमितताओं के विरोध में संवैधानिक रूप से शांतिपूर्वक प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों व लखनऊ महानगर के कार्यकर्ताओं पर विश्वविद्यालय प्रशासन के मिलीभगत से पुलिस द्वारा बर्बरता पूर्वक लाठीचार्ज किया गया ।। तत्पश्चात उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर द्वारा एबीवीपी कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज का समर्थन कर उन्हें ÷गुंडे÷ कह रहे हैं । जिसके विरोध में सह जिला कार्तिकेय गुप्ता रामजी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने महाराणा प्रताप चौराहे पर देर रात कैबिनेट मंत्री ओपी राजभर का पुतला दहन कर आक्रोश प्रदर्शित किया । कार्तिकेय गुप्ता रामजी ने बताया की विद्यार्थी परिषद 75 वर्षों से छात्रहितों के लिए जो कार्य कर रहा था वह आज भी और आगे भी करता रहेगा । सरकारे कोई भी हो मुद्दे राष्ट्र और छात्रों के लिए सदैव वही रहेंगे । और चेतावनी देते हुए कहा कि श्री रामस्वरुप मेमोरियल विश्वविद्यालय की मांगे जल्द से जल्द पूरी हो अन्यथा विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता एक बड़े आंदोलन के लिए बाध्य होंगे ।। इस मौके में विभाग संगठन मंत्री शिवम पांडेय, दिव्यांशु मिश्रा , आयुष पांडेय , सुभाष त्रिपाठी, अर्पित द्विवेदी, स्वतंत्र साहू, प्रशांत , हर्षित , गगन , राम सहित आधा सैकड़ा से अधिक कार्यकर्त मौजूद रहे!

विद्यार्थी परिषद ने कट्टरपंथी नेता का फूंका पुतला

१२ अप्रैल

अतर्रा | हिन्दुस्तान संवाद

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कि नगर इकाई ने शनिवार को जम्मू कश्मीर के एक कट्टरपंथी नेता का पुतला फूंककर आक्रोश जताया। नारेबाजी करते हुए गुस्सा जताया। राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा। अलगाववादी नेता को गिरफ्तार करने की मांग की।

अभाविप के नगर मंत्री अमन शुक्ला के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने चौक बाजार पहुंच कर कट्टरपंथी नेता के विरोध में नारेबाजी की। उसका पुतला फूंककर राष्ट्रीय हित में गिरफ्तारी की मांग की। कार्यकर्ताओं की मांग थी कि ऐसे लोगों से भारतीय गणराज्य के जम्मू कश्मीर राज्य में अंतकी घटनाओं का इजाफा हो रहा है। जिससे देश की प्रभुसत्ता पर खतरा [illegible] रहा है। ऐसे नेता रहते तो भारत में हैं।



अतर्रा में शनिवार को चौक बाजार में विद्यार्थी परिषद ने फूंका पुतला

लेकिन पाकिस्तान के पक्ष में बयानबाजी कर भारतीय भूभाग को विखंण्डित करने की मंशा रखते हैं। देश विरोधी हरकतों पर शीघ्र ही अंकुश लगाएं। विद्यार्थी परिषद ने मांग की कि अलगाववादी नेता पर देशद्रोह का मुकदमा कायम कर गिरफ्तारी शीघ्र की जाये। इस दौरान नीरज, राजीव, सुभाष, केशव, आशीष, अक्षय सहित दर्जनों कार्यकर्ता रहे।

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव विशेष अंक

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव 2025

पैनल घोषणा के साथ ही अभाविप के रणबांकुरों ने भरी हुंकार

आर्यन मान अध्यक्ष, गोविंद तंवर उपाध्यक्ष, कुणाल चौधरी सचिव एवं दीपिका झा को बनाया गया संयुक्त सचिव का प्रत्याशी





▪ The students' wing of the RSS has since its inception been in the front lines of agitation moored by the Sangh. HT FILE

Tracing the roots

The ABVP, which is often mistaken for a miniature version of the BJP, asserts it is an RSS offshoot

1948: Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad was founded.

9th July 1949: Officially established and registered in Delhi

1961: Participated in the movement for the liberation of Goa.

1962: Participated in Civil Defence against Chinese Aggression

1970: Started participating in students' council/Union elections - first in UP and then in different states - resulting in victory.

During the ABVP's absence from electoral politics, the BJP floated the Janata Vidyarthi Morcha between 1978 and 1982.

NUMBERS

32 lakh members in 2017, compared to 11 lakh in 2003.

9 lakh members joined in 2014

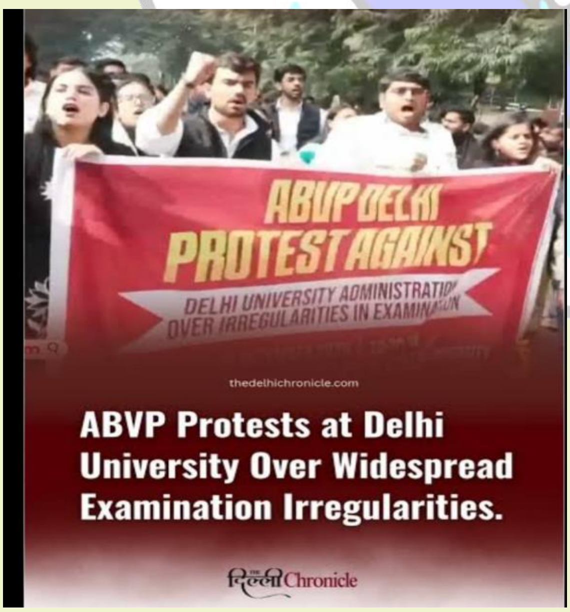
5,300 urban units covered by ABVP network and presence in 20,000 of the 35,000 colleges countrywide.

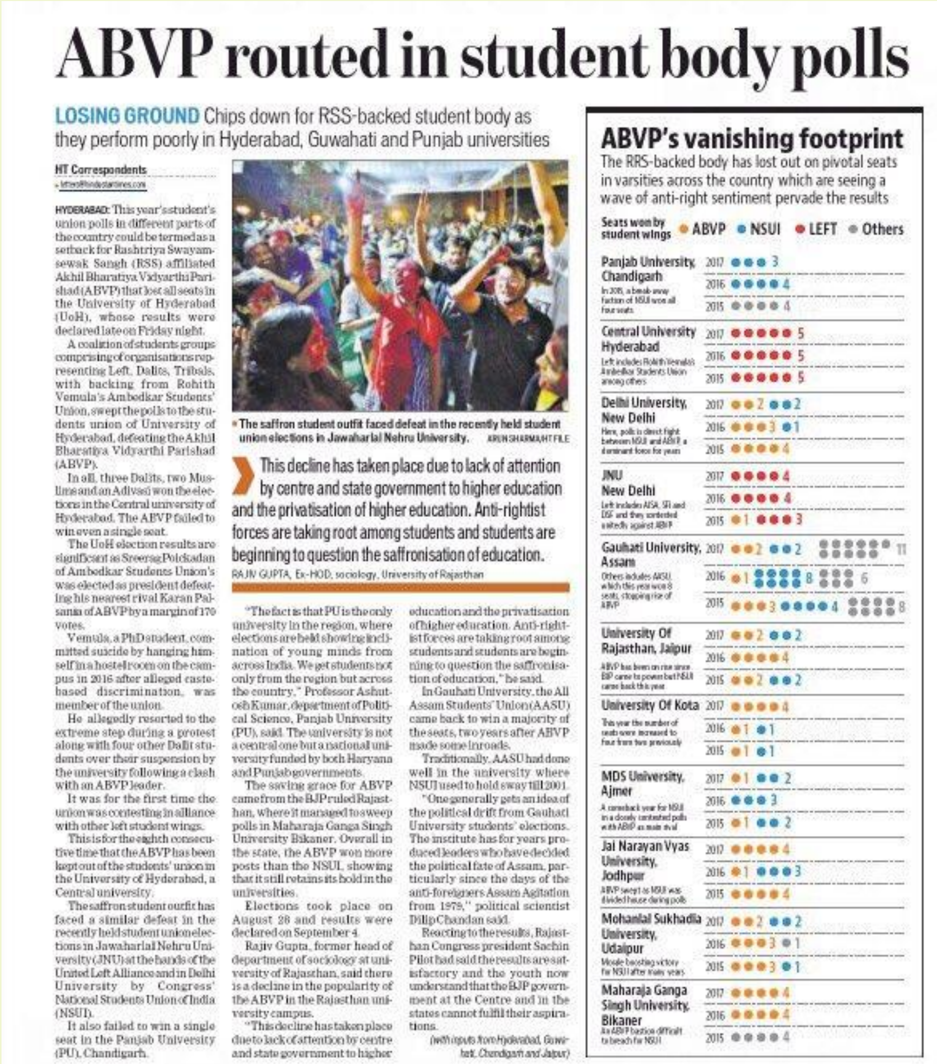
HITTING THE HEADLINES

Feb, 2016: 12 ABVP and Students' Federation of India (SFI) activists arrested in February in connection with the clash on the campus of Savitribai Phule Pune University. Activists clashed following verbal spat and altercation over putting up of posters on the varsity campus.

Jan, 2016: Police arrested about 50 ABVP activists after they tried to lay siege at the collector's office in Telangana demanding the immediate release of fee reimbursement.

SOURCE: ABVP WEBSITE





ABVP routed in student body polls

LOSING GROUND Chips down for RSS-backed student body as they perform poorly in Hyderabad, Guwahati and Punjab universities

HT Correspondents
letters@hindustantimes.com

HYDERABAD: This year's student's union polls in different parts of the country could be termed as a setback for Rashtriya Swayamsewak Sangh (RSS) affiliated Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) that lost all seats in the University of Hyderabad (UoH), whose results were declared late on Friday night.

A coalition of students groups comprising of organisations representing Left, Dalits, Tribals, with backing from Rohith Vemula's Ambedkar Students' Union, swept the polls to the students union of University of Hyderabad, defeating the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP).

In all, three Dalits, two Muslims and an Adivasi won the elections in the Central university of Hyderabad. The ABVP failed to win even a single seat.

The UoH election results are significant as Sreerag Poickadan of Ambedkar Students Union's was elected as president defeating his nearest rival Karan Palsania of ABVP by a margin of 170 votes.

Vemula, a PhD student, committed suicide by hanging himself in a hostel room on the campus in 2016 after alleged caste-based discrimination, was member of the union.

He allegedly resorted to the extreme step during a protest along with four other Dalit students over their suspension by the university following a clash with an ABVP leader.

It was for the first time the union was contesting in alliance with other left student wings.

This is for the eighth consecutive time that the ABVP has been kept out of the students' union in the University of Hyderabad, a Central university.

The saffron student outfit has faced a similar defeat in the recently held student union elections in Jawaharlal Nehru University (JNU) at the hands of the United Left Alliance and in Delhi University by Congress' National Students Union of India (NSUI).

It also failed to win a single seat in the Panjab University (PU), Chandigarh.

The saffron student outfit faced defeat in the recently held student union elections in Jawaharlal Nehru University. ARUN SHARMA/HT FILE

> This decline has taken place due to lack of attention by centre and state government to higher education and the privatisation of higher education. Anti-rightist forces are taking root among students and students are beginning to question the saffronisation of education.
> RAJIV GUPTA, Ex-HOD, sociology, University of Rajasthan

"The fact is that PU is the only university in the region, where elections are held showing inclination of young minds from across India. We get students not only from the region but across the country," Professor Ashutosh Kumar, department of Political Science, Panjab University (PU), said. The university is not a central one but a national university funded by both Haryana and Punjab governments.

The saving grace for ABVP came from the BJP ruled Rajasthan, where it managed to sweep polls in Maharaja Ganga Singh University Bikaner. Overall in the state, the ABVP won more posts than the NSUI, showing that it still retains its hold in the universities.

Elections took place on August 28 and results were declared on September 4.

Rajiv Gupta, former head of department of sociology at university of Rajasthan, said there is a decline in the popularity of the ABVP in the Rajasthan university campus.

"This decline has taken place due to lack of attention by centre and state government to higher education and the privatisation of higher education. Anti-rightist forces are taking root among students and students are beginning to question the saffronisation of education," he said.

In Gauhati University, the All Assam Students' Union (AASU) came back to win a majority of the seats, two years after ABVP made some inroads.

Traditionally, AASU had done well in the university where NSUI used to hold sway till 2001.

"One generally gets an idea of the political drift from Gauhati University students' elections. The institute has for years produced leaders who have decided the political fate of Assam, particularly since the days of the anti-foreigners Assam Agitation from 1979," political scientist Dilip Chandan said.

Reacting to the results, Rajasthan Congress president Sachin Pilot had said the results are satisfactory and the youth now understand that the BJP government at the Centre and in the states cannot fulfil their aspirations.

(with inputs from Hyderabad, Guwahati, Chandigarh and Jaipur)

ABVP's vanishing footprint

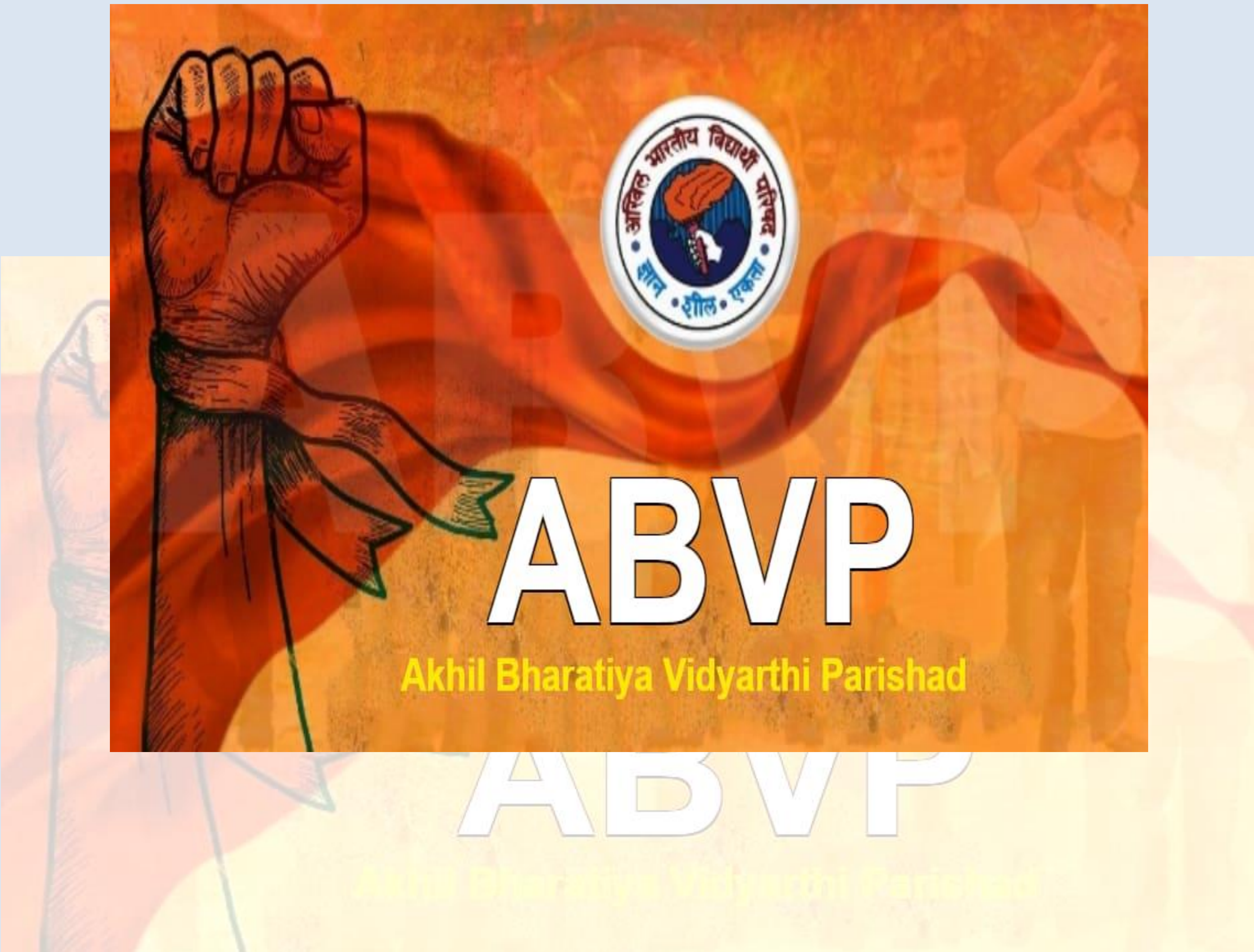
The RRS-backed body has lost out on pivotal seats in varsities across the country which are seeing a wave of anti-right sentiment pervade the results

Seats won by student wings: ABVP, NSUI, LEFT, Others

University	2017	2016	2015
Panjab University, Chandigarh — In 2015, a break-away faction of NSUI won all four seats	NSUI 3	NSUI 4	Others 4
Central University Hyderabad — Left includes Rohith Vemula's Ambedkar Students Union among others	LEFT 5	LEFT 5	LEFT 5
Delhi University, New Delhi — Here, polls is direct fight between NSUI and ABVP, a dominant force for years	ABVP 2, NSUI 2	ABVP 3, NSUI 1	ABVP 4
JNU New Delhi — Left includes AISA, SFI and DSF and they contested unitedly against ABVP	LEFT 4	LEFT 4	ABVP 1, LEFT 3
Gauhati University, Assam — Others includes AASU, which this year won 8 seats, stopping rise of ABVP	ABVP 2, NSUI 2, Others 11	ABVP 1, NSUI 8, Others 6	ABVP 3, NSUI 4, Others 8
University Of Rajasthan, Jaipur — ABVP has been on rise since BJP came to power but NSUI came back this year	ABVP 2, NSUI 2	ABVP 4	ABVP 2, NSUI 2
University Of Kota — This year the number of seats were increased to four from two previously	ABVP 4	ABVP 1, NSUI 1	ABVP 1, NSUI 1
MDS University, Ajmer — A comeback year for NSUI in a closely contested polls with ABVP as main rival	ABVP 1, NSUI 2	NSUI 3	ABVP 1, NSUI 2
Jai Narayan Vyas University, Jodhpur — ABVP swept as NSUI was divided house during polls	ABVP 4	ABVP 1, NSUI 3	ABVP 4
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur — Morale boosting victory for NSUI after many years	ABVP 2, NSUI 2	ABVP 3, Others 1	ABVP 3, NSUI 1
Maharaja Ganga Singh University, Bikaner — An ABVP bastion difficult to breach for NSUI	ABVP 4	ABVP 4	Others 4



अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान



ISBN: 978-93-5659-929-1